सम्पूर्ण सर्वदेव प्रतिष्ठा रहस्यम्

भाषा टीका



पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक'

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गंगाये नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री राधाकृष्णाय नमः

सर्वदेव प्रतिष्ठा रहस्यम्

भाषा टीका

हमारे वेदों में अनेक प्रकार के देवी देवता हैं, उसी प्रकार प्रविष्टा में भी अनेक प्रकार के देवी देवता हैं और आज भी अधिकतर देवी देवताओं का प्राचीन मन्दिरों में मूर्ति पूर्ण विधि विधान पूजा सहित प्रतिष्ठित है। इस समय भी जो नये मन्दिरों में देवी-देवताओं की मूर्ति स्थापित की जाती है, उनकी भी प्रतिष्ठा सविधि होती है, क्योंकि बिना प्रतिष्ठा के प्रभु भाव नहीं आ सकता। किसी देवी देवता की प्रतिष्ठा के लिए श्री शिव स्वरूप याज्ञिक जी अथक परिश्रम से 'सर्वदेव प्रतिष्ठा रहस्यम्' की रचना की सरल ढंग से की गई है। प्रत्येक घर में रखने योग्य पुस्तक है।

मूल्य 300/-

लेखक
पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भास्कर प्रयाग, भटवाड़ी जनपद-उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

प्रकाशक:
बी०एस० प्रमिन्दर प्रकाशन, दिल्ली-51

मुख्य वितरक:
कर्मसिंह अमरसिंह,
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
फोन-01334-225619

प्रकाशक :
बी०एस० प्रमिन्दर प्रकाशन, दिल्ली-51

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-उत्तराखण्ड
फोन-01334-225619

प्रथम संस्करण सन् 2018

लेखक
पं० शिवस्वरूप याज्ञिक

मूल्य 300/-

विषय सूची

॥ निवेदन ॥

सनातन धर्म के अनुसार देवताओं की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण पाप नाश के लिए शरीर को पवित्र बनाने और समस्त भोग एवं मोक्ष को प्रदान करने वाली होती है। इस पुनीत कार्य से पुण्य का संचय होता है।

वैदिक रीति से सनातन धर्मावलम्बियों द्वारा प्राण प्रतिष्ठा तथा धर्मानुष्ठान से परमपिता परमात्मा की ही आराधना होती है तथा प्रतिष्ठा से देव सानिध्यता की प्राप्ति होती है।

धर्मों पार्जित धन द्वारा देवताओं की प्रतिष्ठा मानव जीवन को सफल बनाने के लिए अवश्य ही करणीय है। सांसारिक वस्तुओं को मिथ्या जानकर जो भगवान की प्रतिष्ठा या मन्दिर निर्माण करता है उस पर भगवान प्रसन्न होकर विष्णु पद प्रदान करते हैं।

देव प्रतिष्ठा में भाव की प्रधानता होती है भाव से ही सब कुछ प्राप्त होता हैं भाव के कारण ही प्रतिमां में देवताओं के दर्शन होते हैं जिससे ज्ञान की प्राप्ति होती है कर्त्ता प्रतिष्ठा कर मन इच्छित फल को भी प्राप्त करता है–

भावेन लभते सर्वं भावेन देव दर्शनम्।
भावेन परमं ज्ञानं तस्मात् भावावलम्बनम्॥ (रूद्रयामल तंत्र)

जो निर्मल चित्त होकर देव प्रतिष्ठा कार्य करते हैं वे जीवन्मुक्त हो जाते हैं। आज कई विद्वानों ने देव प्रतिष्ठा की पुस्तके उपलब्ध करवाई है परन्तु इस पुस्तक में मैने विद्वानों विद्यार्थियों के हितार्थ सरल रूप से इस विषय में संशोधनकर आपके समक्ष रखा है।

जिस प्रकार पहले भी मेरे द्वारा लिखी पुस्तकों को स्वीकार किया उसी प्रकार इस प्रयास को आप भी स्वीकार करेगें ऐसी मेरी आशा है पुस्तक की त्रुटियों पर ध्यान देते हुए मुझे विद्वत् वर्ग अवगत करेंगे जिससे पुनरावृत्ति में भूल सुधार हो सके।

आपका ही

पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भाष्कर प्रयाग भटवाड़ी टकनौर
उत्तरकाशी उत्तराखण्ड
सम्पर्क सूत्र–09756198022

शिवरात्रि पावन पर्व
७ मार्च २०१६

प्रतिष्ठा मुहूर्त विचार

प्रतिष्ठा मास

चैत्रे वा फाल्गुने वापि ज्येष्ठेवा माधवे तथा
माघे वा सर्व देवानां प्रतिष्ठा सुभदा भवेत्।।

(मत्स्य पुराण)

चैत्र फाल्गुन जेष्ठ वैसाख और माघ मास में समस्त देवताओं की प्रतिष्ठा शुभ कारक होती है।

प्रतिष्ठा सर्व देवानां वैशाखैज्येष्ठफाल्गुने।
चैत्रे तु स्याद्विकल्पेन माघे विष्ण्वन्य मूर्तिषु।।
सौम्यायने शुभाप्रोक्ता निन्दिता दक्षिणायने।।

(धर्म सिन्धु)

वैसाख जेष्ठ फाल्गुन में समस्त देवताओं की प्रतिष्ठा करना श्रेष्ठ है। चैत्र मास विकल्प रूप में कर सकते हैं, माघ में विष्णु के अतिरिक्त अन्य मूर्तियों की प्रतिष्ठा हो सकती है। देवताओं की प्रतिष्ठा उत्तरायण में करना श्रेष्ठ है दक्षिणायन को निन्दित कहा गया है।

माघे कर्तु विनाशाय फाल्गुने शुभदा भवेत्।
लोकानन्दकरी चैत्रे वैशाखे वर संयुता।।
आज्ञायुता सदा ज्येष्ठे आषाढ़े धर्म वृद्धिदा।
श्रावणे धन हीनास्यात् प्रोष्ठेपादे विनश्यति।।
आश्विने नाश माप्नोति वर्धिता कार्तिके तथा।
सौम्ये सौभाग्यमतुलं पौषे पुष्टिरनुत्तमा।
दोषान्विताधिमासे स्यात् कर्तुरात्मन एव च।।

विष्णु की माघ में प्रतिष्ठा करने से कर्ता का विनाश, फाल्गुन में कल्याण, चैत्र में सांसारिक सुख, वैसाख में वर

प्राप्ति, ज्येष्ठ में बड़ों की आज्ञा में तत्परता, आषाढ़ में धर्म वृद्धि, श्रावण में (शिव जी की प्रतिष्ठा छोड़कर) धन हानि, भाद्रपद में विनाश, आश्विन में हानि (दुर्गा को छोड़कर) की प्राप्ती। कार्तिक में सब प्रकार की वृद्धि, मार्गशीर्ष में अतुल सौभाग्य की प्राप्ति (विष्णु प्रतिष्ठा के अतिरिक्त) होती है। पौष में उत्तम पुष्टि, मलमास में प्रतिष्ठा करने से कर्ता और कारयिता दोष के भागी बनते हैं। तिथियों में प्रतिपदा द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी तथा पूर्णिमा शुभ मानी गई हैं।

अमावस्या में नाश होता है। चतुर्थी में गणेश नवमी में भद्रकाली की प्रतिष्ठा हो सकती है। **(मत्स्य पुराण)**

प्रतिष्ठा नक्षत्र-

हस्तत्रये मित्रहरित्रये च, पौष्णद्वयादित्यसुरेज्यभेषु।
तिस्त्रोतराद्यातृशशंक भेषु, सर्वामरस्थासनमुतमंस्यात्।।

(वशिष्ठः)

हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा और श्रवण से तीन। रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्प तीनों उत्तरा रोहिणी और मृगशीर्ष नक्षत्रों में सब देवताओं की प्रतिष्ठा उत्तम कही गई है।

प्रतिष्ठावार-

सोमे बुधे गुरो शुक्रे शुभयोगे शुभे तिथौ।
मूले मैत्रे तथा स्वातौ कुर्यात्स्थापनमुत्तमम्।।
तेजस्विनी क्षेमकृदग्निदाह-विधायिनी स्याद्धनदा दृढा च।
आनन्दकृत कल्प विनाशिनी च सूर्यादिवारेषु भवेत्प्रतिष्ठा।।

(श्रीपतिः)

रविवार को प्रतिष्ठा करने से तेजस्विनी, सोमवार को कल्याण मंगलवार को अग्निदाह, बुधवार को धन प्राप्ति,

गुरूवार को बल शुक्रवार को आनन्द और शनिवार को प्रतिष्ठा करने से सामर्थ्य विनाशिनी होती है।

शिवलिंग स्थापन-

प्रावृषि स्थापितं लिङ्ग भवेत् वरद योगदम्।
हेमन्ते ज्ञानदं चैव लिङ्गस्यारोपणं मतम्।। (हेमाद्रि)

वर्षा ऋतु में शिव लिंग की स्थापना करने से वर दायक, हेमन्त में प्रतिष्ठा करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

देवी प्रतिष्ठा मुहुर्त-

देव्या माघे आश्विने मासे उत्तमा सर्वकामदा।
न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासोऽत्रकारणम्।।
सर्वकालं प्रकर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः।
(देवीपुराण)

देवी की प्रतिष्ठा में माघ और आश्विन मास उत्तम तथा सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाले हैं। देवी की प्रतिष्ठा में तिथि, नक्षत्र और उपवास का विचार अनावश्यक है सभी समय में देवी की प्रतिष्ठा की जा सकती है किन्तु विशेषतः कृष्णपक्ष में प्रतिष्ठा करना उत्तम है।

देवताओं की प्रतिष्ठा उत्तरायण में-

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठोदङ्मुखे रवौ।
दक्षिणा शामुखे कुर्वन्न तत्फम्मवाप्नुयात्।
(सत्यव्रतः)

देवता बाग और बावड़ी आदि की प्रतिष्ठा सूर्य के उत्तरायण में करनीं चाहिए। दक्षिणायन में प्रतिष्ठा करने से फल की प्राप्ति कर्ता को नहीं मिलती है।

उग्रदेवताओं की प्रतिष्ठा दाक्षिणायन में-

मातृ- भैरव- वाराह- हनुमन्तं महाबलम्।
विष्णु स्कान्दं प्रतिष्ठाप्य शिवं वा दक्षिणायने।।
(नृसिंह पुराण)

देवी भैरव वाराह हनुमान विष्णु स्कन्द प्रजापति और शिव की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी की जा सकती है।

स्थान विशेष में देव प्रतिष्ठा विचार

पुण्य क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे देवपीठ चतुष्ठये।
प्रयागे नैमिषे काश्यां कालाकालं नशोधयेत्॥

पुण्य क्षेत्र में कुरुक्षेत्र में चारों देव पीठों में प्रयाग में नैमिषारण्य में और काशी में देवताओं की प्रतिष्ठा के लिए समय और असमय का विचार नहीं करना चाहिए।

आवाहन और विसर्जन नहीं होता

शालग्रामे स्थावरे आवाहनं न विसर्जनम्।
शालग्राम शिलादौ य न्नित्यं सन्निहितो हरिः॥

(स्कन्दपुराण)

स्थित शालग्राम शिला का आवाहन तथा विसर्जन नहीं होता क्यों कि शालग्राम शिला में सर्वदा भगवान स्थिर रहते हैं।

बाणलिङ्गानि राजेन्द्र ख्यातानि भुवनत्रये।
न प्रतिष्ठा न संस्कारो न च निर्माल्य कल्पना॥

(निर्णय सिन्धु)

हे राजेन्द्र बाण लिंग तीनों लोकों में प्रसिद्ध है इनकी न तो प्रतिष्ठा होती है न इनका संस्कार होता है और न इनके निर्माल्य भक्षण में दोष होता है।

खण्डित मूर्ति के सम्बन्ध में

अङ्गप्रत्यङ्गभग्नां तु मूर्ति धीमान विसर्जयेत्।
नखाभरणमालास्त्रभग्नां तां न विसर्जयेत्॥

(रूपमण्डनः)

जिस मूर्ति का अंग और प्रत्यंग खण्डित हो उस मूर्ति का बुद्धिमान पुरुष विसर्जन कर दें, किन्तु जिस मूर्ति का केवल नख आभूषण माला और अस्त्र खण्डित हो जाय उस मूर्ति का विसर्जन न करें।

घर के लिए प्रतिमा का परिमाण

अङ्गुष्ठ पर्वदारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु।
गृहेषु-प्रतिमा कार्यानाधिका शस्यते बुधै।।

(भविष्य पुराण)

अंगुष्ठ पर्व से लेकर वितस्ति परिमाण तक की प्रतिमा घरों में रखनी चाहिए इससे अधिक प्रमाण की प्रतिमा विद्वानों ने अप्रशस्त कही है।

घर में प्रतिमा रखने का विचार

गृहे लिङ्गद्वयनार्च्यं शालग्राम द्वय तथा।
द्वेचक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा।।
शक्तित्रयं तथानार्च्यं गणेश त्रयमेवच।
द्वौशङ्खौ नार्चयेचैव भग्नां च प्रतिमा तथा।।
नार्चयेच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशंक तथा।
गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्चनार्च्याः पूज्यावसुन्धरे।।
एतासां पूजनान्नित्यंमुद्वेगं प्राप्नुयाद गृही।
शालग्रामाः समापूज्याः समेषु द्वितयं न हि।।
विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि।
शालग्राम शिला भग्ना पूजनीया सचक्रका।।
खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्रामशिला शुभा।।

हे वसुधारे! घर में दो लिंग दो शालिग्राम दो द्वारिका चक्र दो सूर्य तीन शक्ति तीन गणेश दो शंख खण्डित प्रतिमा और मत्स्य कूर्म आदि दशों अवतारों की प्रतिमाओं का, अग्नि से दग्ध भग्न मूर्ति के पूजन से गृहस्थ नित्य संकट को प्राप्त होता है। शालग्राम का पूजन सम रूप से करना चाहिए, सम रूप से भी दो शालग्राम का पूजन नहीं करना चाहिए। द्वारिका के चक्र

सहित शालग्राम खण्डित भी हो तो उसकी पूजा करनी चाहिए। क्योंकि शालग्राम की शिला खण्डित अथवा टूटी हुई भी शुभ कही गई है।

प्रतिमा स्थापन में दिशा निर्णय

पूर्वापरास्यां देवानां मुखं नो दाक्षिणोत्तरम्।
ब्रह्मा विष्णुः शिवार्केन्द्रा गुहः पूर्वपराङ् मुखः॥
शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वाशाभिमुखाः शुभाः।
गणेशो भैरवश्चण्डो न कुलीशो ग्रहस्तथा॥
भूताद्या घनदाश्चैव दक्षिणास्याः शुभा स्मृताः।
मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ् मुखः॥
हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतास्यो विदिङ्मुखः॥

(देवतामूर्ति प्रकरण)

देवताओं का मुख पूर्व और पश्चिम में उत्तम कहा गया है। दक्षिण और उत्तर में श्रेष्ठ नहीं कहा गया है। ब्रह्मा विष्णु शिव सूर्य इन्द्र स्वामी कार्तिकेय का मुख पूर्व और पश्चिम में कहा गया है। शिव ब्रह्मा और विष्णु इन देवताओं का मुख सभी दिशाओं में शुभ कहा गया है। गणेश भैरव चण्डी नकुलीश ग्रह भूत आदि और कुबेर इनका मुख दक्षिण में शुभ कहा गया है। देवियों के मन्दिर का मुख दक्षिण और उत्तर दिशा में कहा गया है। हनुमान जी की मूर्ति का मुख नैर्ऋत्यकोण में कहा गया है।

॥ प्रतिष्ठा की उपयोगी वस्तु ॥

प्रतिष्ठा यज्ञ, जप, पूजनादि में कई वस्तुओं की आवश्यकता होती है। जिनमें प्रमुख निम्न वस्तुयें उपयोग में लाई जाती हैं।

१. पंचरत्न -

सुवर्णं रजतं मुक्ता राजवर्तं प्रवालकम्।
रत्न पंचकमाख्यातं शेष वस्तु ब्रवीम्यहम्॥

(आदित्य पुराण)

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्।
एतानि पंचरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः॥

(समयप्रदीप)

सोना, चांदी, मोती, मूंगा और लाजवर्त ये पांच रत्न कहे हैं। अन्य वस्तुओं को आगे कहेंगे॥

अभावे सर्व रत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत्॥

स्मृत्यन्तर में लिखा है कि सब रत्नों के अभाव में सब जगह सोने को काम में लाना चाहिए॥

२. नव महारत्न -

मुक्ताफलं हिरण्यं वैदूर्यं पद्मरागकम्।
पुष्परागं च गोमेदं नीलंगाहत्मतं तथा॥
प्रवाल युक्तानि महरत्नानि वै नवः॥

(विष्णु धर्मोत्तर)

मुक्ता, सोना, वैदूर्य, पद्मराग, पुष्पराग, गोमेद नील, गारुत्मत और प्रवाल इनको नव महारत्न कहा गया है।

३. पंचपल्लव -

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोध पल्लवाः।
पंचभंगा इतिख्याता सर्वकर्मसु शोभनाः॥

(ब्रह्माण्ड पुराण)

पीपल, गूलर, प्लक्ष, आम और वड के पेड़ के पत्तों को पंचपल्ल्व कहते हैं।

४. पंचगव्य –

गौमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसार्पि यथा क्रमम्।।

(स्कन्दपुराण)

गौमूत्र, गोबर, दूध, दही और गऊ का घी मिलाकर पंचगव्य कहा जाता है।

५. पंचगव्य मात्रा –

गौमूत्रंभागश्चार्द्ध शकृत्क्षीरस्य च त्रयम्।
द्वय दध्नो धृतस्यैकमेकश्च कुशवारिजाः।।

(विष्णु धर्मोत्तर पुराण)

पंचगव्य जितना बनाना हो उसमें आधा भाग गौमूत्र तीन भाग गोबर, तीन भाग दूध, दोभाग दही ओर एक भाग घी तथा एक भाग कुश जल का होना चाहिए।

६. पंचामृत –

पंचामृतं दधि क्षीरं सिता मधु घृतं स्मृतम्।

(हेमाद्रौ)

आज्यंक्षीरमधु तथा मधुर त्रयमुच्यते।।

(मदन रत्ने)

दही, दूध, खांड, शहद और घी ये पांचों मिलकर पंचामृत कहलाते हैं। घी, दूध, शहद इन तीनों को मधुत्रय कहते हैं।

७. चतुःसम –

कस्तूरिकायां द्वौ भागौ चत्वारश्चन्दनस्य च।
कुंकुमस्य त्रयश्चैकः शशिनः स्याचतुसम।।

(गरुड़पुराण)

दो भाग कस्तूरी, चार भाग चन्दन, तीन भाग कुंकुम और एक भाग कर्पूर ये चारों मिलकर चतुस्सम कहलाते हैं।

८. सर्वगन्ध -

कर्पूरश्चन्दनं दर्पः कुंकुम च समासकम्।
सर्वगन्धमिति प्रोक्तं समस्तु सुरभूषणम्।।

(गरुड़पुराण)

कपूर चन्दन कस्तूरी कुंकुम जब इन चारों को बराबर लिया जाता है तब इसे सर्वगन्ध कहते हैं। यह सब देवताओं का आभूषण है।

९. यक्षकर्दम -

कस्तूरीह्यगुरुश्चैव कर्पूरचंदन तथा।
कंकोलं चभवेदेभीः पंचभिर्यक्षकर्दम।।

(गरुड़पुराण)

कस्तूरी, अगरू, कर्पूर, चन्दन, कंकोल पांचों को मिलाकर यक्षकर्दम कहा जाता है।

१०. सर्वौषधि -

कुष्ठं मांसी हरिद्रे द्वे मुरा शैलेय चन्दनम्।
वचा चम्पकमुस्तं च सर्वौषध्योदश स्मृताः।।

(छन्दोगपरिशिष्टे)

कूट, कंकोल दोनों हल्दी मुरा, शैलेय चन्दन, वचा, चम्पक मुस्त इन दशों को सर्वौषधी कहते हैं।

११. सौभाग्याष्टक -

इक्षवस्तृणराजं च निष्पावाजाजिधान्यकम्।
विकारवच्च गोक्षीरं कुसुमं कुंकुमं तथा।।
लवणं चाष्टमं तत्र सौभाग्याष्टकमुच्यते।।

(पद्मपुराण)

इख, तृणराज, निष्पाव, जीरा, धान्य, दही, कुसुम, कुंकुम, लवण इनको सौभाग्याष्टक कहते हैं।

१२. अर्घ्याष्टांग -

आप क्षीरं कुशाग्राणी दध्यक्षततिलास्तथा।
यवाः सिद्धार्थकाश्चेतिह्यर्घ्योऽष्टाङ्ग प्रकीर्तितः।।

(पद्मपुराण)

जल, दूध, कुशा का अग्रभाग, दही, चावल और तिल जौ और सफेद सरसों सबको मिलाकर अष्टांग अर्घ्य कहा जाता है।

१३. सप्तमृतिका -

गजाश्वरथवल्मीकसंगमादध्रगोकुलात् ।
मृदमानीय कुंभेषु प्रक्षिपेच्चत्वरात्तथा।।

(मत्स्यपुराण)

जिस स्थान पर घोड़ा बंधे, जहां रथ चलता हो, इन स्थानों की मिट्टी, वामी की मिट्टी, नदियों के संगम की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, गऊ बांधने के स्थान की मिट्टी, चौराहे की मिट्टी इन स्थानों से सात जगह की मिट्टी को सप्त मृतिका कहते हैं।

१४. सप्तधातु -

सुवर्णं रजतं ताम्रमारकूटं तथैव च।
लोहं त्रपु तथा सीसं धातव, सप्तकीर्तिकाः।।

(हेमाद्रि)

सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, लोहा, त्रपु (रांगा) और शीशा ये सात धातु हैं।

१५. कौतुक -

दूर्वा यवांकुराश्चैव बालकं चूतपल्लवा।
हरिद्राद्वयसिद्धार्थ शिखिपत्रोरगत्व चः।।

(भविष्य पुराण)

दूर्वा, जौ के अंकुर, खस की जड़, आम की डाल, दोनों हल्दियां, सफेद सरसों, मोरपंख, सांप की कैंचुली इन्हें कौतुक कहते हैं।

१६. सप्तधान्य -

यवगौधूम धान्यानि तिला कङ्गुस्तथैव च।
श्यामकं चीनकं चैव सप्तधान्या मुदाहृतम्।।

(षटत्रिशंद ग्रन्थ)

यव गोधूम, धान, तिल, कंगु, श्यामाक (कोदो) और चीनक इन सातों को सप्त धान्य कहते हैं।

१७. अष्टादश धान्य -

व्रीहिर्यवास्तिलाश्चैव यावनालास्तथैव च।
शतानीकाः कुलित्थाश्च कङ्गुकाः कोरदूषका।।
माषमुद्गमसूराश्च निष्पावाः श्याम सर्षपाः।
गोधूमाश्चणकाश्चैव नीवाराढक्य एवच।।
एवं क्रमेण जानीया द्धान्यष्टा दशैव तु।

(स्कन्दपुराण)

व्रीहि, यव, तिल, रामदाना, मटर, कुलित्थ, कंगु, कोदो, माष, मूंग, मसूर, निष्पाव, श्याम, सर्षप, गोधूम, चना, नीवार, और आढकी ये क्रम से गिनने पर अठ्ठारह हो जाते हैं।

१८. कलश प्रमाण -

हेमराजत ताम्राश्च मृन्मया लक्षणान्विताः
यात्रोद्वाह प्रतिष्ठादौ कुम्भास्युरभि सेचने।।

(विष्णु धर्मे)

सोना, चांदी ताम्बे और मिट्टी के अपने लक्षणों के अनुसार यात्रा विवाह और प्रतिष्ठा आदि में अभिषेक हेतु होते हैं।

१९. प्रतिमा निर्माण -

सौवर्णी राजती ताम्री वृक्षजा मार्तिकी तथा।
चित्रजा पिष्टलेपोत्था निजवित्तानुसारतः।।

(भविष्ये)

अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिमा सोने, चांदी, ताम्बे की बनवानी चाहिये यदि वह भी न हो सके तो मिट्टी की बनवा लें या चित्रपट को ही पूज दें अथवा पिष्टलेप से ही काम कर लेवें।

२०. प्रतिमा प्रमाण -

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेवतु।
गृहे तु प्रतिमाकार्या नाधिकाः शस्यतेवुधै।।

(मात्स्ये)

अंगूठे के प्रमाण से लेकर एक बिलस्त तक लम्बी मूर्ति का घर में पूजन करना चाहिए इससे अधिक प्रमाण की मूर्ति का पूजन विद्वान लोग शुभ कारक नहीं बताते।

२१. यथा वस्तु न मिलने पर –

यथोवत्तवस्त्व संपतौ ग्राह्यं तदनकारियत्।
यवाभावे च गोमूधा ब्रीह्यभावे च तण्डुलाः।।

(मदन रत्ने)

जो चीज कही गयी हो वह न मिले तो उस जैसी वस्तु को ले लेना चाहिए जैसे- जौ न हो तो गेहूं से व्रीहि न हो तो तण्डुलों से काम करना चाहिए।

२२. द्रव्याभाव प्रतिनिधि –

दध्यलाभे पयोग्राह्य मध्वलाभे तथा गुडः।
घृते प्रतिनिधिः कार्यः पयोवा दधि वा नृप।।

(हेमाद्रौ)

दही न मिले तो दूध तथा मधु के अभाव में गुड़ से काम करना चाहिए। यदि घी न मिले तो दूध से काम लेना चाहिए।

२३. हवन के लिये आज्य –

आज्य होमेषु सर्वेषु गव्यमेव भवेद्घृतम्।
तदभावे महिष्यास्तु अजामाविक मेव तु।।
तदभावे तु तैलं स्यात्तदभावे तु जार्तिलम्।
तदभावे तु कौसुम्भं तदभावे तु सार्षपम्।।

(देवलः)

जहां आज्य का होम है वहां गौ का ही घृत लेना चाहिए। यदि गौ का घृत न मिले तो भैंस का, यदि भैंस का घृत न मिले तो बकरी का, यदि बकरी का घृत न मिले तो भेड़ का घी वर्तना चाहिए। यदि वह

भी न हो तो तिल का तेल, यदि तिल का तेल भी न हो तो जार्तिल का तेल इस के अभाव में कौसुंभ का तेल तथा इसके अभाव में सरसों का तेल को प्रयोग करना चाहिए।

२४. समिधा -

पलाशाश्वत्थखदिरबडोदुम्बराणाम्।
तदभावे कण्टकवर्जसर्ववनस्पतीनाम्।।

(कात्यायन)

पलाश, अश्वत्थ खदिर वट उदुम्बर ये समिधा हैं इनके अभाव में कांटेदार (समिधा)को छोड़कर सब वनस्पतियां ले लेनी चाहिए।

२५. अमृतधूप -

अगरुश्चन्दनं मुस्ता सिद्धकं वृषणं तथा।
समभागेस्तु कर्तव्योधूपोऽयममृताह्वयः।।

(अथेध्माः)

अगरु, चन्दन, मुस्ता, सिद्धक, कस्तूरी इन पांचों को बराबर लेकर जो धूप बनाया जाता है उसे अमृत धूप कहते हैं।

२६. दशांग धूप -

षड्भाग कुण्टं द्विगुणो गुडश्च लाक्षात्रयं पंचनखस्य भागाः।
हरीतकीसर्जरसः समांसी भागैकमेंक त्रिलवं शिलाजम्।।
घनस्यचत्वारि पुरस्य चैको धूपो दंशांग कथितो मुनीन्द्रैः।।

छः भाग कुष्ठ, बारह भाग गुड़, तीन भाग लाक्षा, पांच भाग नख हरीतकी, राल, जटामासी ये तीनों एक-एक भाग तथा शिलाजीत चार भाग, कपूर एक भाग, गूगल एक भाग इनके मिश्रण से बनाये गये धूप को दशांग धूप कहते हैं ऐसा बड़े-बड़े मुनि कहते हैं।

।। इति प्रतिष्ठा उपयोगी वस्तुवर्णन ।।

॥ देव उपचार ॥

१. तीस उपचार -

अर्घ्यं पाद्यआचमनं मधुपर्कमुपस्पृशम्।
स्नानं नीराजनं वस्त्र माचमनंचोपवीतकम्॥
पुनराचमभूषे च दर्पणालोकनं ततः।
गन्धपुष्पै धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात्॥
पानीयं तोयमाचमनं हस्तावासस्ततः परम्।
ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं ततः पुनः॥
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिश्चैव प्रदक्षिणाः।
पुष्पांजलि नमस्कारावष्ट त्रिंशत्समीरिता॥

(ज्ञानमालायम्)

अर्घ्यं, पाद्यं, आचमन, मधुपर्क, उवटन, स्नान, आरती, वस्त्र, आचमन, उपवीत, पुनराचमन, अलंकार, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पानीय, तोय, आचमन, करोद्वर्तन, पान, अनुलेपन, पुष्पदान, गीत, वाद्य, नृत्य, स्तुति, प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि नमस्कार, इस प्रकार तीस उपचार हैं।

२. षोडश उपचार -

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्कासनस्नानवसनाभरणानि च॥
सुगन्ध सुमनोधूपो दीपमन्नेन भोजनम्।
माल्यानुलेपने चैव नमस्कार विसर्जने॥

आसन, स्वागत, अर्घ्यं, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वसन, आभरण, सुगन्ध, फूल, धूप, दीप अन्न भोजन, माल्यअनुलेपन, नमस्कार और विसर्जन ये सोलह उपचार कहलाते हैं।

३. दशउपचार -

अर्घ्यं पाद्यमाचमन स्नानं वस्त्र निवेदनम्।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारादशक्रमात्॥

अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, निवेदन गन्ध से लेकर नैवेद्य तक क्रम से दश उपचार होते हैं।

४. रात्रि में देव अर्चन -

आसनस्नान वस्त्राणि भूषणं च विवर्जयेत्।
रात्रौदेवार्चने तैश्च पदार्थैर्द्वादशै क्रमात।।

(कपिल)

जब रात को देव पूजन करना हो तो आसन, स्नान, वस्त्र और आभूषण इन उपचारों को न करें बाकी बारह उपचारों को करना चाहिए। इन अनुपयुक्त उपचारों को कपिल देव जी ने कहा है।

।। देवपूजन अंग ।।

१. पाद्य के अंग -

दूर्वा च विष्णुक्रान्ता च श्यामाकं पद्ममेव च।
पाद्याङ्गानि च चत्वारि कथितानि समासतः।।

दूर्वा, विष्णुक्रान्ता, श्यामक और पद्म ये चार संक्षेप में पाद्य के अंग बताये गये हैं।

२. आचमन के अंग -

कर्पूरमगरुं पुष्पं द्रव्याचमनीयके।

कर्पूर, अगरु और पुष्प इनको आचमनी में डालकर आचमन कराना चाहिए।

३. अर्घ्य के अंग -

सिद्धार्थमक्षतं चैव दूर्वा च तिलमेव च।
यवगन्ध फलं पुष्पमष्टाङ्ग त्वर्घ्यमुच्यते।।

सिद्धार्थ, अक्षत, दूर्वा, तिल, यव, गन्ध, फल और पुष्प इन सबको अर्घ्य पात्र में डालकर अर्घ्य देना चाहिए।

४. उद्वर्तनपदार्थ -

रजनी सहदेवीच शिरीषं लक्षणाप च।
सदभद्राकुशग्राणि उद्वर्तन मिहोच्यते।।

(शारदा तिलक)

हल्दी सहदेवी, शिरिष, लक्षणा, सदाभद्रा और कुशाग्र ये सव वस्तुयें उद्धर्तन में ग्रहण की जाती हैं।

५. द्रव्याभाव -

अक्षता गन्ध पुष्पाणि स्नानपात्रे तथा त्रयम्।
उपचार द्रव्याभावे अक्षताश्चप्रतिनिधिः।
तथाचमनपात्रेऽपि दद्यजातीफलं मुने।
लवङ्गमपि कङ्कोलशस्तमाचमनीय के।।

(अगस्त्य संहिता)

द्रव्य अभाव में साफ किये हुए तंडुल लेने चाहिए। आचमन पात्र में जातीफल, लवंग और कंकोल डालना चाहिए। द्रव्य के अभाव में उस द्रव्य का स्मरण करके धुले चावल प्रयोग करना चाहिए।

६. मूर्तिस्नान निर्णय -

प्रतिमा पट्टयंत्राणां नित्यं स्नानं न कारयेत्।
कारयेत् पर्व दिवसे यदावा मलधारणम्।।

(प्रयोगपरिजात)

प्रतिमा के वस्त्र और यंत्रों को रोज स्नान नहीं कराना चाहिए। जिस दिन कोई पर्व हो उस दिन या मैले हो गये हों तो धोना चाहिए।

७. विष्णु आदि देवताओं की पूजन वर्ज्य सामग्री -

नाक्षतैरर्चये द्विष्णुं न तुलस्यां गणाधिपम्।
न दुर्वया यजेद्देवीं बिल्वपत्रैश्च भास्करम्।।
उन्मतमर्कपुष्पंच विष्णोर्वर्ज्यं सदा बुधै।।

(ज्ञानमालायाम्)

अक्षतों से विष्णु का तथा तुलसीदल से गणपति का, दूर्वा सें देवी का तथा बिल्वपत्रों से कभी सूर्य का पूजन नहीं करना चाहिए धतूरे और ऑक के फूल कभी भी विष्णु भगवान पर नहीं चढ़ाने चाहिए।

८. अक्षत -

अक्षतास्तु यवाप्रोक्ताः इति पदार्थो दर्शे उक्तात्वा।
द्यवानामेवायं प्रतिषेधोनं तुण्डलानाम्।

पदार्थां दर्श में लिखा है कि यवों को अक्षत कहते हैं। फिर यहां से निषेध यव के अक्षतों का ही होगा न कि चावलों का।

९. शंख अभिषेक -

महाभिषेक सर्वत्र शंखेनैव प्रकल्पयेत्।
सर्वत्रैव प्रशस्तोब्जः शिवसूर्याचर्नं बिना।।

(आचारमयूख)

सब जगह शंख से ही महाअभिषेक होना चाहिए। शिव और सूर्य पूजन को छोड़कर सब जगह शंख प्रसस्त है।

१०. कुश ग्रहण -

मासे नभमावस्यां तस्यां द्रर्भोच्चयोमतः।
आयातयामास्ते दर्भा नियोजाश्च पुनः पुनः।।

(हेमाद्री)

(भाद्रपद) की अमावस्या कुश ग्रहण काल है अर्थात् इस अमावस्या को कुश ग्रहण करने चाहिए। वे कुश पर्युषित दोष को प्राप्त नहीं होते। अर्थात् वैदिक कार्यों में बार-बार लिये जा सकते हैं।

११. दर्भ भेद -

कुशाः काशा यवा दूर्वाउशीराश्च सकुन्दकाः।
गोधूमा व्रीहयो मुंजा दर्भासवल्वजला।।

कुश, काश,जौ दूव, खस, कुन्द के पुष्प, धान और मूंज ए बल्वज सहित दर्भ कहलाते हैं।

१२. जपदशांश -

जपाद्दशांशतोहोमस्तथा होमाच्च तर्पणम्।
होमाशक्तौ जपं कुर्याद्धोम संख्या चतुर्गुणम्।।

(धर्मसिंधु)

जप का दशांश हवन और हवन का दशांश तर्पण करें। हवन की शक्ति न हो तो होम (दशांश) की संख्या से चतुर्गुण जप करें।

॥ ऋत्विग वरण ॥

१. ऋत्विग :-

बालाग्निहोत्रिणं विप्रं सुरूपं च गुणान्वितम्।
सपत्निकं च सम्पूज्य भूषयित्वा च भूषणैः॥

(पद्मपुराण)

अनेक सद्गुणों से युक्त परम सुन्दर छोटी अवस्था से अग्निहोम करने वाला सपत्नीक विद्वान ब्राह्मण की पूजाकर अनेक तरह के आभूषणों से सुसज्जित करे।

२. वरण :-

वस्त्रयुग्मं तथोष्णीषे कुण्डले कण्ठभूषणम्।
अङ्गुलीभूषणं चैव मणिबन्धस्य भूषणम्॥
एतानि चैव सर्वाणि प्रारम्भे धर्म कर्मणाम्।
पुरोहिताय दत्त्वाय ऋत्विग्भ्यः संप्रदापयेत्॥

(लिंगपुराण)

जिन ब्राह्मणों का वरण किया गया हो उनमें पहले पुरोहित को दो वस्त्र, पाग, कानों के दो कुण्डल,कंठ का भूषण, अंगुलियों के भूषण, मणिबन्ध का भूषण और आच्छादन पट सब कार्यों के प्रारम्भ में ही देकर फिर अन्य ऋत्विजों को भी ये सब चीजें देनी चाहिए।

३. ऋत्विज पूजन :-

सम्पूज्य मधुपर्केण ऋत्विजः कर्मकारयेत्।
अपूज्य कारयन् कर्म किल्विषेणैव युज्यते॥

(विश्वामित्र)

मधुपर्क आदि से ऋत्विजों की पूजा कर के पीछे उनसे कार्य कराना चाहिए बिना पूजे कार्य कराने से कराने वाले को पाप लगता है।

॥ गृहस्थ के नित्यकर्म ॥

मंगलाचरण-

यं ब्रह्म वेदान्त विदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये।
विश्वोद्‌गतेः कारणमिश्वरं वा तस्मैनमो विघ्न विनाशनाय॥

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पहले गणेश का स्मरण करे गणेश का स्मरण करने से दिन भर आने वाले विघ्नो का नाश हो जाता है।

अथोच्यते गृहस्थस्य नित्यकर्म यथा विधि।
यत्कृत्वा ऽनृण्यमाप्नोति दैवात् पैत्र्याच्चमानुषात्॥

(आश्वलायन)

शास्त्रों के बताये अनुसार गृहस्थों के नित्यकर्म के कार्य विधि अनुसार कहे हैं जिसको करके मनुष्य देव, पित्र, मनुष्य सम्बन्धी तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है।

कर दर्शन -

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पहले अपने दोनों हाथों का दर्शन करें।

कराग्रे बसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥ (आचार प्रदीप)

भूमि स्पर्श -

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥ (मदन पारिजात)

भूमि का स्पर्श उपरोक्त मंत्र से नित्य करने पर भवन का वस्तु दोष भी दूर हो जाता है ऐसा ज्ञानियों का कथन है।

उठकर मुख की शुद्धि के लिये तीन कुल्ले कर नेत्र मुख धोकर आचमन कर लेवे फिर गाय आदि मांगलिक दर्शन कर अपने इष्टदेवताओं को प्रणामकर प्रातः स्मरण करें।

प्रातः स्मरण-

प्रातःकाल उठकर भगवान का किसी भी रूप में स्मरण करने पर रात्रि में दर्शन किये बुरे स्वप्नों का नाश हो जाता है, दिन में लाभ की प्राप्ति होती है, विजय की प्राप्ति होती है, पाप का

नाश होता है, आयु की वृद्धि होती है, धर्म की वृद्धि होती है, शत्रुओं का नाश होता है, रोग आदि बाधायें दूर होती है, भव बाधा का नाश होता है, सौभाग्य की वृद्धि तथा विष बाधा दूर होती है।

गणेश स्मरण

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूर पूर परिशोभित गण्डयुग्मम्।
उद्दण्डविघ्न परिखण्डन चण्ड दण्ड माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम्॥

विष्णुस्मरण

प्रातः 'स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम्॥

शिवस्मरण

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गंगाधरं बृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खटवांगशूलबरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्॥

देविस्मरण

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकर कुण्डल हार भूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्त्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवति परेशाम्।

सूर्यस्मरण

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हिमण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानियस्य किरणाःप्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्य रूपम्॥

नवग्रहादिस्मरण

ब्रह्मामुरारीस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम्॥

ऋषिस्मरण

भृगुर्वशिष्ठः क्रतुरंगिराश्च मनुःपुलस्त्यः पुलहश्चगौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम्॥

प्रकृति स्मरण-

पृथ्वी सगन्धा सरसास्थआपः स्पर्शीच वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।
इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत् स्मेरद्वा श्रृणुयाच्च भक्त्या।
दुःस्वप्ननाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्चनित्यं भगवत्प्रसादात्।।

।। पुण्यश्लोकजन स्मरण ।।

पुण्य श्लोको नलो राजा पुण्य श्लोको युधिष्ठरः।
पुण्य श्लोको च वैदेही पुण्य श्लोको जनार्दनः।।
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।
सप्तैतान् संस्मरे नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमप मृत्युविवर्जितः।।
कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्।।
अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पंचकं नाम स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्।।
उमा उषा च वैदेही रमा गंगेति पंचकम्।
प्रातरेव स्मरेनित्यं सौभाग्यं वर्द्धते सदा।।
सोमनाथो वैद्यनाथो धन्वन्तरि रथाश्विनौ।
पंचेतान् स्मरतो नित्यं व्याधिस्तस्य न विद्यते।।
कपिला कालियोऽनंतो वासुकिस्तकक्षक स्तथा।
पंचेतान् स्मरतो नित्यं विषबाधा न जायते।।
हरं हरिं हरिश्चन्द्र हनुमन्तनं च हलायुधम्।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकट नाशनम्।।
रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।
पंचेतान् संस्मरेन्नित्यं भव बाधा विनश्यति।।

सनत्कुमारदेवर्षि शुकभिष्म प्लवङ्गमा।
पंचैतान् स्मरतो नित्यं कामस्तस्य न बाधते।।
वैन्य पृथुं हैहयमर्जुनं च शाकुन्तलेयं भरतं नलं च।
रामं च सीता स्मरति प्रभाते तस्यार्थ लाभो विजयश्च हस्ते।।
आदित्यश्च उपेन्द्रश्च चक्रपाणिर्महेश्वरः।
दण्डपाणिः प्रतापीस्या त्क्षुत्तृङ् बाधा न जायते।।
प्रह्लादनारद पराशरपुण्डरीकव्यासाम्बरीषशुक शौनक भीष्म दाल्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुनवशिष्ठ विभीषणादीन् पुण्यानिमान् परम भागवतन् स्मरामि।।
धर्मो विवर्धति युधिष्ठिर कीर्तनेन पापं प्रणश्यति वृकोदर कीर्तनेन।
शत्रुर्विनश्यति धनंजयकीर्तनेन माद्रीसुतौ कथयतांन भविन्त रोगाः।।

।। द्वादशज्योतिर्लिंग स्मरण ।।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम्।।
केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीम शंकरम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे।।
वैद्यनाथं चिताभूभौ नागेशं दारुकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं धुश्मेशं च शिवालये।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलो भवेत्।।

।। वैदिक प्रातः स्मरण मंत्र।

ॐ प्रातरग्निं प्रातरन्द्रि ँ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातभगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्र ँ हुवेम।
प्रातर्जितं भगमुग्र ँ हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।।
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रनो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व ऽ उत मध्ये अहन्नाम।
उतोदिता मघवन्तसूर्य्यस्य वयं देवाना ॐ सुमतौ स्याम॥
भग ऽ एवं भगवाँ २ऽ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व ऽ इज्जोहवीति सनो भग पुरऽएता भवेह॥
समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवा श्वा वाजिन ऽआवहन्तु॥
अश्वावतीर्गोमतीर्न ऽउषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

॥ मूत्रपुरीषोत्सर्ग ॥

ग्राम से नैॠत्य कोण (दक्षिण और पश्चिम के मध्य) जल लेकर कुछ दूर जाकर कीट रहित स्थान पर अथवा घर में बने शौचालय में सुविधानुसार मूत्र पुरीषोत्सर्ग करे शिर को ढके हुए रखे तथा यज्ञोपवीत को दायें कान में लपेट लें। शौच मे बैठते समय प्रातःदिन, तथा सायं को उत्तर मुंह तथा रात्री के समय दक्षिण मुंह मौंन होकर शौचक्रिया करें।

एक बार लिंग, मलस्थान को तीन बार धोयें, दश बार बायां हाथ तथा सात बार दायां हाथ राख या मिट्टी से धोयें।

शौच में मृत्तिका ग्रहण -

यस्मिन् देशे तु यतोयं या च यत्रैव मृत्तिका।
सैव तत्र प्रशस्तास्यात् तथा शौचं विधीयते॥ (भृगु)

आचमन प्रयोग -

कुर्य्याद्वादश गण्डूषान् पुरीषोत्सर्जने ततः।
मूत्रेत्सर्गे च चतुरो भोजनान्ते तु षोडश॥ (अश्वालयन)

मौन धारण -

उच्चारे मैथुने चैव प्रस्त्रावे दन्त धावने।
श्राद्धे भोजन काले च षट्सु मौनमाचरेत्॥ (हारीत)

॥ दन्त धावन ॥

दन्त धावन वनस्पति प्रार्थना :-

ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्व ॐ सोमो राजायमागमत्।
स मे मुखं प्रमाक्ष्र्यते यशसा च भगेन च॥
आयुर्वलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥

मुख की दुर्गन्धता नाश हेतु तथा दाँतों की शुद्धता के लिए दन्तधावन करना आवश्यक है।

दन्त धावन वनस्पति -

करंजोदुम्बरो चूतः कदम्बो लोध्रचम्पकौ।
बदरीति द्रुमाश्चैते प्रौक्ता दन्तप्रधावने॥ (नाग देव)

दन्त धावन काष्ट प्रमाण -

दशांगुलं तु विप्राणां क्षत्रियाणां नवांगुलम्।
अष्टागुलं तु वैश्यानां शूद्राणां सप्त संसितम्॥ (नाग देव)

निषिद्धकाल -

प्रतिपद्दर्शषष्ठिषु तथान्य रविवासरे।
दन्तानां काष्ठ संयोगो दहत्या सप्तमं कुलम्॥ (व्यास)

॥ स्नान प्रयोग ॥

स्नान मूलाः क्रियाः सर्वाः श्रुतिस्मृत्यु दितानृणाम्।
तस्मात्स्नानं निषेवेत श्रीपुष्ट्यारोग्य वर्द्धनम्॥ (याज्ञवल्क्य)

अत्यन्त मलिन शरीर में नव छिद्रो से दिन रात मल निकलता रहता है इस लिये प्रातः समय स्नान करना शुभ माना गया है।

स्नानीय जल -

सरित्सु देवखातेषु तीर्थेषु च नदीषु च।
क्रिया स्नानं समुद्दिष्टं स्नानं तत्रामलाः क्रियाः॥
वाप्या कूपे तडागे वा नद्यां वा चोष्णवारिणा।
प्रातः स्नानं सदाकुर्यादुष्णेनैव सदाऽतुर॥ (नागदेव)

उष्णोदक निषेध-

संक्रान्त्यां रविवारे च सप्तम्यां राहुदर्शने।
आरोग्ये पुत्र मित्रार्थे न स्नायादुष्ण वारिणा (वृद्धमनु)

।। स्नान समय तीर्थ आवाहन ।।

त्वं राजा सर्व तीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि में तीर्थ तीर्थराज नमोऽस्तुते।।
नमामि गंगे तवपाद पंङ्कजम् सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानु सारेण सदा नराणाम्।।
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम।।
गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिंकुरु।।
नन्दिनी नलिनी सीता मालती च मलापहा।
विष्णु पादाब्ज संभूता गङ्गा त्रिपथगामिनी।।
भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी।
द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये।।
स्नानोद्यतः पठेत् यत्र तत्रैव निवसत्य सौ।
एतान् मंत्रान् पठित्वैव जलेन स्नान माचरेत्।।

गंगा आदि पवित्र तीर्थो का स्मरण स्नान समय करके पहले हाथ, पैर धोकर तीन कुल्ले कर बायें हाथ में जल ले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुष्ठ से जल को घुमावे फिर शरीर पर कुश से जल के छींटे लगावे।

ॐ चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्व च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
पुण्डरीकाक्ष पुनातु ।।

॥ स्नान संकल्प ॥

ॐ अद्यैत्यादि श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्यैतस्य ब्रह्मणोह्निद्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमेकलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्भुवः स्वर्लोकानां मध्ये भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरत खण्डे भारतवर्षे अमुक क्षेत्रे अमुक जनपदे तत् जनपदान्तर्गत अमुक ग्रामे भगवत्या भागीरथ्या अमुकदिग्भागे बौद्धावतारे श्री विक्रमादित्य राज्यात् अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुक मासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक नामाहं स्वात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्तफल वाप्तये इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात स्पर्श आसन भोजन शयन गमनादि कृत दुरितकर्म्म निरसन द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं कर्माधिकार प्राप्त्यर्थं च स्नान कर्म्म करिष्ये।

॥ दश विध स्नान ॥

1. भस्म स्नान -

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोत इषवे नमः।
बाहुभ्यामुतते नमः॥

पुनः जल स्नान।

2. मृत्तिका स्नान -

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥

पुनः जल स्नान।

3. गोमय स्नान -

ॐ मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मानोगोषु मानो ऽअश्वेषु रीरिषः।
मानोव्वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सद् मित्वा हवामहे॥

पुनः जल स्नान।

4. पंचगव्य स्नान -

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमि ँ सर्वत स्पृत्वा त्यतिष्ठ द्दशांगुलम्।।

पुनः जल स्नान।

5. गोरज स्नान -

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन् मातरं पुरः।
पितरं च प्रयंत्स्वः।।

पुनः जल स्नान।

6. धान्य स्नान -

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसिति मायुषे धान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्ण्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि।।

पुनः जल स्नान।

7. फल स्नान -

ॐ याः फलिनिर्या ऽअफला ऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचन्त्व ँ हसः।।

पुनः जल स्नान।

8. सर्वोषधि स्नान -

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन् पारयामसि।।

पुनः जल स्नान।

9. कुशोदक स्नान -

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

पुनः जल स्नान

10. हिरण्य स्नान

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयंन् मृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।।

पुनः जल स्नान

॥ स्नानांगातर्पण ॥

हाथ में तिल कुश लेकर जल में तर्पण करें -

ॐ ब्रह्मादयो देवा स्तृप्यन्ताम्।
ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भुव देवास्तृप्यन्ताम्।
ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐभूर्भुवः स्वः र्देवास्तृप्यन्ताम्।
ॐ सनकादि ॠषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम्।
ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ स्वर्ऋषय स्तृप्यन्ताम्॥२॥
ॐ भूर्भुवः स्वः ऋषयस्तृप्यन्ताम्॥२॥
ॐ काव्यवाडनलादयःपितरस्तृप्यन्ताम्॥३॥ॐ भूपितरस्तृप्यन्ताम्॥३॥
भुवः पितरस्तृप्यन्ताम्।३ ॐ स्वः पितरस्तृप्यन्ताम्॥३॥
ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम्॥३॥

यक्ष्मतर्पण- जलाशय या नदी के किनारे पर तिल मिश्रित एक जलांजली देवें।

यन्मया दूषितं तोयं शारीरमल संभवात्।
तस्यपापस्य शुद्ध्यर्थ यक्षमेतत्ते तिलोदकम्॥

शिखोदक त्याग- लता आदि में शिखा का पानी दक्षिण मे निचोड़ देवें।

लता गुल्मेषु वृक्षेषु पितरोये व्यवस्थिताः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टै शिखोदकैः॥

उपरोक्त मंत्रों से तर्पण देकर शुद्ध वस्त्र धारण कर लेवें।

॥ इति स्नानाङ्ग तर्पण।

॥ अंगन्यास एवं शालिग्राम पूजन ॥

संकल्प -

अथास्मिन् शुभसंवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौवासरे च अमुकगोत्रोत्पन्नेऽमुक नामाहं अमुकदेवता प्रतिष्ठायामधिकार सिद्ध्यर्थं कृतं हेमाद्रि प्रभृति दश विधस्नानोऽहं

विष्णु श्राद्धमहं करिष्ये तत्रादौ देहशुद्ध्यर्थं पुरुषसूक्तेन अंगादिन्यासं कृत्वा षोडशोपचारैः शालिग्राम पूजनमहं करिष्ये एवं प्रार्य श्चतांगभूतं हवनं च करिष्ये।

हरिःॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।। सभूमि ठं सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठदशांगुलम्।।१।। आवाहनम्।। इति वाम करे।। पुरुषऽएवेद ठं सर्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति।।२।। आसनम्।। इति दक्षिण करे।। एतावानस्य महिमातोज्ज्यायाँश्च पूरूषः। पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या-मृतन्दिवि।।३।। पाद्यम्।। इति वाम पादे।। त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्ये हाभवत्पुनः। ततोविष्ष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।४।। अर्घ्यम्।। इति दक्षिण पादे।। ततो व्विराडजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।५।। आचमनीयम् ।। वाम जानौ।। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्। पशूँ स्तांश्चक्रे वायिव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ।।६।। स्नानं ।। दक्षिण जानौः।। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ठं सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।।७।। वस्त्रम्। वाम कट्याम्।। तस्माद श्वाऽअजायन्त ये केचोभयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ।।८।। यज्ञोपवीतं ।। दक्षिण कट्याम्।। तंय्यज्ञंबर्हिषि प्रौक्षन्पु रुषञ्जातमग्ग्रतः।। तेन देवा ऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्चये।।९।। गन्धाः । इति नाभौ।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखङ्किम स्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादा उच्येते।।१०।। पुष्पाणि ।। हृदये।। ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहु राजन्यः कृतः ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ठं शूद्रोऽअजायत।। ११।। धूपः ।। वामकुक्षौ।। चंद्रमा मनसौ जातश्चक्षौः सूर्योऽअजायत।। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्निरजायत।। १२।। दीपः।। दक्षिण कुक्षौ।। नाब्भ्या ऽ आसीदन्तरिक्ष ठं शीर्ष्णोद्योः समवर्तत।। पद्भ्यामभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ २ऽ अकल्पंयन।।१३।। नैवेद्यम् ।। कण्ठम्।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः।।१४।। दक्षिणायुत ताम्बुलम्।। नमस्कारः।। वक्त्रे।।

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवायद्यज्ञन्तन्वा नाऽ अबध्नन्पुरुषम्पशुम्॥१५॥ आरार्तिक्यम् प्रदक्षिणाम्,॥ अक्ष्णौः॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्या सन्। ते ह नाकम्महिमानःसचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥ १६॥ पुष्पांजलिं नमस्कारं॥ मूर्ध्नि इति॥

॥ प्रायश्चित हवन ॥

अग्नि स्थापनम् -

उपयमनकुशान् दक्षिणेन पाणिनाऽऽदाय वामहस्ते कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु निदध्यात्। अग्न्याधानम्। अग्नि स्थापन करें।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां २ऽ आसादयादिह॥

अग्नेरुत्तरत आचार्यब्रह्मणोर्वरणं कुर्यात्।

(हवन रहस्य वत् संकल्पः) ब्रह्म स्थानं दक्षिणे।

अग्नि के उत्तर में आचार्य और ब्रह्मा का वरण कर लेवें। तब संकल्प बोल लेवें। ब्रह्मा को दक्षिण में स्थान देवे॥

रेखात्रय की पूजा करे -

ॐ ब्रह्मणे नमः (पूर्व रेखायाम्) ॐ विष्णवे नमः (मध्य रेखायाम्) ॐ रुद्राय नमः (उत्तर रेखायाम्)

ततो विधिनाम्ने अग्नये नमः।

इससे अग्नि की पूजा करके फिर सात जिह्वाओं' की पूजा करें।

ॐ करालायै नमः॥१॥ धूमिन्यै नमः॥२॥

ॐश्वैतायै नमः॥ ३॥ ॐ लोहितायै नमः ॥४॥

ॐ महालोहितायै नमः॥५॥ ॐ सुवर्णायै नमः॥६॥

ॐ पद्मरागायै नमः॥७॥

फिर दक्षिण जानु को भूमि पर टेक कर ब्रह्माऽन्वारब्ध होकर प्रज्वलित अग्नि में स्रुव से घृत आहुति दें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा (इति मनसा) मन में उच्चारण कर

आहुति दें, **इदं प्रजापतये न मम** मन से ही त्यागकर हुत शेष को प्रोक्षणी में डाल देवें। इसी प्रकार सारी आहुति दें।

ॐ इन्द्राय स्वाहा।। इदमिन्द्राय न मम।। (इत्याधारौ)

ॐ अग्नये स्वाहा।। इदमग्नये न मम।।

ॐ सोमाय स्वाहा।। इदं सोमाय न मम।।

(ये दोनों आज्यभाग की आहुति दे) फिर १०८ वा २८ आहुतियां देवे-

ॐ भूः स्वाहा, इदं अग्नये न मम।।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।।

ॐ भूर्भुव स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।।

इस प्रकार सात बार करने पर २८ आहुतियां हो जाती हैं। फिर ब्रह्मकूच से होम करें। यथा सुवर्णपात्र में गायत्री मंत्र से गोमूत्र। गन्धद्वारा इत्यादि से गोमय।

ॐ आप्या यस्व समेतु ते विष्वतः सोमवृष्ण्यम् भवावाजस्य सङ्गथे।। गो दुग्ध।

ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषं ०-से दधि। ते तेजोसि शुक्रम् से घृत।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनो० इससे कुशोदक लेवें।

इनका प्रणव से मंथन करके यज्ञियकाष्ठ से फिर मथ कर **'ॐकार'** से उसे मंत्र कर सात से अधिक हरे दर्भपत्रों से पंचगव्य का निम्न लिखित मंत्रों से होम करें -

ॐ इरावती धेनुमतीहि भूत ॐ सूयवसिनी मनवे दशस्या।।
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्य पृथिवी मभितो मयूखैः स्वाहाः।।
इदं पृथिव्यै इदं न मम।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदेधे पदम्।
समूढमस्य पा ॐ सुरे स्वाहा।।
इदं विष्णवे न मम।।

ॐ मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः।

मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे।।

इदं रुद्राय इंद न मम।।

ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये।

शंयोरभि स्रवन्तु नः ।। इदमद्भ्यो न मम।।

ॐ अग्नेय स्वाहा।। इदमग्नेय इदन्न मम।।

ॐ सोमाय स्वाहा।।

इदं सोमाय इदन्न मम।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि

धियो योनः प्रचोदयात्। इदं सवित्रे इदन्न मम।।

ॐ 'स्वाहा'। ॐ इदं परमेष्ठिने न मम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।

इस प्रकार होमकर पंचगव्य और घी दोनो मिलाकर **ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।। इति स्विष्टकृत् होमः।।**

फिर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे -हे ब्राह्मणों 'मैं व्रत ग्रहण करूँगा' फिर ब्राह्मण कहें **'कुरुष्व'** कीजिये।

ब्राह्मणों की आज्ञा से **प्रणव (ॐ)** बोलकर हुत से शेष पंचगव्य को पान करें।

तत्पश्चात् दूसरे दिन या उसी दिन संकल्प करके गोदान अथवा तन्निष्क्रय दक्षिणा देवे। फिर -

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे, न मम।।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय, न मम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।

इस प्रकार सात बार होम करके- फिर **ब्रह्मणान्वारब्ध** होकर-

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।।

ॐ भुवः स्वाहा।। इदं वायवे न मम।।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्यायः नमम।।

गोदानादि- कई आचार्य प्रायश्चित हवन के बाद गौ, भू,

तिल, हिरण, आज्य, वस्त्र, धान्य, गुड़, रजत एवं लवणादि का दान करवाकर मंगल स्नान कराकर वेदी समीप पूजा आचार्यादि वरण जलयात्रा से पहले कराते हैं।

गोदान विधि -

देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सित प्रायश्चितस्य पूर्वांग तथा विहितं गोदान करिष्ये।।

धेनुपूजनं कुर्यात। गोपुच्छे देवर्षिपितृतर्पणं कृत्वा।

कांस्यपात्रे गोपुच्छं निधाय दुग्धतिलकुश सुवर्ण युतं कृत्वा।

(खड़े होकर दान करें)

यथा- **देश कालौ स्मृत्वा मम समस्त पापक्षयार्थं अमुक देव प्रतिष्ठा यज्ञार्हता सिद्धये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं इमां गां सवत्सा यथाशक्ति विभूषिताय रुद्रदेवता तुभ्य महं संप्रददे। संकल्प जल युतं गोपुच्छ विप्रहस्ते दद्यात्।**

ॐ यज्ञ साधन भूता या विश्वस्याधौघनाशिनी।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा।

।। इति प्रार्थयेत्।।

।। अथ प्रायश्चित होमः ।।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिषीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ॐ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाह। इदमग्निवरुणाभ्याम्।।१।। ॐ स त्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसौव्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ॐ रराणो वीहि मृडीक ॐ सुहवो न ऽ एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम्।।२।। ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ॐ स्वाहा। इदमग्नये।।३।। ॐ येते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्न्नो अद्य सवितोत विष्णुविश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः, स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो

मरुद्भ्यः।।४।। ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधवं विमध्यम ॐ श्रथाय। अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ।।५।।

"ततः बर्हिहोमं स्वाहा" इससे बर्हिहोम करें।

"इदं प्रजापतये न मम" यह भी बोल दे।

पश्चात् संस्रवप्राशन वा अवघ्राण करके दो आचमन करके अग्नि में 'स्वाहा' शब्द से पवित्री डालकर पूर्णपात्र दान देवे।

फिर अग्नि की प्रार्थना करें

ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रभ्य काम्यन्।
सनिं मेधामयासिष ॐ स्वाहा।।
यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधया मेधाविनं कुरु स्वाहा।
मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधांधाता दधातु मे।।

उत्तरांग अग्निपूजन तथा पुनः प्रार्थना करे -

ॐ अग्नये सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यसमज्जुहुराणमेनो भूमिष्ठांते नम उक्तिं विधेम।
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम्।
आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।

बाद में संकल्प करें -

प्रायश्चित्तोत्तरांग विष्णोश्राद्ध संपत्तये ब्राह्मणचतुष्ट्याय आमान्नं पक्वान्नं वा दास्ये।

ऐसा संकल्प कर ४ ब्राह्मणों को कच्चा या पका हुआ अन्न दें। पश्चात् **त्र्यायुषीकरण** (यज्ञ भस्म लगावे) **ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने (ललाटे) कश्यपस्य त्र्यायुषम् (दक्षिणबाहुमूले) यद्देवेषु त्र्यायुषम् (दक्षिणबाहुमूले) तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् (हृदि)** फिर आचार्य दक्षिणा ब्राह्मण भोजन संकल्प भगवान की आरती पुष्पांजलि प्रदक्षिणा करके देवता तथा अग्नि का विसर्जन करें पीछे यजमान के तिलक कर रक्षाबंधनादि करें।

(इति होमारंभे प्रायश्चित प्रयोगः)

॥ पाप पुरुष ध्यान ॥

वाम कुक्षि स्थितं कृष्णमंगुष्ठं परिमाणकं।
विप्रहत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेये बाहुकम्॥
मदिरापान हृदयं गुरु तल्प कटीयुतमं।
तत्संयोगी पदद्वन्दयमुप पातक रोमकम्॥
खड़गचर्मधरं दुष्ट अधोवक्त्र च दुःसहम्॥

वाम कुक्षी में पाप पुरुष का ध्यान करते हुए यजमान **"यं"** बीज सोलह बार जपते हुए पूरक, **"रं"** बीज का चौसठ बार जप करते हुए कुंभक **"यं"** बीज का जप बत्तीस बार करते हुए रेचक प्राणायाम करे और ऐसा समझे कि पाप पुरुष जल कर नष्ट हो गया है फिर **"वं"** का जप सोलह बार कर समझे कि मेरा शरीर अमृत पी रहा है **"लं"** बीज का मंत्र जप सोलह बार जपते हुए समझे कि मेरा शरीर वज्र तुल्य हो गया है।

इसके बाद पृथ्वी पर यंत्र बना कर गणेश पूजन कर कलशों का पूजन कर लेवें।

॥ मंगलाचरण ॥

गणेशस्मरण -

सदा सर्वदा ध्यायतामेक दन्तं सदापूजितं सिन्दूरारक्त पुष्पैः।
सदाचर्चितं चन्दनैः कुंकुमाक्त नमो ज्ञान रूपं गणेशं नमस्ते॥

विष्णु स्मरण -

नारायणाय रविमण्डल संस्थिताय, नारायणाय परमार्थ प्रदर्शनाय।
नारायणाय अतुलाय अतीन्द्रियाय, नारायणाय विरजाय नमोनमस्ते॥

शिव स्मरण -

नमः शिवाभ्यां वृष वाहनाभ्याम्। विरंचि विष्णिवन्द्र सुपूजिताभ्याम्।
विभूतिपाटी रवि लेपनाभ्याम नमो नमः शंकर पार्वतीभ्याम्॥

देवी स्मरण-

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त वीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्नाभुवि मुक्तिहेतुः।।

।। पंचगव्य सम्मेलनम् ।।

कांस्यपात्र अथवा ताम्र पात्र में मंत्रों के द्वारा गोमूत्रादि डालें।

गोमूत्र -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात्।।

गोमय -

मा नस्तोके तनये मान ऽ आयुषि मानो गोषु मानो ऽ अश्वेषुरीरिषः।
मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे।।

दूध -

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवावाजस्य सङ्गथे।।

दधि -

ॐ दधिक्राव्णो ऽ अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयू ँ षितारिषित्।।

घृत -

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि
प्रियन्देवानामना धृष्टन्देव यजनमसि।।

कुशोदक -

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवे शिवनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

यज्ञकाष्ट से ॐकार उच्चारण करते हुए अभिमंत्रित करें।

पंचगव्य प्रोक्षण -

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ उर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः। तस्मा ऽअरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजनयथा च नः।।

।। पंचगव्य प्राशन ।।

यत्वगस्थिगतं पापं देहेतिष्ठति मामके (तावके)
प्राशनं पंचगव्यस्य दह त्यग्निरिवेन्धनम्।।

पंचगव्य प्रमाण –

गोमूत्रं भागतश्चार्धे शकृत्क्षीरस्य च त्रयम्।
द्वयं दध्नो घृतस्यैकमेकश्च कुश बारिजः।। (विष्णु धर्मे)

।। गंगा पूजनम् ।।

कर्म पात्र स्थापन कर जल से पूर्ण भर गंगा आदि पवित्र तीर्थ, नदियों का आवाहन स्मरण तथा पूजन करें :-

गंगाध्यान –

अभिनव विषबल्ली पादपद्मस्य विष्णो।
र्मदनमथन मौलिर्मालती पुष्पमाला।।
जयति जय पताका काप्यसौ मोक्ष्य लक्ष्म्याः।
क्षपित कलिक लंका जाह्नवी नः पुनातु।।१।।

अथवा –

यस्या मलंदिवियशः प्रथितं रसायां।
भूमौ च ते भुवन मङ्गल दिग्वितानाम्।।
मन्दाकिनीति दिवि भोगवतीति चाधो।
गंगेति चेह चरणाम्बु पुनाति विश्वम्।।

आवाहन –

एह्येहि गंगे दुरितौघ नाशिनी झसादिरुढे ह्युदकुभहस्ते।
श्रीविष्णु पादाम्बुजसंभवे त्वं गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते।।
ॐ इम्ममे गंगे यमुने सरस्वती शतद्रुस्तोमं सचता परुष्णया।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया।।

मंत्र से जलपात्र का पूजन कर जल अभिमंत्रित करें –

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

गंगादि तीर्थों की प्रार्थना -

नमामि गंगे तव पाद पकजं सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रूपम्।
भक्तिं च मुक्तिं च ददासिनित्यं भावानुसारेण सदानराणाम्॥१॥
गाङ्ग वारि मनोहारी मुरारी चरणाच्युतम्।
त्रिपुरारी शिरश्चारी पापहारी पुनातु माम्॥२।

ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्राम देवताभ्यो नमः। स्थान देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

मंत्र से जल प्रोक्षण करें।

आचमन -

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः। गोविन्दाय नमः हस्तप्रक्षालनम्॥

पवित्र धारण -

यजमान कुशा की पवित्र पहनें बाये हाथ में जल लेकर अंगुष्ठ अनामिका से अभिमंत्रित करें -

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

जल का प्रोक्षण करे -

अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽ पिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष सवह्याभ्यन्तर शुचि॥ पुण्डरी काक्ष पुनातु।

इस मंत्र को भी यहां पर यह कह सकते हैं -

ॐ चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मापुनातु देवो
मा सविता पुनात्वाच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते
पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्काम पुनेतच्छ केयम्॥

।। भूतोत्सारणम् ।।

विनियोग -

अपसर्पन्त्वति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः शिवो देवता अनुष्टुप् छन्दः भूतादिविघ्नोत्सादने विनियोगः। सरसों वायें हाथ में रख दायें हाथ से अभिमंत्रित करें -

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि।। सरसों बिखेर देवें -

ॐ प्राच्यै नमः। पूर्व मे।
ॐ अर्वाच्यै नमः। दक्षिण में।
ॐ प्रतीच्यै नमः। पश्चिम में।
ॐ उदीच्यै नमः। उत्तर में।
ॐ ऊर्ध्व ब्रह्मणेनेमः। आकाश में।
ॐ अद्यः अनन्तायनमः। भूमि में।

दिशाओं में गंधाक्षतादि भी चढ़ा देवें -

मंत्र - ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।

प्रार्थना -

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषा मविरोधेन पूजा कर्म समारभे।।

।। आसन पूजनम् ।।

स्योनामिति मंत्रस्य मेधातिथिः ऋषिः अग्नि देवता पिपीलिकामध्यानिचृदगायत्री छन्दः आसन पवित्र करणे विनियोगः।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म स प्रथाः।।

पूजन करें -

पृथिव्यै नमः। आधार शक्तै नमः। शेष नागाय नमः। कूर्मासनाय नमः। कमलासनाय नमः। यज्ञस्थल भूम्यै नमः।

पुष्प लेकर प्रार्थना -

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरु चासनम्॥

पृथ्वि को पुष्प अर्पण कर देवें।

॥ घण्टा पूजनम् ॥

पूजन मंत्र -

विनियोग- **सुपर्णोऽसि मंत्रस्य गरुत्मान्ऋषिःधृतिछन्दः गरुडपूजने विनियोगः॥**

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मास्त्रिवृते शिरो गायत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दाँ स्यङ्गानि यजूꣳषि नाम। सामते तनुर्वाम देव्यं यज्ञायाज्ञियं पुच्छं घिष्ण्याः शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पतः॥ घण्टास्थिताय गरुडाय नमः॥

घण्टा को चन्दन अक्षत पुष्प चढा देवे तथा घण्टा को बजा देवे-

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
सर्वभूत हितार्थाय घण्टानादं करोम्यहम्॥

शंख पूनजम् -

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणी चराणि च।
तानितीर्थानि शंखेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्म शासनात्॥

शंखाय नमः कहकर चन्दन लगाये अक्षत पुष्प से पूजन करें-

विनियोग-

अग्निऋषि मंत्रस्य-

कुत्स ऋषि वैश्वानरो देवता जगती छन्दः पांचजन्य पूजनें विनियोग॥

ॐ अग्नि ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः। तमीमहेमहागयम्॥

प्रार्थना -

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुनां विघृत करे।
नमन्ति सर्व देवश्च पांचजन्य नमोऽस्तुते॥

धूपपात्र पूजनम्-

विनियोग-

ऋताषाडमंत्रस्य ऋतुविद्या देवता त्रुस्टुप्छन्दः धूपपात्र (गन्धर्व) पूजने विनियोग॥

ॐ ऋताषाडऋत धामाग्निगन्धर्वस्तस्यौषध्यौऽप्यस्रसोमुदो नाम। सन ऽ इन्द्र ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥

गधर्व देवाय धूपपात्राय नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि॥

॥ यज्ञोपवीत पूजन ॥

यज्ञोपवीत को पीपल आदि पत्ते के ऊपर रखकर जल से प्रक्षालन करें। निम्न मंत्रों से अक्षत छोड़े-

प्रथमतन्तौ ॐ ओंकारमावाह्यामि।

द्वितीयतन्तौ ॐ अग्निवाहयामि।

तृतीयतन्तौ ॐ सर्पानावाहयामि।

चतुर्थतन्तौ ॐ सोममावाहयामि।

पंचमतन्तौ ॐ पितृन आवाहयामि।

षष्ठतन्तौ ॐ प्रजापतिमावाहयामि।

सप्तमतन्तौ ॐ अनिलमावाहयामि।

अष्टमतन्तौ ॐ सूर्यमावाहयामि।

नवमतन्तौ ॐ विश्वान् देवानामावाहयामि॥

प्रथमग्रन्थौ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि।

द्वितीय ग्रन्थौ ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि।

तृतीयग्रन्थौ ॐ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि। पुनः-

प्रणवाद्यावाहित देवताभ्यो नमः।

इस मंत्र से यथा स्थानं न्यसामि। कहकर तन्तुओं में न्यास कर गन्धाक्षतादि से पूजन कर दशबार गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करें।

॥ यज्ञोपवीत धारण ॥

एक मंत्र पढकर एक जनेऊ पहनें इसके बाद आचमन कर दूसरा जनेऊ धारण करें। एक-एक कर जनेऊ पहनना चाहिए।

विनियोग -

ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।

यज्ञोपवीत पहनने का मंत्र -

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवी तेनोपनह्यामि॥

यदि पुराने यज्ञोपवीत का त्याग करना हो तो पुरानें जनेऊं को माला जैसा बनाकर सिर से पीठ की ओर निकाल जल में प्रवाहित करें-

एतावाद्दिन पर्यन्त ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्ण त्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

जीर्ण यज्ञोपवीत त्याग नूतन यज्ञोपवीत धारण कर यथाशक्ति गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए ।

॥ शिखा बान्धने का मंत्र ॥

विनियोग -

मानस्तोकेति मंत्रस्य कुत्स ऋषि रुद्रो देवता निचृदार्षीजगति छन्द शिखा बन्धने विनियोगः।

ॐ मा नस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मा नोऽऽअश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥
चिद्रूपिणी महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

अथ षडंगन्यास -

ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐभुवः शिरसे स्वाहा।
ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवाचाय हुम्।
ॐ भर्गो देवस्य धीमाहि नेत्र त्रयाय बौषट्।
ॐ धियोयोनः प्रचोदयात्। अस्त्राय फट्।

प्राणायाम -

ॐ भूः ॐ भुवः ॐस्वः ॐमहः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहिधियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

अंगूठे से नाक के दाहिने छिद्र को दबाकर बाये छिद्र से स्वास को धीरे-धीरे खींचने को 'पूरक' प्राणायाम तथा मंत्र जाप करते हुए नाभि कमल में भगवान विष्णु का ध्यान करें। जब सांस खीचना रुक जाय तब अनामिका और कनिष्ठका अंगुली से नाक के बायें छिद्र को भी दबा दें, मंत्र का जाप करते रहें, यह 'कुंभक' प्राणायाम हुआ इस समय हृदय में ब्रह्मा का ध्यान करें। अंगूठे को हटाकर दाहिने छिद्र से श्वास को धीरे-धीरे छोड़ने को 'रेचक' प्राणायाम कहते हैं, इस समय ललाट में शंकर का ध्यान करना चाहिए।

प्रार्थना -

उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वत मूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योमनुज्ञातां गच्छ देवि यथा सुखम्॥
यस्य स्मृत्वा च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु॥
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्॥

॥ दीप पूजनम् ॥

विनियोग-

अग्निज्योतिरीति मंत्रस्य प्रजापति ऋषि अग्निसूर्योदेवता याजुषी पङ्क्तिछन्दःदीप पूजने विनियोगः॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।

दीप का पूजन गधाक्षत पुष्प आदि से करें।

प्रार्थना -

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योति जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं पूजादीप! नमोऽस्तु ते॥
शुभं करोतु कल्याणं अरोग्यं सुखसम्पदम्।
शत्रुबुद्धि विनाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

॥ भैरव पूजनम् ॥

ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ रुरु भैरवाय नमः।
ॐ चण्डभैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः।
ॐ उन्मतभैरवाय नमः। ॐ कपाल भैरवाय नमः।
ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।

भैरव का पूजन गन्धाक्षत से कर देवें।

प्रार्थना -

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम्।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञा दातु मर्हसि॥

॥ सूर्य पूजनम् ॥

भूमि पर त्रिकोण षट्कोण बनाकर उसके ऊपर पात्र रखें। पात्र के ऊपर अर्घ्य रख जल गन्धक्षतादि डाल दें। मंत्र -

शन्नो देवी रभिष्टयआपो भवन्तु पीतये शंय्यो रभिस्त्रवन्तु नः॥

अक्षत छोड़ें- **दशकलात्मने धर्म प्रदवह्नि मण्डलाय नमः। द्वादश कलात्मने अर्थप्रद सूर्य मण्डलाय नमः। शोडष कलात्मने कामप्रद चन्द्र मण्डलाय नमः॥ संसत्वे नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। पं परमात्मने नमः। अं अन्तराग्नये नमः॥**

सूर्य ध्यान

नमोनमस्तेऽस्तु सदा विभावसो
सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।

अनन्तशक्तिर्मणि भूषणेन

ददस्व भक्तिं मममुक्ति भव्याम्॥

रक्ताम्बुजासनमशेष गुणैकसिन्धुं

भानुसमस्त जगतामधियं भजामि।

पद्मद्वया भयवरान् दधतं कराब्जै-

र्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिंत्रिनेत्रम्॥

सूर्य को पुष्प अर्पण करें।

आवाहन –

आवाहयेतं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्युमणि ग्रहेशं।

सिन्दूरवर्ण प्रतिमाव भासं भजामि सूर्यं कुलबृद्धि हेतवः॥

पूजन विनियोग :

आकृष्णोतिमंत्रस्य हिरण्यस्तूप ऋषि

स्त्रिष्टुप् छन्द : सूर्यो देवता सूर्यावाह ने पूजने विनियोगः॥

पूजन –

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यंञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

अर्घ्यदान –

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशी जगत्पते।

अनुकम्पाहि मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

नाम मंत्रों से सूर्य प्रणाम –

ॐ मित्राय नमः। ॐ रवयेनमः। ॐ सूर्याय नमः।

ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ पूष्णे नमः।

ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ मरीचये नमः। ॐ आदित्याय नमः।

ॐ सवित्रेनमः। ॐ अर्काय नमः। ॐ भाष्करायनमो नमः।

भगवान सूर्य का पूजन गन्धाक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य से कर प्रार्थना करें।

एकचक्र रथोयस्य दिव्य कनक भूषितः।
सः मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः।।
आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ती दिनेदिने।
जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोपजाय ते।।
नमो धर्म विधात्रेहि नमो कर्मसु साक्षिणे।
नमो प्रत्यक्ष देवाय भाष्कराय नमो नमः।।

अर्घ्य के शेष जल से पूजन सामग्री की छींटा लगायें -

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः उशतीरिव मातरः तस्मांऽ अरं गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।

अर्घ्य के दिये जल को आँखों पर लगायें -

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शंत जीवेम शरदः। शत ॐ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शत मदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

।। ब्राह्मण पूजनम् ।।

विनियोग-

ब्रह्मजज्ञानमितिमंत्रस्य आदित्य
ऋषि आर्षीत्रीष्टुष्छन्दः ब्राह्मण पूजने विनियोगः।।

ब्राह्मणों का पूजन पाद्य, अर्घ्य गन्धक्षतादि से करते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करे-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽ आवः।
सबुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः।।
यो देवेभ्य आतपतिः यो देवानां पुरोहितः पूर्वो यो देवेभ्यो
जातोनामो रुचाय ब्रह्मये।।
ॐ ब्राह्मण मद्य विदेयं पितृमन्त पैतृमत्य मृषिमाषेयॐ सुधातु दक्षिणम्।
अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातार माविशत।

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्माणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽ इषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनु र्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामेनः प्रजन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽ औषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥
ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥

आपद्घनध्वान्त सहस्त्र मानव समीहितार्थार्पण काम धेनव।
अपार संसार समुद्र सेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मण पादपांसवः॥
आधि व्याधि हरं नृणां मत्यु दारिद्र्य नाशनम्।
श्रीपुष्टि कीर्ति दं वन्दे विप्र श्री पाद पंकजम्॥
यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां जेष्ट पुष्करे।
तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ विप्राणां पाद शोधने॥
नमः ब्रह्मण्य देवाय गौ ब्राह्मण हिताय च।
जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥
ब्राह्मणं जंगमं तीर्थं त्रिषु लोकषु विश्रुतम्।
तेषां वाक्यो दकेनैव शुद्यन्ते मलिनाः जनाः॥

प्रार्थना -

नमोऽस्तनंन्ताय सहस्त्रमूर्त ये सहस्त्रपादाक्षसिरोरुवाहवे।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटियुग धारिणे नमः॥
यदर्चनं कृतं विप्र तव विष्णुस्तद रूपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णुवेतु समर्पणम्।



॥ यजमान तिलक ॥

विनियोग-

युंजन्तिमंत्रस्य परमेश्वर सूर्य देवता गायत्री विराड छन्दः यजमान तिलककरणे विनियोगः॥

ॐ युंजन्ति ब्रध्नं मरुषं चरंतं परि तस्थुषः। रोचन्तो रोचना दिवि॥
युंजन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा॥

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृकाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्टकामार्थ सिद्धये॥
अक्षतं विप्र हस्ताश्च यो गृह्णान्ति नरः सदा।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोवलम्॥

स्त्रियों का तिलक मंत्र -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यातम्।
इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽ इषाण॥

कन्याओं का तिलक मंत्र

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः। सुभद्रिकांकाम्पील वासिनीम्॥

बालकों का तिलक मंत्र-

यावत् गंगा कुरुक्षेत्रे यावत् तिष्ठति मेदिनी।
यावत् राम कथा लोके तावत् जीवतु बालकाः॥

विधवा स्त्रियों का तिलक मंत्र -

ॐ तद् विष्णोः परमं पद ॐ सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम्॥



॥ शान्ति पाठ ॥

पुष्प हाथ में लेकर अपने इष्ट का ध्यान करना चाहिए ध्यान से ही फल की प्राप्ति होती है।

ॐ आनो भद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतो दव्धासोऽअपरितास उद्भिदः। देवानोयथा सदमिद्वृधे ऽ असन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ‌ँ रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना ‌ँ सख्यमुप से दिमा वयं देवा न ऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥ तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणथ्ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥ तन्नो वातो मयोभुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं घृष्ण्या युवम्॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम। पूषानो यथा वेद सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा वि श्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा ऽ अवसागमन्निह॥७॥ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवाथ्ँ सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥ शतमिन्नु शरदो ऽ अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽअदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥१०॥ तं पत्निभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः॥११॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षथ्ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः। शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वथ्ँ शान्तिः शान्तिरेव

शान्तिः समा शान्तिरेधिः ॥१२॥ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शंनः कुरु प्रजाभ्यो भयं नः पशुभ्यः ॥१३॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव ॥१४॥ गणानां त्वा गणपति ॳ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपति ॳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिॳ हवामेह वसो मम। आहमजानि गर्भध मा त्वमजासि गर्भधम्॥१५॥ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चनः। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥१६॥ एतन्ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहु बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेनयज्ञमव तेनयज्ञपतिं तेन मामव॥१७॥ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृह स्पतिर्यज्ञमिमं तन्नो त्वरिष्टं यज्ञॳ समिमं दधातु। विश्वे देवा स इह मादयन्ता मोर प्रतिष्ठ॥१८॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। शुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्ति र्भवतु॥

॥ चतुर्दश नमस्कार ॥

ॐ श्रीमन्नमहागणाधि पतये नमः। ॐवाणी हिरण्य गर्भाभ्यांनमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः। ॐ शची पुरन्दराभ्यांनमः। ॐ मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः। ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः। ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्नमहागणाधिपतये नमः।

॥ गणेश स्मरणम् ॥

रक्ताक्षत दूर्वा हाथ में लेकर गणेश जी का ध्यान करें -

ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्र केतु गणाध्यक्षो भालचन्द्र गजाननः।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥

शुक्लाम्बरं धरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये।।४।।
अभिप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।५।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीः विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।६।।
अनन्यश्चि न्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।७।।
स्मृते सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुष स्तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।८।।
सर्वेष्वा रम्भ कार्येषु देवास्त्रि भुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धि ब्रह्मेशान जनार्दनाः।।९।।
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्।
येषा हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः।।१०।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषां मिन्दिवरस्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।११।।
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव तारावलं चन्द्रवलं तदैव।
विद्याबलं दैव बलं तदैव लक्ष्मीपते तेंघ्रि युगस्मरामि।।१२।।
विश्वेशं माधवं ढुण्डिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशी गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।१३।।
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।१४।।

।। अथ प्राधन संकल्प ।।

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोतमस्य तत्सत् पृथिव्यां श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोह्नि द्वितीय प्रराद्धे श्री श्वेत वाराहकल्पे सप्त मे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम

चरणे पंचाशत कोटि योजन विस्तीर्ण भूमण्डलान्तर्गत सप्तद्वीप मध्यवर्तिनी जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्राऽपि परमपुनीते भारतवर्षे आयार्वतान्तर्गत काशी कुरुक्षेत्र पुष्कर प्रयाग गंगोत्री यमुनोत्री बद्री केदार युक्त अमुक जनपदे तत् जनपदान्तर्गत अमुक नगरे (ग्रामे) देव अग्नि ब्राह्मणानां सन्निधौ बौद्धावतारे श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयतो प्रभवादि षष्ठि संवत्सराणां मध्ये अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतो महामागल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशि स्थिते सूर्ये अमुकराशि स्थितेचन्द्रे शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशि स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेष विशिष्ठायां शुभ पुण्य तिथौ अस्मिन् शुभ क्षणे अमुकगोत्रः अमुक शर्मा (वर्मा-गुप्तः) अहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सर्व-पाप-क्षय पूर्वक दीर्घायु विपुल धन-धान्य पुत्र-पौत्रादि अवच्छिन सन्तति-वृद्धि स्थिर-लक्ष्मी कीर्तिलाभ-शत्रुपराजय-सद्भीष्ट सिद्ध्यर्थं धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रुति-स्मृति पुराणोक्तफल वाप्ति कामश्च श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं विष्णवादि मूर्तीनां अचल प्रतिष्ठां करिष्ये। तदंगत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं आचार्यादि वरणं मण्डपस्थ देवता पूजनं करिष्ये प्रथमं गणेशाम्बिका पूजनं च करिष्ये।

तिल अक्षत युक्त जल छोड दें।

॥ गणेश अम्बिका पूजनम्॥

गणेशध्यान

शिव तनय वरिष्ठं सर्वमाङ्गल्य मूर्ती
परशु कमल हस्तं शोभितं मोदकेन।
अरुण कुशुम माला व्याल यज्ञोपवीतं
मम हृदय निवासं एक दन्तं नमामि॥

विनियोग –

गणानान्त्वेति मंत्रस्य प्रजापतिऋृषि
त्रिष्टुप्छन्द गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने पूजने विनियोगः।

मंत्र –

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे
प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा
निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहमजानि
गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

आवाहन –

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरोभव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव॥
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥
एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्रसमस्त विघ्नौघ विनाश दक्षः।
मांगल्य पूजा प्रथमं प्रधानं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

आवाहन मुद्रा दिखायें।

स्थापन –

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तुः च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।

स्थापन मुद्रा दिखायें।

प्रतिष्ठापन –

ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञ
ँ समिमं दधातु। विश्वे देवा स इह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ॥

प्रतिष्ठापन करें।

आसन –

ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति॥

विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुतम्।
स्वर्ण सिहासनं चारू गृहाण सुर पूजितम्।।

आसन अर्पण करें।

पाद्य -

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायां श्चपूरुषः।
पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि।।
सर्वतीर्थं समायुक्तं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवन भवानी सुतः।।

अर्घ्य -

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वं व्यक्रामत्सा शनानशने अभि।।
गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्य चगन्ध संयुक्तं फलमाल्याक्षतैर्युतम्।।

गन्धाक्षत युक्त अर्घ्य समर्पण करें।

आचमन -

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधिपूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चात् भूमिमथो पुरः।।
गणाध्यक्ष नमस्तुभ्यं सर्वदेवरभिवन्दित।
तीर्थोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो।।

आचमन जल चढायें।

स्नानीय जल -

ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।

स्नानीय जल अर्पण करें। पुनः शुद्धस्नान।

पयस्नान -

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषुदयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयः स्वती प्रदिशः सन्तुमह्यध्यम्।।

दूध से गणेशम्बिका का स्नान कराये। पुनः जल स्नान।

दधिस्नान -

ॐ दधिक्राब्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयू ꣳ षितारिषत।।

दधि से गणेशाम्बिका का स्नान करावें। पुनः शुद्ध स्नान।

घृत स्नान -

सं बर्हि रङ्क्ता ꣳ हविषा घृतेन समादित्यै र्वसुभिः सम्मरुद्भिः।
समिन्द्रो विश्वदेवे भिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा।।
नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोष कारकम्।
घृततुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिका का घी से स्नान कराये। पुनः शुद्ध स्नान

मधुस्नान -

ॐ अश्विना पिवतां मुध सरस्वत्या सजोषसा।
इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ता ꣳ सोम्यं मधु।।
पुष्परेणु समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

मंत्र से गणेशाम्बिका का मधु से (स्नान कराये) पुनः शुद्ध स्नान।

शर्करास्नान

ॐ अपाꣳ रस मुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳ
रसस्य यो सरस्तं वो गृह्णाम्युतमु पयाम गृहीतो सिन्द्रायत्वा
जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।
इक्षुरस समुद्भूतां शर्करा पुष्टिकारकम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

शर्करा से गणेशाम्बिका का स्नान करायें। पुनः शुद्ध स्नान।

पंचामृतस्नान –

पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सादेशे भवत्सरित्।। पंचामृतं यमानीतं पयोदधि घृतं मधुः। शर्करा च समायुक्त स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें।

।। गणेश पूजन में विशेष महाअभिषेक ।।

।। अथगणेशाथर्वशीर्षम् ।।

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम् अव दातारम्। अवाधातारम्। अवानूचानमवशिष्यम्। अव पश्चातात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणातात्। अवचोर्ध्वातात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो माम् पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमय स्त्वंब्रह्ममयः त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयो ऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्व जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलो-ऽनिलोनभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिंन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गाणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादीस्तदन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेणरुद्रम्। एतत्रेव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। स ꣳ हिता सन्धिः। सैषा गणेश विद्या। गणकं ऋषिः निचृगायत्री छन्दः।

गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। एक दन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुश-धारिणम्। रदञ्च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषक ध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानु-लिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवंजगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः। प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिव सुताय वरद मूर्त्तये नमः। एतदथर्वशीर्षयोऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्व विघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। सपञ्चमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवस कृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायम्प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति।

सर्वत्रा धीयानो ऽप विघ्नो भवति। धर्मार्थ काम मोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति। सहस्त्रावर्तनाद्यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्। अनेन यो गणपति मभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामन श्नजपति स विद्यावान्भवति॥

इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्।

न विभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति सयशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक सहस्रेणयजति स वच्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्य वर्चस्वी भवति। सूर्य ग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्धिौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापातात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात प्रमुच्यते सर्वविद्भवति। स सर्व विदभ्वति। य एवं वेद॥ इत्युपनिषत्॥

गणेश जी का अभिषेक जल दूर्वा लाजा मोदक आदि से यजन

करने से धन यश मनोइच्छित फल तथा विद्या बुद्धि आदि की प्राप्ति होती है। इससे मंत्र भी सिद्ध होते हैं विघ्न पाप दोष से मुक्त हो यजन करने वाला सम्पूर्ण विद्वान हो जाता है।

शुद्ध जल स्नान -

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रस।
तस्य भाजयते हनः तस्मा अरङ्ग मामव यस्य क्षयाय
जिन्वथ आपोजन यथा च नः॥

तीर्थ जल से शुद्ध स्नान करवायें।

यज्ञोपवीत -

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रंयज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयं।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण गज कर्णकः॥

गणेशाम्बिका को यज्ञोपवीत समर्पण करें।

वस्त्र -

ॐ युवासुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥
शीतोष्ण संत्राण लज्जायाः रक्षणं परम्।
देहलंकरणं वस्त्र मतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

गणेशाम्बिका को वस्त्र चढ़ायें।

उपवस्त्र -

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्मवरुथमासदत्स्वः
वासो अग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसोः॥
वस्त्र युग्मं मयादेव देवाङ्ग सदृश प्रभाम्।
भक्त्या दतं गृहाणेदं लम्बोदर हर प्रिय॥

युग्म वस्त्र गणेशाम्बिका को चढ़ाये।

गन्ध -

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनं स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद् मुच्यत॥
श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रति गृह्यताम्॥

गणेशाम्बिका को चन्दन चढ़ाये।

अक्षत -

ॐ अक्षनमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामतीयोजान्विद्र तेहरी॥
अक्षता श्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मयानिवेदिताः भक्ता गृहाण परमेश्वर॥

गणेशाम्बिका को अक्षत लगायें।

पुष्प -

ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अ श्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मया हृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेशाम्बिका को पुष्प चढ़ायें।

दूर्वांकुर :-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि
ऽएवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥
दूर्वांकुरान् सुहरितान् अमृतान् मगलप्रदान्।
आनितांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

गणेशाम्बिका को निम्न नाम मंत्रों से दूर्वा के अंकुर गन्ध लगाकर चढ़ायें।

ॐ गणाधिपाय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि,
ॐ उमा पुत्राय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि॥

ॐ अघनाशने नमः दूर्वांकुरान् सर्मपयामि।
ॐ विनायकाय नमः दूर्वांकरान् समर्पयामि।
ॐ ईश पुत्राय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।
ॐ सर्वसिद्धि प्रदायकाय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।
ॐ एकदन्ताय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।
ॐ इभवक्त्राय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।
ॐ मूषक वाहनाय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।
ॐ कुमार गुरुवे नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।
ॐ चतुर्थीशाय नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।
ॐ श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर -

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनाशो
वातप्रमियः पतयन्ति यहवाः।
घृतस्यधारा अरुषो न वाजी काष्ठा
भिन्दनूर्मिभिः पिन्वमानः॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

मंत्र से गणेशाम्बिका को सिन्दूर चढ़ायें।

परिमलद्रव्य -

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति वाहुं ज्यायां हेतिं परिवाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान् पुमान् पुमांसः परिपातु विश्वतः॥

नाना परिमलैः द्रव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अंवीर नामकं चूर्ण गन्ध चारु प्रतिगृह्यताम्॥

परिमल द्रव्य गणेशाम्बिका को चढ़ायें।

धूप -

ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तवि ᳪ शतिः।
ते ऽअग्नेऽ श्वमयुंजस्तेऽ अस्मिन् जवमादधुः॥

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तम।
आध्रेय सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।
गणेशाम्बिका को धूप दिखायें।

दीप -

अग्ने वेर्होत्रं वेर्दूत्यमवतां त्वां द्यावापृथिवी ऽअव त्वं द्यावा पृथिवी॥ स्विष्टकृद्देवेभ्यऽइन्द्र ऽआज्येन हविषा भूत्स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः॥

साज्यं वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यं तिमिरापह॥
गणेशाम्बिका को दीपक दिखायें।

नैवेद्य -

ॐ अन्नपते ऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिष ऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥
नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मेह्यचलां कुरु।
ईप्सिंत मे वरं देहि परत्र च परांगतिम्।

गणेश अम्बिका को नैवेद्य अर्पण कर एक आचमन जल अर्पण कर देवें।

दक्षिणा -

ॐअयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्यमनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानस स्त्रिष्टुव् ग्रैष्मि स्त्रिष्टुभः स्वारम्। स्वारादन्तर्यामो ऽन्तर्यामात्पंचदशः पंचदशात् बृहद् भरद्वाज ऽऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वयामनो गृह्णामि प्रजाभ्यः॥

हिरण्य-गर्भ गर्भस्थं हेमेवीजं विभावसो।
अनन्त पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
गणेशाम्बिका को दक्षिणा चढ़ावें।

ऋतुफल -

ॐयाः फलिनीर्या ऽ अफलाऽअपुष्पा या श्चपुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः॥

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवे जन्मनि जन्मनि।।

गणेशाम्बिका को ऋतुफल चढायें।

ताम्बूल -

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतोऽअंकंसपरि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा।।

पूंगीफल महादिव्यं नागबल्ली दलैर्युतम्
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिका को ताम्बूल देवें।

विशेषार्ध्य -

ॐ रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानां अभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपा सिन्धो पाषाणमातुरग्रज प्रभो।
वरदत्वं वरंदेहि वाच्छितार्थ फलप्रद।।
अपने सफलार्ध्ये सफलो मेऽस्तु सदा मम।।

गणेशाम्बिका को विशेषार्घ्य अर्पण करें।

प्रार्थना -

विघ्नेश्वरायवरदाय सुर प्रियाय।
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय।
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।१।।
भक्तार्ति नाशन पराय गणेश्वराय।
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय।
भक्त प्रसन्नवरदाय नमोनमस्ते।।२।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णु रूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय ते नमः।।३।।
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्त प्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।४।।

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥५॥
त्वां विघ्न शत्रुदलनेति च सुन्दरेति, भक्त प्रियेतिसुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च येस्तुवन्ति, तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥६॥
गणेश पूजनं कर्म यन्नूनं अधिक कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥७॥
अनया पूजया गणेशाम्बिका प्रीयेताम्॥ नमम॥

॥ इति गणेशाम्बिका पूजनम् ॥

॥ अथ कलश स्थापनम् ॥

हस्तमात्र चतुष्कोण ऊँचे स्थण्डिल पर ईशान कोण में कुंकम से भूमि पर अष्टदल कमल बनाकर सप्तधान्य बिछा कर जलपूरित ताम्र या मृण्मय (मिट्टी) कलश की स्थापना करें।

१. भूमि स्पर्श

ॐ महीद्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञंमिमिक्षताम्॥ पिपृतानो भरीमभिः॥

२. धान्य -

ॐ औषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्रह्मणस्त ꣳ राजन्पारया मसि॥

३. सप्तधान्य पर कलश स्थापनम् -

ॐ आजिध्रकलशं मह्या त्वां विशन्त्विन्दवः।
पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वो रुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥

इस मन्त्र से सप्तधान्य पर कलश स्थापना करें।

४. जलम् -

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥

इस मन्त्र से कलश में जल डालें।

५. गन्धम् -

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

से कलश में गन्ध डालें।

६. **सर्वौषधि** -

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बभ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च॥
इस मन्त्र से कलश में सर्वौषधि डालें।

७. **दूर्वा** -

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥
इस मन्त्र से दूर्वा डालें॥

८. **पञ्चपल्लव** -

ॐ अ श्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पुरुषम्॥
इससे पाँच वृक्षों के पत्ते डालें।

९. **पवित्रम्** -

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनः तच्छकेयम्॥
इससे कुश निर्मित पवित्र डालें।

१०. **सप्तमत्तिका** -

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म सप्रथाः॥
इससे सप्तमृत्तिका डालें।

११. **पूगीफलम्** -

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिः प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ ह सः॥
इस मन्त्र से कलश में सुपारी डालें।

१२. **पंच रत्नानि**

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे॥
इससे पाँच रत्नों को डालें।

१३. सुवर्ण या द्रव्य -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधारपृथिविं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

इससे दक्षिणा स्वरूप सुवर्ण या द्रव्य डालें।

१४. वस्त्रम् -

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसोः॥

इस मन्त्र से कलश के चारों और युग्म वस्त्र लपेट दें।

१५. पूर्णपात्रम् -

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो।

१६. नारीकेल -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि।
रूपमश्विनौ व्यातम्। इष्णनिषाण मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥

इस मन्त्र से लाल वस्त्र से लपेटे हुए नारियल को रखे।

वरुणस्यावाहनम् -

तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुश ँ समानः आयुः प्रमोषीः॥
कलशे वरुणं सांग सपरिवारं सायुधं
सशक्तिकम् आवाह्यामि स्थापयामि।
ॐअपाम्पतये वरुणाय नमः॥

ऐसा करके कलश पर देवताओं का आवाहन करें।

॥ अथ कलशाभिमन्त्रणम् ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥१॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपाः वसुंधरा।
अर्जुनीगोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥
कावेरी कृष्णवेणा च गंगा चैव महानदी॥२॥

तापीगोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलश स्थानि तानि वै॥३॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदाः नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥४॥
ॠग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥५॥
अत्र गायत्री सावित्रि शान्तिः पुष्टिकरी तथा
आयान्तु देव पूजार्थं दुरित क्षयकारकाः॥६॥

सभी देवताओं व नदियों का आवाहन कर कलश की प्रतिष्ठा करें-

ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य वृहस्पति र्यज्ञमिमं तंनो त्वरिष्टं यज्ञ ॐ समिमं दधातु। वि श्वेदेवा स इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

पञ्चोपचार से पूजन करे। इसके बाद प्रार्थना करें।

अथ प्रार्थना -

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥१॥
त्वतोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवा मरुद्गणाः॥३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥४॥
नागपाशधरः स्वर्णभूषणः पद्मिनी प्रियः।
वरुणोऽम्बुपतिः श्रीमान् श्वेतो मकरवाहनः॥५॥
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेताहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥६॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनिजीवनायक।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत्वं सन्निधोभव॥७॥

॥ इति कलश स्थापनम् ॥

।। अथ पुण्यावाचनम् ।।

संपूज्य गंधमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान स्वस्ति वाचयेत्।
धर्मकर्मणि मांगल्ये संग्रामे उद्भुतदर्शने।
प्रथमं शांति पात्रं त्याज्यपात्रं च भूमौ स्थापयेत्।।
यजमानः अवनिकृत जानुमण्डलः कमलमुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय आचार्य स्वदक्षिणेन पाणिना ताम्रकलशं यजमाना ऽञ्जलौधारयेत्।

यजमान दोनों घुटनों को जमीन पर टेक देवें, पश्चात कमल मुकुलाकर अंजलि करके उसमें कलश को रखें जिसका पूजन किया है।

निम्न मंत्र से सिर का स्पर्श करें - (स्वशिरसा)

ॐ त्रीणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन।

दक्षिण भुजा का स्पर्श करें -

ॐ त्रीणित आहुर्दिवि बंधनानि त्रीण्यप्सुत्रीण्यन्त समुद्रे
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रात आहुः परमं जनित्रम्।

वाम भुजा का स्पर्श करें।

ॐ त्रयादेवा एकादशत्रयस्त्रिंशाः सुराधसः।
बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सवितुः सर्वे देवा देवैरवन्तुमा।।

हृदय का स्पर्श करें

ॐ दीर्घानागानद्यो गिरयास्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुस्त्विति। भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण कहें -

तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

कलश को भूमि पर रखें।

फिर यजमान ब्राह्मणों के हाथों पर जल डालें -

(ब्राह्मणानां हस्ते सुप्रोक्षितमस्तु).

शिवा आपो भवन्तु ताः।। शिवा आपः सन्तु।

फिर यजमान ब्राह्मण को पुष्प देवें।

यजमान–

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः॥

यजमान कहें – **सौमनस्यमस्तु।**
बाह्मण बोले – **अस्तु सौमनस्यम्।**
यजमान ब्राह्मणों को अक्षत देवें।

यजमान –

अक्षताञ्चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदामम॥

याजमान कहें – **अक्षताः पान्तु।**
अक्षतं चारिष्टं चास्तु।
ब्राह्मण बोले – **अस्त्वक्षतमरिष्टं च।**
यजमान कहें – **गंधा पान्तु।**
ब्राह्मण बोले – **सौमाङ्गल्यं चास्तु**
यजमान बोले – **अक्षताः पान्तु।** (अक्षत देवें)
ब्राह्मण बोाले – **आयुष्यमस्तु।**
यजमान बोले – **पुष्पाणिपान्तु** (पुष्प देवें)
ब्राह्मण बोले – **सौश्रियमस्तु।**
यजमान बोले – **ताम्बूलानिपान्तु** (पान देवें)
ब्राह्मण बोले – **ऐश्वर्यमस्तु**
यजमान बोलो – **दक्षिणाः पान्तु** (ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें)
ब्राह्मण बोले –

आरोग्यमस्तु। दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिचास्तु।
श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं आरोग्यं चास्तु॥

यजमान बोले –

यत्कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादि कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं बह्वर्षि संमतं समनुज्ञातं

भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण बोले- **वाच्यताम्।**

यजमान बोले -

व्रत नियम तपः स्वाध्याय क्रतु दयादमदान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मण बोले- **समाहितमनसः स्मः।**

यजमान बोले- **प्रसीदन्तु भवन्तः।**

ब्राह्मण बोले- **प्रसन्नाः स्मः।**

ब्राह्मण दो पात्रों में जल स्थापित करें और निम्नमंत्रों का उच्चारण करें एवं अभिषेक करें।

प्रथमपात्र से -

शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, शिवमस्तु, शिवकर्मास्तु, कर्मसमृद्धिरस्तु, धर्मसमृद्धिरस्तु, वेदसमृद्धिरस्तु, शास्त्र समृद्धिरस्तु, पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु।

द्वितीयपात्र से -

अनिष्टनिरसनमस्तु, यत्पापं रोगमशुभऽकल्याणं तद्दूरे प्रतिहस्तुमस्तु।

पुनः प्रथम पात्र के जल से -

यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु, उत्तरोत्तरमहरहरभि वृद्धिरस्तु, उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्तां तिथी करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नादि देवताः प्रीयन्ताम्। दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयन्ताम्। अग्नि पुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। अरुन्धतिपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयन्ताम्। आदित्य पुरोगा सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयन्ताम। श्रद्धामेधेप्रीयेताम् भगवती

माहेश्वरी प्रीयन्ताम् भगवती ऋद्धिकरी प्रीयन्ताम् भगवती वृद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम् भगवती तुष्टीकरी प्रीयन्ताम् भगवन्तौ विघ्न विनायकौ प्रीयन्ताम्। सर्वाः कुलदेवता प्रीयन्ताम्। सर्वाग्राम देवता प्रीयन्ताम्। सर्वाइष्ट देवताः प्रीयन्ताम्।

पुनः द्वितीयपात्र से –

हस्ताश्च ब्रह्मद्विष। हताश्चपरिपन्थिनः। हताश्चविघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवंयान्तु। शाम्यंतु घोराणि, शाम्यन्तु पापानि शाम्यंत्वीतयः।

पुनः प्रथम पात्र से –

शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा ओषधय सन्तु। शिवा बनस्पतयः सन्तु। शिवा अथितयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः। पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।। शुक्राङ्गरक बुध बृहस्पति शनैश्चराहु केतु सोमसहिता आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम भगवान्नारायणः प्रीयन्ताम् भगवान पर्जन्यः प्रीयन्ताम् भगवान महासेनः प्रीयन्ताम्। पुनुरुवाक्ययायत् पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

प्रथमपात्र के जल से यजमानों पर अभिषेक करे द्वितीय पात्र का जल एकान्त में त्याग देवें।

यजमान कहें

ब्राह्म पुण्यमहर्यच्च सृष्टयुत्पादन कारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तुनः।।

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्वस्य सपरिवारस्य गृहे (पाठ/होमे) **पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोले – **पुण्याहम्– ३।**

ॐ पुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनिहिमा।।

यजमान बोले -

पृथिव्यामृद्धतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्ध गंधर्वैस्तकल्याणं ब्रुवन्तुनः॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे (पााठ/होमे) **कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण बोलें -

ॐ कल्याणं ३।

यथेमोवाचं कल्याणी मावदानी जनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्या ठं शुद्राय चार्याय च स्वायचारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिहभूया समयम्मेकामः समृद्ध्यता मुपमादो नमतु॥

यजमान बोले -

सारगस्यतु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धि ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणा मम् सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य (पाठे/होमे) **ऋद्धिं भवंतो ब्रुबन्तु॥**

ब्राह्मण बोलें -**ऋद्ध्यताम्-३**

सत्रस्यऽऋद्धिरस्य गन्मज्योतिरमृताऽअभूम्।
दिवं पृथिव्याऽ अद्ध्यारुहामाविदाम देवन्त्स्वज्योतिः

यजमान बोलें

स्वस्तिस्तु या ऽविनाशाख्या पुण्यं कल्याण वृद्धिदा।
बिनायक प्रिया नित्यतांतां स्वस्तिं ब्रुबन्तुनः॥

भो ब्राह्मणः मम सकुटुम्वस्य सपरिवारस्य गृहे (होमे प्रतिष्ठाकाले) **स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्त।**

ब्राह्माण बोलें - **आयुष्यमते स्वस्ति॥३॥**

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

यजमान बोले -

समुद्रमथनाज्जाता जगदानंदकारिका।
हरिप्रिया च मांगल्यतां श्रियं च ब्रुवन्तुनः॥

भो ब्राह्मणा मम कुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण बोले - **अस्तुश्री ३।**

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।

इष्णन्निषाण मुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽ इषाण।

फिर ब्राह्मण यजमान का तिलक करें।

मंत्रार्थाः सफला सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथाः।

शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

ब्राह्मण यजमानों का अभिषेक करें।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति पृथिवीशान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्ति वनस्प्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ँ शान्ति शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि॥

ॐ यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभयङ्कुरु। शन्नः कुरुप्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः॥

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः तस्मा ऽअंरगमाम वो यस्य छयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः॥

पुण्याहवाचन दक्षिणा संकल्प -

ॐ अद्यः कृतैतपुण्याहवाचन कर्मणः सांग्ता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति हिरण्यादि दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजेत्॥

॥ आचार्यादि वरणम् ॥

आचार्य को यजमान (कर्ता) उत्तर मुख वैठाकर चन्दन अक्षत पुष्प आदि से पूजन कर तथा दाहिने हाथ में जल तिल अक्षत एवं देयद्रव्य लेकर कर्ता संकल्प करें -

१. आचार्य वरण -

ॐ अद्यैत्यादि अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रोत्पन्न अमुक कप्रवरान्वितं शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनीय शाखाध्ययिन अमुकशर्माणं

ब्राह्मण विष्णादि देवतानां प्राण प्रातिष्ठा कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। इतियजमानः।

आचार्य कहे- **वृतोऽस्मिति।**

यजमान कहें -

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् आचार्योभव सुव्रत।।

२. ब्रह्मावरण -

अद्यैत्यादि० अस्मेिन कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैरमुक गोत्र अमुक शर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

ब्रह्मा कहे- **वृतोऽस्मिति।**

यजमान कहे -

यथाचतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वंमम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम।।

३. ऋत्विक्वरण -

अद्यैत्यादि० अस्मिन् कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैः अमुक गोत्र अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।

ब्राह्मण कहे - **वृतोऽस्मिति।**

यजमान कहे -

भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्वधर्म परायण!।
विततेमम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव
ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोतिदीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते।।

ऐसा सभी ब्राह्मण कहे।

यजमान के हाथ में कंकण बांधने का मंत्र -

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यँ शतनिकाय सुमनस्यमानाः।
तन्मऽ आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।

यजमान पत्नि के वामहाथ में कंकण बांधने का मंत्र-

तं पत्निभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वाहिरण्यैः।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽधि रोचने दिवः।।

॥ ॐकार देव पूजनम् ॥

ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयँ सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोःश्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

ॐ शिवाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

ॐकार स्थित ब्रह्माविष्णुरुद्रदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्प धूपदीप नैवेद्य दक्षिणां समर्पयामि। प्रार्थयेत् ॐकार विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।

॥ श्री पूजनम् ॥

ॐ श्रीतेश्चलक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम्।
इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण॥
ॐ श्री देव्यै नमः आवाहयामि, स्थापयामि पूजयामि।
गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य दक्षिणां समर्पयामि॥
ंया श्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः।
पापात्मनां कृत्तधियां हृदयेषु बुद्धिः॥ -
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा।
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

॥ स्वस्ति पूजनम् ॥

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
ॐ स्वस्तिकायैः नमःआवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।
गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यं, दक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थना –

आकाशं पतितं तोयं यथागच्छतु सागरः।
सर्व देव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति॥

॥ सप्तचिरंजी पूजनम् ॥

अश्वत्थामावलिर्व्यासो हनुमानं च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीवनः॥
सप्तैतान्संस्मरतेनित्यं मार्कण्डेयं तथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतंसाग्रमपमृत्यु विवर्जितः॥

॥ सप्त घृत मातृका पूजनम् ॥

श्रीश्च लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रजा सरस्वती।
मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताः घृतमारः॥

१. ॐ मनसः काम माकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यश॥
श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि, स्थापयामि।

२. ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि
रूप मश्विनौव्यातम्। इष्णन्निषाण मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥
ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि, स्थापयामि।

३. ॐ भद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशे महिदेवहितं यदायुः।
ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, स्थापयामि।

४. ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधा धाता ददातु मे स्वाहा॥
ॐ मैधायै नमः, मेधामावाहयामि, स्थापयामि।

५. ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, चक्षुषे स्वाहा।
श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥
ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, स्थापयामि।

६. ॐ आयङ्गौ पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥
ॐ प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि, स्थापयामि।

७. ॐ पावकाः न सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टुधियावसुः॥
ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वती मावाहयामि, स्थापयामि।
सप्तधृतमातृका देविभ्यो नमः। इत्यावाह्य प्रतिष्ठापयेत्
ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नो
त्वरिष्टं यज्ञ ॐ समिमं दधातु। विश्वेदेवा सइह मादयन्ता मो ३म्प्रतिष्ठ।
सप्तघृतमातृकायै नमः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

सम्पूज्य प्रार्थयेत -

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥
अनया पूजया सप्तधृतमातृका दैव्याः प्रीयन्ताम्।

॥ षोडश मातृका पूजन ॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकेमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मानः कुल देवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्चषोडशः॥

१. ॐ आयङ्गौ पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।
हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाह्याम्यहम्॥
गौर्य्यैनमःगौरीं आवाहयामि स्थापयामि॥

२. ॐ हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्राऽउदिथः सूर्यश्च।
आरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रो ऽसि वरुणोऽसि॥
पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्॥ पद्मायैनमः॥

३. निवेशनः सङ्गमनोवसूनां विश्वा रूपाऽभिचष्टे शचीभिः।
देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथी नाम्॥
दिब्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलंकारां शचीमावाहयाम्यहम्॥ शच्यैनमः॥

४. ॐ मेधां मे वरुणोददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।।
विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रवोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम।। मैधायैनमः।
५. ॐ सविता त्वा सवाना ꣳ सुवतामग्निर्गृहपतीना ꣳ सोमो वनस्पतीनाम्।
वृहस्पतिर्वाच इन्द्रो तेष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्म पतीनाम्।।
जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवी प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भा यज्ञमयीं सावित्री मावाहयाम्यहम्।। सावित्र्यै नमः।।
६. ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो वाणवां २ उत।।
अनेशन्नस्य या इषवः आभुरस्य निषङ्गधिः।।
सर्वास्त्रधारिणीं देवीं देवानामभय प्रदाम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजया मावाहयाम्यहम्।। विजयायै नमः।
७. ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रचिश्च कृणोति समनावगत्य।
इषुधिः सङ्का पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः।
सूरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाह्याम्यहम्।। जयायै नमः।
८. ॐ इन्द्र आसा नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देव सेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।
मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिः धनुर्धराम्।
आवाहयामि देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्।। देवसेनायै नमः।
९. ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः।
स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः।।
अग्रजः सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।। स्वधायै नमः।
१०. ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहा
अन्तरिक्षाय स्वाहा, वायवे स्वाहा, दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा।
हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्।। स्वाहायै नमः।

११. ॐ आपोऽ अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि।
दीक्षा तपसोस्तनूरसिं तां त्वा शिवा ॐ शम्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्।
आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोकपूजिताः।
सर्व कल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणा।। मातृभ्यो नमः।।
१२. ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु
च मे प्रभु च मे पूर्णंचमे पूर्णतंर च मे कुयवञ्च में ऽक्षितञ्च मे
ऽन्नञ्च में क्षुच्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम्।।
आवाहयामि लोकमातृः जयन्ती प्रमुखाः शुभाः।
नानाऽभीष्ट प्रदाःशान्ताः सर्वलोके हितावहाः। लोकमातृभ्योनमः।
१३. ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्जोतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।।
सर्वहर्षकरीं देवी भक्तानामभय प्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।। धृत्यै नमः।।
१४. ॐ अंगान्यात्मन् भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समाधात् सरस्वती।
इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः।।
पोषयन्ती जगत्सर्वं स्वदेह प्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैः जलैः रत्नैः पुष्टिमावाह्याम्यहम्।। पुष्ट्यै नमः।।
१५. ॐ जातावेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहातिवेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।
देवैरारधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम्।
प्रसाद सुमुखीं देवी तुष्टिमावाहयाम्यहम्। तुष्ट्यै नमः
१६. ॐ प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा। चक्षुषे स्वाहा
श्रोत्राय स्वहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।
पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नाना जाति कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।
आत्मनः कुलदेवतायै नमः।
ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं
तन्नो त्वरिष्टं यज्ञ ॐ समिमं दधातु।

विश्वेदेवास इह मादयन्तामो-३ म्प्रतिष्ठ॥
ॐ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्व मर्चायै मामहेति च कश्चन॥
श्री गणेशपूर्वक गौर्यादिषोडश मातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्॥
ॐ ब्रह्माणी कमलेन्दु सौम्यवदनां माहेश्वरी लीलया।
कौमारी रिपुदर्प नाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी॥
वाराही घनघोर घुरघुरमुखी चैन्द्रिच वज्रायुधा।
चामुण्डा गण नाथ रुद्र सहिता रक्षन्तु मां मातरः॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम। निर्विघ्नं सर्व कार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपः॥
अनया पूजया गणेशपूर्वक गौर्यादि षोडशामातरः प्रीयन्ताम्॥

॥ अष्ट वसु पूजनम् ॥

विनियोग -

वसोः पवित्रमिति मंत्रस्य प्रजपति ऋषिः सविता देवता जगति छन्दः वस्वावाहने पूजने विनियोगः।

आवाहन

ॐ वसोः पवित्रमसि शत धारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारं देवस्त्वा सवितापुनातु। वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

ॐ ध्रुवाय नमः॥१॥ ॐ धराय नमः॥२॥
ॐ सोमाय नमः॥३॥ ॐ आपाय नमः॥४॥
ॐ अनिलाय नमः॥५॥ ॐ अनलाय नमः॥६॥
ॐ प्रत्यूषायनमः॥७॥ ॐ प्रभाषाय नमः॥८॥

अष्ट वसुओं का पूजन गन्ध अक्षत पुष्प धूप, दीप नैवेद्य आदि से कर प्रार्थना करें -

दिव्य वस्त्रा दिव्य देहा दिव्यमाला विभूषिता।
वसवोष्टो महाभागाः वरदा सन्तु मे सदा॥

॥ संक्षिप्त नान्दी श्राद्ध ॥

नान्दी श्राद्ध में विश्वेदेवा के लिए कुशा पर गांठ देकर पत्तेपर रख देवे, दूसरे पत्ते पर माता पितामही प्रपितामही के निमित्त तीन कुशाओं पर गांठ देवें, तीसरे पत्ते पर पिता पितामह प्रपितामह के निमित चौथे पत्ते पर मातामही प्रमातामही बृद्धप्रमातामही तथा पांचवे पत्ते पर मातामह प्रमातामह बृद्ध प्रमातामह के पूजन हेतु कुशा पर गांठ लगाकर रख देवे।

संकल्प -

ॐ तत्सदद्य० मासोत्तमे ऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे अमुककर्मांगी भूतं अभ्युदयिक श्राद्धमहं करिष्ये।

ध्यान-

श्राद्धकाले गया ध्यात्वा ध्यात्वा देव गादाधरम्।
मनसा च पितृनध्यात्वा श्राद्धकर्मसमारभेत्॥

तिलश्राद्ध स्थल में छोड़े -

नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।
इंद श्राद्धं ऋषिकेश रक्षतो सर्वतोदिशि॥

पितृगायत्री स्मरण -

देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आवाहन -

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरो ऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।

पूजन -

ॐ सत्यवसु सञ्ज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ
ॐ भूर्भुवः स्वः पाद्यं स्वाहा अनामयं च वृद्धि।
ॐ अमुक गोत्राः मातृ पितामही प्रपितामह्य नान्दीमुख्याः
ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि।

ॐ अमुकगोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी मुखाः ॐ भूर्भवः स्वः इदंवः पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि। ॐ अमुक गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहा पत्निसहिताः नान्दी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इंद पाद्यं स्वाहा नामयं च वृद्धि।

ॐ श्री गणेशाम्बिके ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहा नामय च वृद्धिः।

इस प्रकार कह कर पत्तों के ऊपर रखी कुशाओं पर जल डालें, प्रत्येक कुशाओं पर गन्धाक्षत पुष्प भी डालें, दीपक दिखाये नैवेद्य एवं दक्षिणा भी चढायें।

युग्म ब्राह्मणों हेतु आमान्न संकल्प -

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्यन्तं दास्यमानमन्न यथाशक्ति सोपस्करं स्वाहा नामयं च वृद्धिः युग्म भोजन आमान्नं नैवेद्यं तन्निष्क्रयं दक्षिणां च दातुसमुत्सृजेत्।।

आशीष ग्रहण- यजमान पितरो से आशीर्वाद मांगे ब्राह्मण प्रतिवचन कहें-

गोत्रं नो वर्द्धताम् - वर्द्धताम् वो गोत्रम्।
दातारोऽभिवर्द्धन्ताम् - अभिवर्द्धन्ताम् वो दातारः।
वेदाश्चनोऽभिवर्द्धन्ताम् - अभिवर्द्धन्ताम् वो वेदाः।
सन्ततिऽभिवर्द्धन्ताम् - अभिवर्द्धन्ताम् वः सन्तति।
श्रद्धा च नो मा व्यगमत् - माव्यगमद्ध - श्रद्धाः।
बहुदेय च नो अस्तु - अस्तु वो बहुदेयम्।
अन्नं च नो बहुभवेत् - भवतु वो बहुअन्नम्।
अतिथीश्च लभेमहि - अतिथीं च लभध्वम्।
याचितारश्च नः सन्तु - सन्तु वो याचितारः।
एता आशिषः सत्याःसन्तु - संत्वेता सत्याः आशिषः।

प्रार्थना –

माता पितामही चैव　तथैव　प्रपितामही।
पिता　पितामहश्चैव　तथैव　प्रपितामहः॥
मातामहस्तत् पिता च प्रमातामहकादयः।
एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मंगलम्॥
अनेनः कर्मणः नान्दी मुखः देवताः प्रीयन्ताम् नमः॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनम् ॥

विनियोग –

आकृष्णेनेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरा ऋषिः
त्रिष्टुप्छन्द सूर्यो देवता सूर्यावाहने पूजने विनियोगः।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय　नमः।

सूर्य पूजनम –

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।
ॐ भूभुर्वः स्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण
भो सूर्य इहागच्छ, इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदोभव,
मम पूजां　गृहाण श्री सूर्याय नमः।

पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् –

ॐ जपाकुसुम संकाशं काश्यपेय महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मिदिवाकरम्।

विनियोग –

इमं देवा इति मंत्रस्य वरुण ऋषिः अग्निर्देवता
सोमावाहने पूजने विनियोग : ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।

चन्द्र पूजनम् –

ॐ इम्मदेवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते

जानराज्यायेन्द्रियसेन्द्रियाय। इममममुष्य पुत्रममुष्ये पुत्रमस्ये विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा। ॐ भूर्भुवः स्वः आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदोभव। मम पूजां गृहाण श्री सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि। पाद्यादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत् + दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्॥

विनियोग –

अग्निमूर्द्धा इति मंत्रस्य विरुपाङ्गिरस ऋषिः अग्निर्देवता भौमावाहने पूजने विनियोगः। ॐ क्रां क्री क्रौ सः भौमाय नमः।

भौम पूजनम् –

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिब्या अयम्। अपाँरेता ँ सिजिन्वति। ॐ भूर्भुवः स्वः भारद्वाज गोत्र रक्तवर्ण भौम इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदो भव मम पूजां गृहाण श्री भौमाय नमः।

भौममावाहयामि स्थापयामि पूजयामि, पाद्यादिभिः

सम्पूज्य प्रार्थयेत् धरणीगर्भ संभूतं

विद्युत्कान्ति समप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च तं मङ्गल प्रणमाम्यहम्॥

विनियोग –

उद्बुध्य इति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिषुप्छन्दः

बुधोदेवता बुधावाहने पूजने विनियोगः।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

बुध पूजनम् –

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथा गयं च। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत। ॐ भूर्भवः स्वः आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदोभव मम पूजां गृहाण श्री बुधाय नमः। बुधमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि, -पाद्यादिभिः सम्पूज्य

प्रार्थयेत् -प्रियङ्गु कलिका श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।

विनियोग -

बृहस्पतिइतिमंत्रस्य गृत्समद ऋषिः स्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता, बृहस्पत्यावाहने पूजने विनियोगः। ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।

गुरु पूजनम् -

ॐ बृहस्पते अतियदर्य्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्नेषु।
यद्दीयच्छवस ऋत प्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।
ॐ भूभुर्वः स्वः आंगिरस गोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पतिः इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदोभव मम पूजां गृहाण श्री बृहस्पतये नमः।
संपूज्य प्रार्थयेत- देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेश तं नमामि बृहस्पतिम्।।

विनियोग -

अन्नात्परिश्रुत इति मंत्रस्य प्रजापतिऋषिः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः जगतीछन्दः शुक्रावाहने पूजनेविनियोगः। ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

शुक्र पूजनम् -

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत क्षंत्र पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ॐ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।
ॐ भूभुर्वः स्वः भार्गवसगोत्र शुक्ल वर्ण भो शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदो भव मम पूजां गृहाण श्री शुक्राय नमः।
शुक्रमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि पाद्यादिभिः सम्पूज्य, प्रार्थयेत् -हेमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परम् गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं तं शुक्रं प्रणमाम्यहम्।

विनियोग -

शन्नो देविरितिमंत्रस्य दध्यंङाथर्वण ऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवता शन्यावाहने पूजने विनियोगः। ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

शनैश्चर पूजनम् -

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ भूभुर्वः स्वः काश्यप गोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदोभव मम पूजां गृहाण श्री शनैश्चराय नमः। शनैश्चर मावाहयामि स्थापयामि पूजयामि- पाद्यादिभिः।

सम्पूज्य प्रार्थयेत -

नीलाम्बुज समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।

विनियोग-

कयानाश्चित्र इतिमंत्रस्य वामदेव ऋषिः गायत्रीछन्दः अग्निर्देवता राहु आवाहने पूजने विनियोगः। ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौसः राहवे नमः।

राहु पूजनम्-

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कयाश्चिच्ष्ठयावृता। ॐ भूभुर्वः स्वः पैठीनस गोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदो भव मम पूजां गृहाण श्री राहवे नमः। राहुं आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि, पाद्यादिभिः

सम्पूज्य, प्रार्थयेत्-

अर्द्धकाय महावीर्य चन्द्रादित्य विमर्दनः।
सिंहिकागर्भ संभूतं तं राहु प्रणमाम्यहम्।

विनियोग -

केतुं कृण्वन्नितिमंत्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः गायत्रीछन्दः अन्तरिक्ष देवता केत्वावाहने पूजने विनियोग : ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

केतु पूजनम्-

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः। ॐ भूभुर्वः स्वः जैमिनिगौत्र धूम्रवर्ण भो केतो इहागच्छ इहतिष्ठ सुप्रतिष्ठ वरदोभव मम पूजां गृहाण श्री केतवे नमः। केतुमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि पाद्यादिभिः

सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

पलाशपुष्प संकाशं तारका ग्रहमस्तकम्।
रौद्रः रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।

नवग्रह प्रार्थना-

१. पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिसप्त तुरंगवाहनः।
दिवाकरो लोक गुरुः किरीट मयि प्रसादं विदधातु देवः॥

२. श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युति दण्डधरो द्विवाहुः।
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीट श्रेयांसि मह्यं विदधातु देवः॥

३. रक्ताम्बरो रक्त वपुः किरीट चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शुली सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः॥

४. पीताम्बरः पीतवपुः किरीट चतुर्भुजो दण्डधश्च हारी।
चर्मासिधृत्सोम सुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधोऽस्तु॥

५. पीताम्बरः पीतवपुः किरीट चतुर्भुजो दैवगुरू प्रशान्तः।
दधाति दण्डं च कमण्डलुञ्च तथाऽक्षसूत्रं वरदोऽस्तु मह्यम्।

६. श्वेताम्बर : श्वेत वपु किरीट चतुर्भुजो दैत्यगुरु प्रशान्तः।
तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डंच विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥

७. नीलद्युति शूलधरः किरीट गृध्र स्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यम वरदो मन्दगामी॥

८. नीलाम्बरो नील वपुः किरीट करालवक्त्रः करवालशूली।
चतुर्भुजश्चर्मधश्च्राहूः सिंहाधिरुढ़ो वरदोऽस्तु मह्यम्॥

९. धूमो द्विवाहुर्वरदो गदाभृत गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
किरीट केयूर विभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे केतुगणः प्रशान्तः॥

या निम्न प्रार्थना भी कर सकते हैं।

सूर्यः शौर्य मथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मगलं मङ्गलः। सद्बुद्धिञ्च बुधौ गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शंशनि॥ राहुर्वाहु बलं करोतु सततं केतुः कुलोस्योन्नतिम्। नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः॥ आयुश्च विद्या च तथा सुखंच धर्मार्थलाभौवहुपुत्रतांच शत्रुक्षयं राजसु पूज्यताच तुष्टा ग्रहाः क्षेम करा भवंतु॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्चश्च गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतव सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु॥
अनेन पूजनेन नव ग्रह देवता प्रियन्ताम् नमम:।

॥ अथ अधिदेवता आवाहनम् ॥

आवाहन स्थान -

वैसे तो अधिदेवता क्रमशः सूर्यादि नव ग्रहों के दक्ष पार्श्व व प्रत्यधि देवता क्रमशः ग्रहों के वाम भाग में स्थापित करते हैं परन्तु कहीं-कहीं मतभेद है सो दोनों ही विधान दे रहे हैं।

शिव -१ (सूर्य के दक्ष पार्श्व में)

ॐ त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शंभो इहागच्छ इह तिष्ठ

उमा- (चन्द्रमा के दक्ष या अग्निकोणे दिशि)

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विन्नौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण॥
ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छ इह तिष्ठा।

स्कंद-३ (भौम के दक्षिण भाग में या याम्य भाग में)

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्यपक्षा हरिणस्यबाहू उपस्तुत्यं महिजाततंतेअर्वन्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंद इहागच्छ इह तिष्ठ।

विष्णु-४ (बुध के दक्षिण भाग या पूर्व में)

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो धुवोऽसिवैष्णवमसि विष्ण वेत्वा॥ भूर्भुभुवः स्वः विष्णु इहाच्छइहतिष्ठ।

ब्रह्मा-५ (गुरु के दक्षिण पार्श्व में)

ॐ आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्ति। पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य

वीरो जायतान्निकामे निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवल्यो न औषधयः पच्यन्तां योग क्षेमो नः कल्पताम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ।

इन्द्र-६ (शुक्र के दक्ष पार्श्व या पूर्व में)

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमंपिबवृत्रहा शूर विद्वान।
जहि शत्रूँ2ऽरपमृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतोनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

यम-७ (शनि के दक्ष पार्श्व या पश्चिम में)

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सॐ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमः इहागच्छ इह तिष्ठ।

काल-८ (राहु के दक्ष पार्श्व में)

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽ उन्नयामि समापो ऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः काल इकहागच्छ इह तिष्ठ।

चित्रगुप्त- ९ (केतु के दक्ष पार्श्व में या नैर्ऋत्य भाग में)

ॐ चित्रावसो स्वस्तिते पारमशीय।

ॐ भूर्भूवः स्वः चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ।

॥ अथ प्रत्यधि देवतानामाआवाहनम् ॥

अग्नि -१ (सूर्य के वाम पार्श्व में या शिव के आगे)

ॐ सनः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनोभव। सचस्वानः स्वस्तये॥

ॐ भुर्भूवः स्वः अग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ।

आप-२ (चन्द्रमा के वाम पर्श्व या उमा नैऋत्य में)

ॐ अपोअद्यान्वचारिष ठं रसेन समसृक्ष्महि।
पयस्वानग्नऽआगमंतम्मास ठं सृजवर्चसा प्रजया च धनेन च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छ इह तिष्ठ।

धरा-३ (मंगल के वामपार्श्वे या स्कंद के वायुकोण में)

ॐ चिदसि तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद।

परिचिदसि तथा देवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद।
ॐ भूर्भुवः स्वः धरे इहागच्छ इह तिष्ठ।

विष्णु-४ (बुध के वाम पार्श्वे नारायण के उत्तर में)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्।
समूढमस्यपाꣳ सूरे स्वाहा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ।

इन्द्र-५ गुरु के वामपार्श्वे या ब्रह्मा के उत्तर में-

ॐ इन्द्र आसांनेता बृहस्पति दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः।
देवसेना नामभिभंजतीनां जयंतीनां मरुतोयं त्वग्रम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रइहा गच्छ इह तिष्ठ।

इन्द्राणी-६ (शुक्र के वामवार्श्वे या इन्द्र के पश्चिमे में)

ॐ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानो ऽभवन्यथेन्द्रं
दैवी र्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं
यजमानन्दैवीश्च। विशोमानुषीश्चानु वर्त्मानो भवंतु।
ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छ इहतिष्ठ।

प्रजापति-७ (शनि के वामापर्श्वे या यम के पश्चिम में)

ॐ प्रजापतेनत्व देतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिताव्यय ꣳ
स्याम पतयोरयीणा ꣳ स्वाहा। रुद्रयते क्रिविपरन्नाम तस्मिन्
हुतमस्येष्टमसि स्वाहा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ।

पन्नग-८ (राहु के वामपार्श्वे या काल के पश्चिम में)

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पन्नगा इहागाच्छ इह तिष्ठ।

ब्रह्मा-९ (केतु के वामपार्श्वे में या चित्रगुप्त के ईशान में)

ब्रह्मज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन ऽआवः सबुध्न्या
ऽउपमाऽस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मा इहागच्छ इह तिष्ठ।

पंच लोकपाल स्थापनम्

गणपति-१ (राहु के उत्तर में या सूर्य के वायव्य कोण में)

ॐ गणानां त्वा गणपति ठं ऽहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठं हवामहे। निधीनांत्वा निधिपति ठं हवामहे वसोमम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुव स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ।

दुर्गा-२ (शनि के उत्तर में या गुरु के उत्तर में)

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः। सनः परिषदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरित्याग्निः।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ।

वायु-३ (रवि के उत्तर में)

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथा सस्ते भिरागहि नियुत्वान्त्योमपीतये।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ।

अंतरिक्ष-४ (राहु के दक्षिण में या शनि के पश्चिम में)

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतातरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अंतरिक्ष इहागच्छ इहतिष्ठ।

अश्विन्य -५ (केतू के दक्षिण में या सूर्य के पूर्व में)

ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती तथा यज्ञं मिमक्षतम्।

ॐ भूर्भवः स्वः अश्विनादूहागच्छतम् इहागच्छ इह तिष्ठ।

॥ मण्डप प्रवेश ॥

यजमान आचार्य तथा ऋत्विजों के साथ मण्डप परिक्रमा करें पश्चिम द्वार से पञ्चाग देवताओं के साथ द्वार पर यज्ञ मण्डप भूमी की पूजा कर शंखघोष के साथ मण्डप प्रवेश करें। प्रवेश करते हुये यजमान से आचार्य द्वारपालों को प्रणाम करावे।

॥ रक्षा विधानम् ॥

यजमान के बांये हाथ में आचार्य पीली सरसों देवे यजमान उसे दायें हाथ से ढक देवे आचार्य निम्न श्लोको का उच्चारण करें -

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य-नमस्कृत्य पितामहम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥१॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्।
धरणी गर्भ सम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥२॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥३॥
शंखो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैवच।
गर्ग मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनि सत्तमम्॥४॥
वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम्।
व्यासं मुनि नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम्॥५॥
विद्याधिकाः ये मुनयः आचार्यांश्च तपोधनान्।
तान् सर्वान् प्रणम्माम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा॥६॥

जो पीली सरसों यजमान के बायें हाथ में आचार्य नें रखवायी थी उन्हें यजमान दायें हाथ से पूर्वादि दिशाओं में प्रक्षेपण करें आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करें-

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेयां गरुडध्वजः।
याम्यां रक्षतु वाराहो नार सिंहस्तु नैर्ऋते॥१॥
वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः।
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदैशान्यां तु गदाधरः॥२॥
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः।
एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः॥३॥
शंखो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैवच।
वामपारश्वे गदा रक्षे द्दक्षिणे तु सुदर्शनः॥४॥
उपेन्द्र पातु ब्रह्माणमाचार्य पातु वामन।
अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षतः॥५॥

कृष्णो रक्षतु सामानि ह्यथर्वं माधवस्तथा।
उपविष्टाश्चये विप्रास्तेऽनिरुद्धेन रक्षिताः॥६॥
यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षाताद्धरि॥७॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु सर्वत्रं यत्रस्थंतत्र गच्छतु॥८॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥९॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे॥१०॥
भूतप्रेत पिशाचाद्यास्त्वपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्मादव्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि धरामिमाम्॥११॥

रक्षा विधान के बेद मंत्रो का भी आचार्य उच्चारण करें -

ॐ रक्षोहणं व्वलगहनं वैष्णवी मिदमहंतंवलगमुत्कि रामियम्मेनिष्ट्योयमात्यो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मेसमानोयम समानो निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मेसबन्धुर्य्यम सबन्धुर्निचखानेदमहन्तं व्वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत् कृत्याङ्किरामि॥१॥
रक्षोहणो वो व्वलगहनः प्रोक्षामि व्वैष्णवान् रक्षोहणोवोव्वलगहनो ऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो व्वोव्वलगहनो ऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणोवां व्वलगहना ऽउपदधामिव्वैष्णवीरक्षोहणो वां व्वलगहनौ पर्य्यूहामि व्वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ॥२॥
रक्षसां भागो ऽसि निरस्तथ्ं रक्षइदमह थ्ं रक्षोऽभितिष्ठामि इदमहथ्ं रक्षोऽ वबाध ऽ इदमह थ्ं रक्षोऽधमन्तमोनयामि॥
घृतेनद्यावापृथिवीप्प्रोर्णुवाथां व्यायो व्वे स्तोका नामग्निराज्यस्य त्वेतु स्वाहा स्वाहा कृतेऽ ऊद्ध्र्वनभसं मारुतं गच्छतम्॥३॥
रक्षोहा विश्श्चचर्षीणिरभियोनि मयोहते। द्रोणेसधस्त्थ मासदत्॥

॥ इति रक्षा विधान ॥

॥ वास्तु पूजनम् ॥

यजमान अपनी पत्नि के साथ मण्डप के नैर्ऋत्य कोण में हस्तमात्र वेदी के पास आसन के ऊपर प्राङ्गमुख बैठकर आचमन प्राणायाम करे आचार्य यजमान से निम्न संकल्प करावें - **देशकालौ सङ्कीर्त्य- अस्मिन् कर्मणि कुण्डमण्डपादिषु हीनाधि काङ्गतादि वास्तुदोषसूचित सर्वारिष्ट निवर्हणार्थं अमुक देवता प्रतिष्ठायाः साङ्गता सिद्ध्यर्थं चतुषष्ठिपदे नैर्ऋत्य कोणे शिखिन्यादि वास्तुमण्डल देवता पूजनं करिष्ये।** वास्तु मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हेतु पुनः संकल्प- **देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माहं (सपत्निकोहं) अस्यां वास्तुमूर्तौ अवघातादि दोष परिहारार्थे अग्न्युतारणं देवतासानिध्यार्थं च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये।** स्वर्ण या रजतमयी वास्तुमूर्ति को पात्र में रख घृत लगालेवें फिर पंचामृत की धारा लगाकर निम्न मंत्र बोलें -

ॐ समुद्रस्यत्वा वकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥१॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥२॥ ॐ अपामिदं न्ययन ꣳ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते ऽ अस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥३॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिसे नमस्तेऽ अस्त्वर्चिर्षे अन्यास्तेऽ अस्मत्तपन्तु हेतय पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥४॥ ॐ प्राणदा आपानदा व्यानदावर्च्चोदाव्वरिवोदाः। अन्यांस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतेयः पावको ऽअस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥५॥

दूध पंचामृत धारा देकर वास्तुमूर्ति को वाम हाथ में रख दाहिनें हाथ से ढक देवें निम्न प्राण प्रतिष्ठा के मंत्र आचार्य कहे-

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्य वास्तु मूर्तेः प्राणा इह तिष्ठन्तु॥१॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हंसः सोऽहं अस्यवास्तु मूर्ते जीव इह स्थितः॥२॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हंसः सोऽहं अस्य वास्तु मूर्तेः वाङ्मनस्त्वक चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणि पादपायुपस्थानि इहागत्यं सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥३॥ अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेतीति कश्चन॥४॥ वास्तुपुरुष प्रतिष्ठितोवरदोभव। प्राण प्रतिष्ठित की हुई मूर्ति को वास्तु वेदी के ऊपर रख देवें वास्तु वेदी के आग्नेय कोण से प्रदक्षिणा पूर्वक चार शंकुओ को द्विगुणकृत सूत्र से वेष्टिकत कर किनारों पर रोप लेवे पुनः आग्नेय कोण से शंकु के पास **उडदभात (दध्योदन)** बलिदेवें -

आग्नेय कोण में- **ॐ अग्निभ्यो ऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम्॥१॥**

नेर्ऋत्य कोण में -

ॐ नैर्ऋत्याधिपति श्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥२॥

वायव्य कोण में-

ॐ नमो वै वायु रक्षेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥३॥

ईशान कोण में-

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥४॥

बलि देकर शंकुओं का गन्धाक्षतादि से पूजन कर वास्तु बेदि के ऊपर रेखाओं का पूजन कर लेवें -

पश्चिम से पूर्व -

ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥१॥ ॐयशोवत्यै नमः॥२॥
ॐ कान्तायै नमः॥ ३॥ ॐ प्रियायै नमः॥४॥
ॐ विमलायै नमः॥५॥ ॐ शिवायै नमः॥६।
ॐ सुभगायै नमः॥६॥ ॐ सुमत्यै नमः॥५॥
ॐ इडायै नमः॥ ९॥

दक्षिण से उत्तर -

ॐ धान्यायै नमः ।।१।। ॐ प्राणायै नमः।।२।।
ॐ विशालायै नमः।।३।। ॐ स्थिरायै नमः।।४।।
ॐ भद्रायै नमः ।।५।। ॐ जयायै नमः।।६।।
ॐ निशायै नमः।।७।। ॐ विरजायै नमः ।।८।।
ॐ विभवायै नमः।।

रेखाओं में रेखा देवताओं का पूजन गन्ध अक्षत आदि से कर देवें-

६४ वास्तुओं का आवाहन् एक मंत्र से-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। वास्तु पुरुषाय नमः।। वास्तु पुरुषं आवाहयामि।। स्थापयामि पूजयामि।।

।। ६४ वास्तुओं का आवाहन ।।

यजमान हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करें -

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहेवयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्बृधेरक्षिता पायुरब्धः स्वस्तये।। शिखिने नमः।। शिखिनमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

ॐ शंनोवातः पवता ॐ शंनस्तपतु सूर्य्यः। शंनः कनिक्रन्ददेवः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु।। प्रजन्याय नमः।। पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि।।२।।

ॐ मर्म्माणिते व्वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वाराजामृते नानुवस्ताम्।। उरोर्व्वरी यो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु।। जयन्ताय नमः।। जयन्तमावाहयामि स्थापयामि।।३।।

ॐ आयात्विन्द्रो वस ऽउपन इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः।। व्वबृधानस्तविषीर्य्यस्य पूर्विद्यौ क्षत्रमभि भूति पुष्यात्।। कुलिशायुधाय नमः।। कुलिशायुधमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

ॐ बण्णमहाँ ऽअसि सूर्य्य बडादित्य महाँ असि।। महस्ते सतो महिमा पनस्यऽतेद्धादेव महाँ ५ असि।। सूर्याय नमः।। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।।५।।

ॐ व्व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्॥ दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ सत्याय नमः॥ सत्यमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूद्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः॥ विशस्त्वा सर्व्वा व्वाच्छन्तु मां त्वदद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ भृशाय नमः॥ भृषमावाहयामि स्थापयामि॥७॥

ॐ यावङ्क्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती॥ तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥ आकाशाय नमः॥ आकाशमावाहयामि। स्थापयामि॥८॥

ॐ व्वायोये ते सहस्त्रिणोरथासस्ते भिरागहि॥ नियुत्वान्सोम पीतये॥ वायवे नमः॥ वायु मावाहयामि॥ स्थापयामि॥९॥

ॐ पूषन्तव्रते व्वयंनरिष्येम कदाचन॥ स्तोतारस्त ऽइह स्मसि॥ पूष्णे नमः॥ पूषणमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१०॥

ॐ तत्सूर्य्यस्य देवतत्वन्त न्नमहित्वं मद्ध्या कर्तोर्वितत ॐ सञ्जभार॥ यदेदयुक्त हरितः सधस्था दाद्रात्रीर्वा सस्तनुते सिमस्मै॥ वितथाय नमः॥ वितथमावाहयामि॥ स्थापयामि॥११॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया ऽअधूषत॥ अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा न विष्ठया मती यो जान्विन्द्रते हरी॥ गृहक्षताय नमः॥ गृहक्षतमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१२॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्र॥ यमाय नमः॥ यममावाहयामि। स्थापयामि॥१३॥

ॐ गन्धवर्वस्त्वाव्विश्वावसुः परिदधातु व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽइडितः॥ इन्द्रस्य बाहुरसिदक्षिणो व्विश्वयारिष्ट्यैयजमानस्य परिधिरस्य ग्निरिड ईडितः॥ मित्रा वरुणौ त्त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्म्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यग्निरिड इडितः॥ गन्धर्वाय नमः॥ गन्धर्वमावाहयामि॥ स्थापयामि॥ १४॥

ॐ सौरी बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवावश्वाविद्धौमीशार्दूलोव्वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वत्यै

शुकः पुरुषवाक्॥ भृङ्गराज मावाहयामि॥ स्थापयामि॥१५॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावत ऽआजगन्ध्या परस्याः॥ सृक ꣳ स ꣳ शाय पविमिन्द्रतिग्मं विशत्त्रून्ता ढिव्विमृधोनुदस्व॥ मृगाय नमः॥ मृगमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१६॥

ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि॥ उशन्नुशत ऽआवह पितृन्हविषे ऽ अत्तवे॥ पितृगणेभ्यो नमः॥ पितृगणान् आवाहयामि॥ स्थापयामि॥१७॥

ॐ द्वेव्विरूपे चरतः स्वर्त्थे ऽअन्त्यान्या व्वत्समुपधापयेते॥ हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो ऽ अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः दौवारिकाय नमः॥ दौवारिकमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१८॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ꣳ रुद्रा ऽउपश्श्रिताः॥ तेषा ꣳ सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि॥ सुग्रीवाय नमः॥ सुग्रीवमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१९॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेब्भ्यो व्व्रातपतिब्भ्य श्र्वो नमो नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च वो नमो नमो व्विरुपेब्भ्यो व्विश्वरूपेब्भ्यश्च वो नमो नमः॥ पुष्पदन्ताय नमः॥ पुष्पदन्त मावाहयामि॥ स्थापयामि॥२०॥

ॐ इम्ममे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय॥ त्वामवस्युराचके॥ वरुणाय नमः॥ वरुण मावाहयामि॥ स्थापयामि॥२१॥

ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनो दिन्द्रियाय॥ इमन्त ꣳ शुक्क्रम्मधुमन्त मिन्दु ꣳ सोम ꣳ राजानमिह भक्षयामि। असुराय नमः॥ असुरमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२२॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये॥ शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः॥ शेषाय नमः॥ शेषमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२३॥

ॐ एतत्ते रुद्रा ऽवसन्तेन परो मूजवतो ऽतीहि अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहि ꣳ सन्नः शिवोऽतीहि॥ पापाय नमः॥ पापमावाहयामि। स्थापयामि॥२४॥

ॐ द्रापे ऽ अन्धसस्पते दरिद्र नील लोहितआसां प्रजानां

मेषां पशूनाम्मा भेर्म्मा रोड्मोच नः किञ्चनाममत्॥ रोगाय नमः॥ रोगमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२५॥

ॐ अहिरिव भोगेः पर्य्येति बाहु ञ्ज्यायाहेतिं परिबाधमानः॥ हस्तग्घ्नो व्विश्वा व्वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सम्परि पातु व्विश्वतः॥ अहये नमः॥ अहिमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२६॥

ॐ अवतत्य धनुष्टव ँ सहस्त्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्य्य शल्याना म्मुखा शिवो नः सुमना भवः॥ मुख्याय नमः॥ मुख्यमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२७॥

ॐ इमा रुद्राय त वसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे व्विश्वं पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्नना तुरम्॥ भल्लाटाय नमः॥ भल्लाटमावाहयामि॥ स्थापयामि॥ २८॥

ॐसोम ँ राजानमव से ग्निमन्वारभामहे॥ आदित्यान् विष्णु ँ सूर्य्यं ब्रह्माणं च बृहस्पति ँ स्वाहा॥ ॐ सोमाय नमः॥ सोममावाहयामि॥ स्थापयामि॥२९॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु॥ ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्पेब्भ्यो नमः॥ सर्पेभ्यो नमः॥ सर्पान् मावाहयामिं स्थापयामि॥३०॥

ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्या ऽएत॥ मयि वः कामधरणं भूयात्॥ अदित्यै नमः॥ अदितिमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३१॥

ॐ अदितिर्द्यौरिदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्र :॥ व्यिश्वे देवा ऽअदितिः पञ्चजना अदितिर्ज्जातमदिति र्ज्जनित्वम्॥ दित्यै नमः॥ दितिमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३२॥

ॐ अपस्वग्नेसधिष्ठव सौषधीरनु रुध्यसे॥ गर्ब्भे स ञ्जायसे पुनः॥ अदभ्यो नमः॥ अप आवाहयामि॥ स्थापयामि॥३३॥

ॐ हस्त ऽ आधाय सविता बिब्भ्रदब्भिं ँहिरण्ययीम्। अग्नेर्ज्ज्योतिर्निचाय पृथिव्याऽअद्ध्या भरदानुष्टुभेन च्छन्दसाङ्गि रस्वत्॥ सावित्राय नमः॥ सावित्रमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३४॥

ॐ आषाढं युत्सु पृतनासु पप्रि ँ स्वर्षामप्सां ब्वृजनस्य

गोपाम्। भरेषुजा ꣳ सुक्षिति ꣳ सुश्रवसञ्जयन्तन्त्वामनुमदेम सोम।। जयाय नमः।। जयमावाहयामि।। स्थापयामि।।३५।।

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽ उतोत ऽइषवे नमः।। बाहुब्भ्यामुतते नमः।। रुद्राय नमः।। रुद्रमावाहयामि।। स्थापयामि।।३६।।

ॐ यदद्य सूर ऽउदिते नगा मित्रो ऽ अर्य्य मा।। सुवाति सविता भगः।। अर्य्यम्णे नमः।। अर्यमणमावाहयामि।। स्थापयामि।।३७।।

ॐ व्विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव।। यद्भद्रं तन्न ऽ आसुव।। सवित्रे नमः।। सवितारमावाहयामि।। स्थापयामि।।३८।।

ॐ व्विवस्वन्नादित्यैष तेसोमपीथस्तस्मिन्नमत्स्व।। श्रदस्मै नरो व्वचसे दधातन यदाशीद्रर्दा दम्पति व्याममश्नुतः।। पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधा व्विश्वाहारप एधते गृहे।।विवश्वते नमः।। विवस्वतमावाहयामि।। स्थापयामि।।३९।।

ॐ सबोधि सूरिर्म्मघवा व्वसुपते व्वसुदावन्।। युयोध्यस्म द्द्वेषा ꣳ सि विश्वकर्मणे स्वाहा।। विबुधाधिपाय नमः।। विबुधाधि पमावाहयामि।। स्थापयामि।।४०।।

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोवो देवस्य सानसि।। द्युम्नश्चित्र श्रवस्तमम्।। मित्रायनमः।। मित्रमावाहयामि।। स्थापयामि।।४१।।

ॐ नाशयित्रिबलासस्यार्श ऽउपचितामसि।। अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी।। राजयक्ष्मणे नमः।। राजयक्ष्माण मावाह्यामि।। स्थापयामि।।४२।।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी।। यच्छा नः शर्म्म स प्रथाः।। पृथ्वीधराय नमः।। पृथ्वीधरमावाहयामि।। स्थापयामि।।४३।।

ॐ आते व्वत्सो मनो यमत्पर माच्चित्सधस्थात्।। अग्ने त्वाङ्कामयागिरा।। आपवत्साय नमः।। आपवत्समावाहयामि।। स्थापयामि।।४४।।

ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्तात् द्विसीमतः सुरुचोव्वे न

ऽआव:।। स बुध्न्याऽउपमा ऽ अस्य विष्ठाः सत श्च योनिमसतश्च व्विवः।। ब्रह्मणे नमः।। ब्रह्माणमावाहयामि।। स्थापयामि।। ४५।।

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो ऽ अनमीवो भवानः यस्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भवद्विपदे शंचतुष्पदे।। वास्तोष्पतये नमः।। वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि।।४६।।

ॐ यन्ते देवी निर्ऋतिरावबन्ध पाशङ्ग्री वास्वविचृत्यम्।। तन्तेव्विष्याम्यायुषोनमध्यादथैतम्पितुमद्धि प्प्रसूतः।। नमो भूत्यैये दंचकार।। चरक्यै नमः।। चरकीमावाहयामि।। स्थापयामि।।४७।।

ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शन्त्रेताये कल्पिनन्द्वापरायाधि कल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुम्मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गावीकृन्तन्तं भिक्षमाण ऽ उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने शैलगम्।। विदार्यै नमः।। विदारी-मावाहयामी।। स्थापयामि।।४८।।

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशांजात्रवो ऽदित्यै भसज्जी मूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीततानभ ऽ उदर्येण चक्रवाकौमत स्नाभ्यन्दि वंव्वृक्का भ्याङ्गिरीन्नप्लाशिभिरुपलान्प्लीन्नहनावा-ल्मीकान्क्लोम भिग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्ति हृदान्कुभिभ्या ॐ समुद्रमुदरेण व्वैश्वानरं भस्मना।। पूतनायै नमः।। पूतना-मावाहयामि।। स्थापयामि।।४९।।

ॐ यस्यास्ते घोर ऽ आसजुहोम्येषाम्बन्धा नामवसर्ज्जनाय।। यान्त्वाजनो भूमिरिति प्प्रमन्दते निर्ऋतिन्त्वाहम्परिवेद विश्वतः।। पापराक्षस्यै नमः।। पापराक्षसीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५०।।

ॐ यदद्यसूरऽउदिते नागामित्रोऽअर्यमा। सुवाति सविता भगः।। अर्य्यम्णे नमः ''अर्यमणामावाहयामि स्थापयामि।।५१।।

ॐ यदक्रन्दः प्रथम ञ्जायमान ऽ उद्यन्तसमुद्रादत वा पुरीषात्।। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य वाहू ऽ उपस्तुत्यम्महि जातन्ते ऽअर्वन्।। स्कन्दाय नमः।। स्कन्दमावाहयामि।। स्थापयामि।।५२।।

ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा। प्प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा ग्घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृताय स्वाहा स ँ हानाय स्वाहो पस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ जृम्बकाय नमः॥ जृम्बकमावाहयामि॥ स्थापयामि॥ ५३॥

ॐ का स्विदासीत्पूर्व्वचित्तिः कि ँ स्विदासीद् बृहद्वयः॥ कास्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदा सीत्पिशङ्गिला॥ पिलिपिच्छाय नमः॥ पिलिपिच्छमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५४॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामि शक्रं पुरहूत मिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ इन्द्राय नमः॥ इन्द्रमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५५॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा ँ सिप्रिमुमुग्ध्यस्मत्॥ अग्नये नमः॥ अग्निंमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५६॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे॥ यमाय नमः॥ यममावाहयामि॥ स्थापयामि॥५७॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्या मन्विहितस्करस्य॥ अन्न्यमस्मदिच्छ्र सातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ निर्ऋतये नमः॥ निर्ऋतिमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५८॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः॥ अहेडमानो व्वरुणे हबोध्युरुश ँ समान ऽआयुः प्रमोषीः॥ वरुणाय नमः॥ वरुणमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५९॥

ॐआ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरूपयाहि यज्ञम्॥ व्वायोऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ वायवे नमः॥ वायुमावाहयामि॥ स्थापयामि॥६०॥

ॐ व्वयं ॐ सोमव्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।। प्रजावन्तः सचेमहि।। सोमाय नमः।। सोममावाहयामि।। स्थापयामि।।६१।।

ॐ तमीशानं जगतस्त स्थुषस्प्पतिन्धियज्जिन्नवमवसे हूमहे व्वयम्।। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृध रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ईशानाय नमः।। ईशानमावाहयामि।। स्थापयामि।।६२।।

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः।। यः स ॐ सते स्तुवते धायि पज्र ऽ इन्द्रज्जेष्ठा ऽ अस्माँ।। अवन्तु देवाः।। ब्रह्मणे नमः।। ब्रह्माणमावाहयामि।। स्थापयामि।।६३।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरानिवेशनि।। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।। अनन्ताय नमः।।। अनन्तमावाहयामि।। स्थापयामि।।६४।।

प्रतिष्ठापन -

ॐ एतं ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहु बृहस्पतये ब्रह्मणे।
तेन यज्ञपतिं तेन मामव।।

वास्तुओं का आवाहन तथा गन्धाक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य आदि से पूजन कर वास्तु देवताओं को पायस बलि समर्पण कर देवें-

बलिदान -

ॐ नाना पक्वान्न संयुक्तं नाना गन्ध समन्वितम्।
बलिं गृहाण देवेश वास्तुदोष हरो भव।।

प्रार्थना -

वास्तुदेव नमस्ते ऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहे धन धान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।१।।
नमस्ते वास्तु देवेश सर्वदोष हरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे।।२।।
देवेश वास्तु पुरुष सर्व विघ्न विदारण।
शान्ति कुरु सुखं देहि यज्ञे ऽस्मिन्मम सर्वदा।।३।।
मंत्र हीनं क्रियाहीनं भक्ति श्रद्धा विवर्जितम्।।
यत् पूजितं मयावास्तो परिपूर्ण तदस्तु मे।।४।।

।। षोडष स्तम्भ पूजनम् ।।

१. अन्तर ईशान में पहले वरुण कलश पूजन करे ब्रह्मा स्तंभ (कदली) पूजन करने का मंत्र व विनियोग-

ब्रह्म यज्ञानमिति मंत्रस्य गौतम ऋषिस्त्रिष्टुप्
छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने विनियोगः।।

आवाहन- **एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहेश हंसाधिरूढ़ त्रिदशैकवंद्य।**
श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बु हस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पूजन-**ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। स्थूणनागमात्रिकाय ब्रह्म दैवत संज्ञकस्तम्भाय नमः पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।।**

पूजन कर प्रार्थना-कृष्णाम्बरा जिनधरपद्मासन चतुर्भुज।
जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव।।

ॐ सावित्र्यै नमः। ब्राह्म्यै नमः। गङ्गायै नमः।। पूजन कर स्तम्भ छूकर नागमात्रिकाओ का पूजन- **ॐ ऊर्ध्वऊषुण ऊतये तिष्ठाः देवो न सविता। ऊर्ध्वोवाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाद्‌यदि्भर्विह्वयामहे। स्तम्भ शिरसि नागमात्रे नमः सम्पूज्य।।**

पूजन कर शाखा बांध दें- **ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः।।** पुनः प्रार्थना कर दें-**ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। वनस्पतिसमुद्‌भूतो निर्मितो विश्वकर्मणाः। स्थिरो भवात्ररक्षार्थं यावत्कार्य समाप्तये।।**

२. विष्णुस्तंभपूजन-**अन्तराग्नेये इदं विष्णुरितिमेधा तिथिर्ऋषि गायत्री छन्दो विष्णु देवता विष्ण्वावाहने विनियोगः।।** (कलश पूजन सब स्तंभो में करें)

आवाहन- **एह्येहि नारायण दिव्यमूर्ते सर्वामरैरर्चितपादपदम्।**
शुभा शुभानन्द शुचामधीश गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पूजन-**ॐ इदं विष्णुविचक्रमेत्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा॥ विष्णवे नमः** पूजन कर प्रार्थना-

देव देव जगन्नाथ विष्णोयज्ञपते विभो।
पाहि दुःखाम्बुधेरस्मान् भक्तानुग्रह कारक॥

ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ ऊर्ध्वऊषुण ऊतये० से यावत्कार्य समाप्तये॥ तक पूरे मंत्र बोलें।

३. रुद्रस्तंभपूजन-**नैर्ऋत्ये नमस्तइति परमेष्ठी ऋषिर्गायत्री छन्दो रुद्रो देवता रुद्रावाहने विनियोगः॥**

आवाहन-**एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभादिरूढ। देवाधि देवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥**

पूजन-ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः॥ पूजन कर प्रार्थना-

पंचवक्त्र वृषारुढ़ त्रिलोचन सदाशिव।
चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्ति करोभव॥

ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ गौर्ये नमः। ॐ शोभनायै नमः॥ पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से यावत कार्य समाप्तये तक पूरे मंत्र बोलें॥

४. इन्द्र पूजन-**वायव्यै त्रातारमिति गर्ग ऋषि त्रिष्टुप छन्दः इन्द्रो देवता इन्द्रावाहने विनियोगः॥**

आवाहन-एह्येहिवृत्रघ्नगजाधिरूढ सहस्त्रनेत्र त्रिदशैकवन्द्य। शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

पूजन-**ॐ त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूर मिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः॥**

इन्द्र का पूजन कर के प्रार्थना-

देवराज गजारुढ़ पुरंदरशतक्रतौ।
वज्रहस्त महावाहौ वांछितार्थप्रदोभवः॥

ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः॥

पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कार्य समाप्तये** तक पूरे मंत्र बोले॥

५. सूर्य पूजन- **बहिरीशाने चित्रमिति कुत्स ऋषि विराट छन्दः सूर्योदेवता सूर्यावाहने विनियोगः।।**

आवाहन-**एह्येहि सप्ताश्व सहस्त्रभानौ सिन्दूरवर्ण प्रतिमावभास! । छायापते सूर्य दिनेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।**

पूजन-**ॐ चित्रं देवानां मुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।**

पूजन कर प्रार्थना-**पद्महस्तरथारूढ पद्मासन सुमङ्गल। क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोस्तु ते।।**

ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः। ॐ भूत्यै नमः।। पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये** तक पूरे मंत्र बोलें।

६.-**गणेश पूजन-ईशान पूर्वयोर्मध्ये गणानान्त्वेति प्रजापतिर्ऋषि यजुश्च्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने विनियोगः।।**

आवाहन- **एह्येहि हेरम्ब महेश पुत्र समस्त विघ्नोघविनाश दक्षः। मांगल्यपूजा प्रथमं प्रधानगृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।**

पूजन कर प्रार्थना- **लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय। अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।**

ॐ विघ्न हारिण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।। पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म** समाप्तये तक बोलें।।

७- अनन्त पूजन- **पूर्वाग्नयोर्मध्ये नमोस्त्विति देव श्रवाऋषि त्रिष्टुप छन्दो अनन्तो देवता अनन्ता वाहने विनियोगः।।**

आवाहन-एह्येहि नागेन्द्र धरामरेश नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान। अनन्तयक्षोरगलोकसधैर्गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पूजन-**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योः ये केच पृथिवीमनुये अन्तरिक्षे येदिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। अनन्ताय नमः।**

पूजन कर प्रार्थना-**आशीविष समोपेत नागकन्या विराजित। पाहि यज्ञमिमं देव फणासप्तकमण्डित।।**

ॐ अधरायै नमः। ॐ पद्मायै नमः। ॐ महापद्मायै नमः।।

पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये।** तक बोलें।

८. स्कन्द पूजन-**बाह्याग्नेये यदक्रन्द इति भार्गवजमदग्निदीर्घतमस ऋषि त्रिष्टुप छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दा वाहने विनियोगः॥**

आवाहन-**एह्येहि गौरीसुत देवदेवषट्कृत्तिकारक्षित देह यष्टे। मयूरवाह प्रणतार्तिहारिन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥**

पूजन-**ॐ यद क्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन् समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्यबाहू उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्॥ स्कन्दाय नमः॥** पूजन कर प्रार्थना-**मयूरवाहन स्कन्द गौरीसुत षडानन। कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे।**

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ पश्चिम संध्यायै नमः।

पूजन कर पुनः **ऊर्ध्वऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म** समाप्तये। तक बोले।

९. यम पूजन-**आग्नेय दक्षिणयोर्मध्ये यमायत्वेतिदध्यगाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो यमो देवता यमावाहने विनियोगः॥**

आवाहन-एह्येहिवैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते। विशालवक्षः स्थलरुद्ररूप गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते॥

पूजन- **ॐ यमायत्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्यास ॐ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि॥ यमाय नमः॥** पूजन कर प्रार्थना-

धर्मराज महाकाय दण्डहस्त वर प्रद।
रक्तेक्षण महाबाहो पाहियज्ञं नमोस्तुते॥

ॐ पूर्व संध्यायै नमः। ॐ क्रूरायै नमः। ॐ नियन्त्र्यै नमः॥ पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये॥** तक बोले॥

१०. वायुपूजन-**दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये वायुरिति वशिष्ठऋषि त्रिष्टुप छन्दो वायु देवता वाय्यावाहने विनियोगः॥**

आवाहन-एह्येहिवायो मम रक्षणाय मृगाधिरूढ़ः सहसिद्ध संघैः। प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

पूजन–**ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञं शिवो नियुद्भि शिवाभिः। वायवे नमः॥**
पूजन कर प्रार्थना –

नमोधरणि पृष्ठस्थ ध्वजधारिन् समीरण।
पाहियज्ञमिमं देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

ॐ तीव्रायै नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ वायव्यै नमः॥ पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये।** तक बोलें।

११. सोम पूजन–**नैर्ॠत्ये सोममिति बन्धु ॠषिर्गायत्रीछन्दः सोमो देवता सोमावाहने विनियोगः॥**

आवाहन–**एह्येहिसोमा ध्वर देवदेव विधत्स्व रक्षां भगणेनसार्धम्। सर्वोषधीभीः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।**

पूजन– **ॐ सोम ँ राजा नमवसेऽग्नि मन्वार भामहे आदित्यान् विष्णु ँ सूर्य ब्रह्माण च बृहस्पति ँ स्वाहा॥ सोमायनमः॥**

प्रार्थना– **क्षीरार्णव समुद्भूतं द्विजराज सुधाकर।**
सोम त्वं सोम्य भावेन ग्रहपीणां निराकुरु॥

ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ अमृतकलायै नमः। ॐ विजयायै नमः॥
पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये० से यावत्कर्म समाप्तये।** तक बोले॥

१२. वरुण पूजन–**पश्चिमनैर्ॠत्यमध्ये इमं मे वरुणेति वत्सॠषिर्बृहतीछन्दो वरुणो देवता वरुणावाहने विनियोगः॥**

आवाहन–

एह्येहि यादो गणवारि धीशं प्रजन्य देवप्सरसा गणेन।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमाना गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

पूजन–**ॐ इम मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय त्वाम वस्युराचके। वरुणाय नमः।** पूजन कर प्रार्थना–

शंखस्फटिक वर्णाभश्वेतहाराम्बरा वृत।
पाशहस्त महाबाहो वरुण त्वं दयां कुरु॥

ॐ वारुण्यै नमः। ॐ बार्हस्पत्यै नमः। ॐ पाशधारिण्यै नमः॥

पूजन कर पुनः-**ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये** तक बोले-

१३. वसुपूजन-**पश्चिम वायव्य मध्ये सुगाव इति वशिष्ठ ऋषिर्गायत्री छन्दो वसुर्देवता वस्वावाहने विनियोगः॥**

आवाहन-**एह्येहि देवेश्वर दिव्यदेह वसो प्रसन्नात्म दृगष्ट मूर्ते। ममास्य यागस्य सुरक्षणार्थं गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते॥**

पूजन-**ॐ सुगावो देवाः सदना ऽअकर्म्मय आजग्मेद ॐ सर्वनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवि ॐ ष्यस्मै धत्त वसवो वसूनि स्वाहा। वसवे नमः॥** पूजन कर प्रार्थना-

दिव्य वस्त्राष्टमूर्त्ते त्वं दिव्य देह धर प्रभो॥
पाहि यज्ञ मिमं देव वरदं त्वां नमाम्यहम्॥

ॐ विनितायै नमः। ॐ गरिमायै नमः। सम्भूत्यै नमः॥ पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये** तक बोलें।

१४. कुबेर पूजन-**वायव्ये सोमोधेनुमिति गौतम ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो धनदो देवता धनदावाहने विनियोगः॥**

आवाहन- **एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशाल वेताल पिशाच संघैः।**
ममाध्वरं पाहि कुवेरदेव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

पूजन-**ॐ सोमो धेनुॐ सोमोअर्वन्तमाशु ॐ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्य ॐ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै। धनदाय नमः॥** पूजन कर प्रार्थना-

दिव्य देह धनाध्यक्ष पीतहाराम्बरावृत।
उत्तरेश महाबाहो वांच्छितार्थ प्रदोभव॥

ॐ आदित्यै नमः। ॐ सिनीवाल्यै नमः। ॐ लघिमायै नमः। पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये** तक बोले।

१५. बृहस्पति पूजन-**उत्तरवायव्य मध्ये बृहस्पत इति गृत्समद ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो बृहस्पति देवता बृहस्पत्या वाहने विनियोगः॥**

आवाहन-**एह्येहि देवेन्द्र गुरो मखेशं बृहस्पते यज्ञपते सुयागे।**

रक्षार्थमंत्रोपविशानुकंपिन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पूजन-

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हा द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दी दयच्छवस ऋत प्रजात् तदस्मांसुद्रविणं धेहि चित्रम्।। बृहस्पतये नमः।।

प्रार्थना- **देवाचार्य यथा शक्त्या पूजितोसिमयामुदा।**
क्रूरग्रहोपशान्ति त्वं कुरु नित्यं नमोस्तु ते।।

ॐ पौर्णमास्यै नमः। ॐ वेदमात्रे नमः। सन्नत्यै नमः पूजन- कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये** तक बोलें।

१६. विश्वकर्मा पूजन-

उत्तरेशानयोर्मध्ये विश्वकर्मन्निति शास ऋषि त्रिष्टुछन्दो विश्वकर्मा देवता विश्वकर्मावाहने विनियोगः।।

आवाहन-

एह्येहि शिल्पीश्वर विश्वकर्मन् मूर्त्यादिनिर्माण करैक मुख्य।
दोर्दण्ड संसाधित विश्वकर्मन् गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

पूजन-**ॐ विश्वकर्मन् हविषां वर्धनेन त्रातारमिन्द्रम कृणोरवध्यम् तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा सत्।। विश्वकर्मण्यै नमः।।**

पूजन कर प्रार्थना-

विश्वकर्मन् प्रसीदत्वं शिल्पशास्त्र विशारद।
दण्डपाणै महाबाहौ तेजोमूर्ति धर प्रभो।।

ॐ वास्तु देवतायै नमः। ॐ वैश्वकर्मण्यै नमः। ॐ शारदायै नमः। पूजन कर पुनः **ऊर्ध्व ऊषुण ऊतये०** से **यावत्कर्म समाप्तये।** तक बोले।।

।। योगिनी पूजनम् ।।

आग्नेय कोण में वेदी को लाल वस्त्र से ढक कर उसके ऊपर नौ रेखाऐं पूर्व से पश्चिम की ओर तथा नौ-रेखायें दक्षिण से उत्तर की ओर देवें जो चौसठ कोष्ट बनेंगे उसके ऊपर कलश स्थापित कर योगिनी का पूजन किया जाता है योगिनी पूजन के लिये आचार्य यजमान से संकल्प करावे -

देशकालौ स्मृत्वा अस्मिन् कर्मणि सर्वारिष्ट निवार्णार्थं अमुक देवता प्रतिष्ठायाः साङ्गता सिद्ध्यर्थ महाकाली महालक्ष्मी-महासरस्वती सहितानां चतुः षष्ठियोगिनीनां पूजनं करिष्ये॥

संकल्प कर योगिनी प्रतिमा का अग्न्युत्तारण निम्न मंत्र से करें-

अग्न्युत्तारण

ॐ अश्मन्नूर्ज पर्वते शिश्रियाणामद्भ्य ऽओषधीभ्यो वनस्पतिभ्योऽअधि सम्भृतं पयः॥ तां न ऽइषमूर्जं धत्त मरुतः स ᳪ रराणा ऽ अश्मँस्ते क्षुन् मयि तऽ ऊर्ग्यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥

योगिनी प्रतिमा का अग्न्युत्तारण कर गन्धक्षतादि से पूजन कर वेदी के ऊपर स्थापित कर देवें तत्पश्चात् महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती का आवाहन करें-

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन॥
ससस्त्यश्वकः सुभाद्रिकाङ्काम्पीलपासिनीम्॥
ॐ श्रीश्चते लक्ष्मी श्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमाश्विनौव्यात्तम्॥
इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्म ऽ इषाण॥२॥
ॐ पावकानकः सरस्वती वाजेभिर्व्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टुधियावसुः ॥३॥

महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती का पूजन (श्री सूक्त) से कर लेवें। तत्पश्चात चौसठ योगिनियों का पूजन करें।

योगिनी आवाहन -

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्र मूर्तये॥ चतुः षष्ठि योगिनी देवेभ्यो नमः॥ नाम मंत्र से आवाहन -

ॐ तमीशानं जगत स्तस्थुषस्प्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहेव्वयम्॥ पूषानो यथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ गजाननायै नमः॥ गजाननामावाहयामि॥ स्थापयामि॥

ॐ आब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइष व्योऽति व्याधि महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढान ड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्य्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषध यः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। सिंहमुख्यै नमः।। सिहमुखी मावाहयामि।। स्थापयामि।।२।।

ॐ महाँ२ऽइन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु।। हन्तु पाप्मानं य्योऽमान्द्वेष्टि।। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्रीय त्वा।। गृध्रास्यायै नमः।गृध्रास्या मावाहयामि।। स्थापयामि।।३।।

ॐ सद्योजातोव्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम भवत्पुरोगाः।। अस्य होतुः प्रदिश्यृ तस्यवीचि स्वाहा कृत ॐ हविरदन्तु देवाः।। काकतुण्डिकायै नमः।। काकतुण्डिकामावाहयामि।। स्थापयामि।।४।।

ॐआदित्यङ्ग भर्म्पयसासमङ्धिसहस्त्रस्यप्रतिमांव्विश्वरूपम्।। परिवृङ्धिहरसामाभिम ॐ स्त्थाः शतायुषङ्कृणुहि च्चीयमानः।। उष्ट्रग्रीवायै नमः।। उष्ट्रग्रीवामावाहयामि।। स्थापयामि।।५।।

ॐ स्वर्णधर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्ज्योतिः स्वाहा स्वर्णसूर्य्यः स्वाहा। हयग्रीवायै नमः हयग्रीवामावाहयामि।। स्थापयामि।।६।।

ॐ सत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे विश्व श्च मे महच्चमे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातश्च मे जनिष्यमाणश्च मे सूक्तश्च मे सुकृतश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। वाराह्यै नमः।। वाराहीमावाहयामि।। स्थापयामि।।७।।

ॐ भार्यैदार्व्वाहारम्प्रभायाऽ अग्न्ये धम्ब्रध्नस्यव्विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठ्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्प्रकरितार ॐ सर्वेभ्यो लोकेब्भ्यऽउपसेक्तारमव ऽ ऋत्यैव्वधा-योपमन्थितारम्मेधायव्वासः पल्पूलीम्प्रकामायरजयित्रीम्।। शरभाननायै नमः।। शरभान नामावाहयामि।। स्थापयामि।।८।।

ॐ जिह्वामे भदद्रं व्वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड्भामः।। मोदाः प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मे सहः।। उलूकिकायै नमः।। उलूकिकामावाहयामि।। स्थापयामि।।९।।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्रप्पोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहा स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा बिजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृताय स्वाहाऽस ँ हानाय स्वाहोपस्स्थिताय स्वाहाऽ यनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा।। शिवारावायै नमः।। शिवारावामावाहयामि।। स्थापयामि।।१०।।

ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मे ऽर्क्कश्च मे सूर्य्यश्च मे प्प्राणश्चश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्क्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। मयूरायै नमः।। मयूरामावाहयामि।। स्थापयामि।।११।।

ॐ पूषन्तवव्व्रतेव्वयन्नरिष्येम कदाचन।। स्तोतारस्यऽइहस्मसि।। विकटाननायै नमः।। विकटाननामावाहयामि।। स्थापयामि।।१२।।

ॐ व्वेद्याव्वेदिःसमाप्यते बर्हिषावर्हिरिन्द्रयम्।। यूपेन यूप ऽ आप्यतेप्प्रणीतोऽ अग्निरग्निना। अष्टवक्त्रायै नमः।। अष्टवक्त्रा-मावाहयामि।। स्थापयामि।।१३।।

ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणोव्वाजस्य शतिनस्प्पतिः।। मूर्द्धाकवीरयीणाम्।। कोटराक्ष्यै नमः।। कोटराक्षीमावाहयामि।। स्थापयामि।।१४।।

ॐ इमम्मे व्वरुणश्श्रुधी हवमद्या च मृडय।। त्वामवस्युराच के।। कुब्जायै नमः।। कुब्जामावाहयामि।। स्थापयामि।।१५।।

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे।। देवस्त्वा सविता मद्ध्वा नक्तु पृथिव्याः स ँ स्पृशस्प्पाहि।। अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि।। विकटलोचनायै नमः।। विकटलोचनामावाहयामि।। स्थापयामि।।१६।।

ॐ यमेन दत्तं त्रितऽएनमायुनगिन्द्रऽएनं प्रथमोऽ अध्य तिष्टत्॥ गन्धर्वोऽअस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं व्वसवोनिरतष्ट॥ शुष्कोदर्यै नमः॥ शुष्कोदरीमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१७॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसि॥ द्युम्नश्चित्र-श्रवस्तमम्॥ ललजिह्वायै नमः॥ ललजिह्वामावाहयामि॥ स्थापयामि॥१८॥

ॐ अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षंन्दृ ᳪ हब्रह्मवनित्वाक्षत्रवनि सजातवन्युपदधामिभ्रातृव्यस्यव्वधाय॥ धर्त्रमसि दिवं दृᳪ व्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामिभ्रातृव्यस्यवधाय। विश्वाभ्यस्त्वा शाभ्य ऽ उपदधामिचितस्थोर्ध्व चितोभृगूणामङ्गिरसान्त पसातप्यध्वम्॥ श्वदंष्ट्रायै नमः॥ श्वदंष्ट्रामावाहयामि॥ स्थापयामि॥१९॥

ॐ भगप्प्रणेतर्भग सत्यराधोभगे मान्धियमुदवाददन्नः॥ भगप्प्रनोजनयगोभिरश्वैर्भगप्प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम॥ वानराननायै नमः॥ वानराननामावाहयामि॥ स्थापयामि॥२०॥

ॐ सुपर्णोसि गरुत्माँस्त्रिवृतेशिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्द्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम ऽआत्मा छन्दा ᳪ स्यङ्गानि यजू ᳪ षिनाम सामते तनूर्व्वाम देव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णो ऽसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पत॥ ऋक्षाक्ष्यै नमः ऋक्षाक्षिवाहयामि स्थापयामि॥२१॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वध ायिभ्यः स्वधा नमः प्रतिपामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः॥ अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्। केकराक्ष्यै नमः॥ केकराक्षीमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२२॥

ॐ यातेरुद्रशिवातनूरधोरा पापकाशिनी। तयानस्तन्वा सन्तमयागिरिसन्ताभिचाकशीहि॥ बृहत्तुण्डायै नमः॥ बृहत्तुण्डा-मावाहयामि स्थापयामि॥२३॥

ॐ व्वरुणः प्राविता भुवन्मित्त्रोव्विश्वाभिरूतिर्भिः॥ करतान्नः सुराधसः॥ सुरप्रियायै नमः॥ सुरप्रियामावाहयामि॥ स्थापयामि॥२४॥

ॐ ह ꣳ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोताव्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्॥ नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत्॥ कपालहस्तायै नमः॥ कपालहस्तामावाहयामि॥ स्थापयामि॥२५॥

ॐ सुसन्दृशन्त्वाव्वयमघवन्वन्द्विषीमहि॥ प्रनूनम्मपूर्ण बन्धु रस्तुतोया सिव्वशी २ऽ अनुयोजान्विन्द्र ते हरी॥ रक्ताक्ष्यै नमः॥ रक्ताक्षीमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२६॥

ॐ प्रतिपदसिप्प्रतिपदे त्वा नुपदस्यनुपदेत्वा सम्पदसि सम्पदेत्वातेजो सि तेजसे त्वा॥ शुषक्यै नमः॥ शुष्कीमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२७॥

ॐ देवीरापोऽ अपान्नपाद्योव ऽऊर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान मदन्तिमः॥ तन्देवेभ्यो देवत्रादत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा॥ श्येन्यै नमः॥ शेनीमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२८॥

ॐ देवीरापोऽअपान्न पाद्योवऽऊर्मिर्हविष्य ऽइन्द्रियावान्न-मदिन्तमः। तन्देवेभ्यो देवत्रादत्त शुक्रपेब्भ्यो येषाम्भागस्थ स्वाहा॥ कपोतिकायै नमः॥ कपोतिकामावाहयामि॥ स्थापयामि॥२९॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम ऽइषाण सर्व्वलोकम्म ऽइषाण। पाशहस्तायै नमः॥ पाशहस्तामावाहयामि॥ स्थापयामि॥३०॥

ॐ भुवो यज्ञस्य रजस श्चनेता यत्रानियुद्भिः सचसेशिवाभिः॥ दिवि मूर्द्धानन्दधिषेस्वर्षांजिह्वामग्ने च कृषेहव्यवाहम्॥ दण्डहस्तायै नमः॥ दण्डहस्तामावाहयामि॥ स्थापयामि॥३१॥

ॐ कदाचनस्तरीरसिनेन्द्रसश्चसिदाशुषे॥ उपोपेन्नुमघवन्नभूयऽ इन्नुतेदानन्देवस्यपृच्यते॥ प्रचण्डायै नमः॥ प्रचण्डामावाहयामि॥ स्थापयामि॥३२॥

ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः॥ स्थिरैरङ्गैः स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायु॥ चण्डविक्रमायै नमः॥ चण्डविक्रमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३३॥

ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवोवः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय

कर्मण ऽआप्यायद्ध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मामावस्तेन ऽईशतमाघश ँ ध्रुवा ऽअस्मिग्गोपतौस्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि।। शिशुघ्न्यै नमः।। शिशुघ्नि मावाहयामि।। स्थापयामि।।३४।।

ॐ देवीद्यावापृथिवीमखस्य वामद्यशिरोराद्ध्यासन्देवयजने पृथिव्याः।। मखायत्वा मखस्यत्वाशीर्ष्णे।। पापहन्त्र्यै नमः।। पापहन्त्रीमावाहयामि।। स्थापयामि।।३५।।

ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव।। यद्भद्रन्तन्न आसुव।। काल्यै नमः।। कालीमावाहयामि।। स्थापयामि।। ३६।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते नस्येत्या मन्विहितस्करस्य।। अन्यमस्मदिच्छसात ऽइत्या नमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। रुधिर पायिन्यै नमः।। रुधिरपायिनीमावाहयामि।। स्थापयामि।।३७।।

ॐ अग्नि श्चमऽआपश्चमे व्वीरुध श्चमओषधय श्चमे कृष्टपच्या श्चमे कृष्टपच्या मे ग्राम्याश्च में पशवऽआरण्याश्चमे व्वित्तञ्च मे वित्तिश्चमे भूतश्च मे भूतिञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। वसाधयायै नमः।। वसाधयामावाहयामि।। स्थापयामि।।३८।।

ॐ वह्वी नाम्पिताबहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमना वगत्य।। इषुधिः शङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठेनिद्धोजयतिप्रसूतः।। गर्भ भक्षायै नमः।। गर्भमक्षामावाहयामि।। स्थापयामि।।३९।।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः।। बाहुभ्या मुतते नमः।। शवहस्तायै नमः।। शवहस्ता मावाहयामि।। स्थापयामि।।४०।।

ॐ ऋतं श्चमे मृत श्चमेऽयक्ष्म श्चमे नामयश्च मे जीवातु श्चमे दीर्घायुत्व श्चमे नमित्रञ्च मे भयञ्च मे सुखञ्चमे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। आन्त्रमालिन्यै नमः।। आन्त्रमालिनीमावाहयामि।। स्थापयामि।।४१।।

ॐ ते आचरन्तिसमनेवयोषामातेव पुत्रम्बिभृतामुपस्स्थे।। अपशत्रूँन्विध्यता ँ सम्बिदाने ऽ आर्क्त्नि इमेविस्फुरन्ति ऽअमित्रान्।। स्थूलकेश्यै नमः।। स्थूल के शीमावाहयामि।। स्थापयामि।।४२।।

ॐ वेद्यावेदिः समाप्यते बर्हिषाबर्हिरिन्द्रियम्।। यूपेनयूपऽ आप्यतेप्रीणीतो ऽअग्निरग्निना। बृहत्कुक्ष्यै नमः।। बृहत्कुक्षीमावाहयामि।। स्थापयामि।।४३।।

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्व्वाजिनीवति।। यज्ञम्वष्टु धियावसुः।। सर्पास्यायै नमः।। सर्पास्यामावाहयामि।। स्थापयामि।। ४४।।

ॐ अस्कन्नमद्यदेवेभ्यऽआज्य ँ सम्भ्रियासमङ्घ्रिणाविष्णो मात्वावक्रमिषंव्वसुमतिमग्नेतेच्छायामुपस्त्थेषं विष्णो स्त्था नमसीत ऽ इन्द्रोव्वीर्य्यमकृणोदूर्द्ध्वोऽवद ऽआस्त्थात्।। प्रेतवाहिन्यै नमः।। प्रेतवाहिनीमावाहयामि।। स्थापयामि।।४५।।

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोश्वारथे भिः सहवाजयन्तः।। अवक्रामन्तः प्प्रपदैरमित्त्रान्क्षिणन्तिशत्रूँ रनपव्ययन्तः।। दन्तशूककरायै नमः।। दन्तशूककरामावाहयामि।। स्थापयामि।।४६।।

ॐ महीद्यौः पृथिवीचन ऽइमं यज्ञम्मिमिक्षताम्।। पिपृतान्नौभरीमभिः।। क्रौञ्चै नमः।। क्रौञ्चीमावाहयामि।। स्थापयामि।।४७।।

ॐ उपयामगृहीतोऽ सिसावित्रोऽसिचनोधाश्चनोधा ऽअसिचनो मयिधेहि।। जिन्वयज्ञञ्जिन्वयज्ञपतिम्भगाय देवायत्वा-सवित्रे।। मृगशीर्षायै नमः।। मृगशीर्षामावाहयामि।। स्थापयामि।।४८।।

ॐ आप्यायस्वसमेतुतेव्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम्।। भवावाजस्य सङ्गथे।। बृषवाहिन्यै नमः।। वृषवाहिनामावाहयामि।। स्थापयामि।।४९।।

ॐ कार्षिरसिसमुद्द्रस्यत्वाक्षित्या ऽउन्नयामि।। समापोऽअद्भिरग्मत समोसधीभिरोषधीः। व्यात्तास्यायै नमः।। व्यात्तास्यामावाहयामि।। स्थापयामि।। ५०।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।। उर्व्वारुक मिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुतः।। धूमविश्वासायै नमः।। धूमविश्वासमावाहयामि।। स्थापयामि।।५१।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन।। ससस्त्यश्वकः

सुभद्रिकाङ्कांपीलवासिनीम्।। व्योमेकचरणोर्ध्वद्दशे नमः।। व्योमेकचरणोर्ध्वद्दशमावाहयामि।। स्थापयामि।।५२।।

ॐ विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि।। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। तापिन्यै नमः।। तापिनीमावाहयामि।। स्थापयामि।। ५३।।

ॐ ब्राह्मणमद्य विव्देयम्पितृमन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेय ॐ सुधातुदक्षिणम्।। अस्मद्राताादेवत्राागच्छत प्रदातारमाविशत।। शोषणीदृष्ट्यै नमः।। शोषणीदृष्टिमावाहयामि।। स्थापयामि।।५४।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनू भिव्वर्यशेमहिदेवहितं यदायुः।। कोटर्यै नमः।। कोटरीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५५।।

ॐ एकाचमेतिस्त्र तिस्त्रश्चमेपञ्चचमेपञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचम ऽएकादशचमे त्रयोदश चमे त्रयोदशचमे प ञ्चदशचमे प ञ्चदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचम ऽएकवि ॐ शति श्चम एकवि ॐ शति श्चमे त्रयोवि ॐ शतिश्चमत्रयोवि ॐ शतिश्चमे प ञ्चवि ॐ शति श्चमे प ञ्चवि ॐ शतिश्चमे सप्तवि ॐ शतिश्चमे सप्तवि ॐ शति श्चमे नववि ॐ शतिश्चमे नववि ॐ शतिश्चमे ऽएकत्रि ॐ शच्चम एकत्रि ॐ शच्चमे त्रयस्त्रि ॐ शच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्।। स्थूलनासिकायै नमः।। स्थूलनासिकामावाहयामि।। स्थापयामि।।५६।।

ॐ ब्रह्माणिमेमतयःश ॐ सुतासः शुष्म ऽइयर्तिप्रभृतो मे ऽअद्द्रिः। आशासते प्रतिहर्य्यन्त्युक्थेमाहरीव्वहतस्तानो ऽअच्छ।। विधुत्प्रभायै नमः।। विद्युत्प्रभामावाहयामि।। स्थापयामि।। ५७।।

ॐ असङ्ख्यातासहस्त्राणियेरुद्द्रा ऽअधिभूम्याम्।। तेषा ॐ सहस्त्र योजनेवधन्वानि तन्मसि।। बलाकास्यायै नमः।। बलाकास्यामावाहयामि।। स्थापयामि।।५८।।

ॐ अहिरिव भोगेः पर्य्येतिबाहु ञ्यायाहेतिम्परिबाधमानः।। हस्तग्ध्नो व्विश्वाव्वयुनानि व्विद्वान्पूमान्पुमा ॐ सम्परिपातु व्विश्वतः।। मार्जार्यै नमः।। मार्जारीमावाहयामि।। स्थापयामि।। ५९।।

ॐतिस्रस्त्रेधासरस्वत्यश्विनाभारतीडा।। तीव्रंपरिस्रुता-सोममिन्द्राय सुखुवुर्मदम्।। कटपूतनायै नमः।। कटपूतनामावाहयामि।। स्थापयामि।।६०।।

ॐ सरस्वतीयोन्याङ्गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति।। अपा ᳪ रसेन व्वरुणो न साम्नेन्द्र ᳪ श्रियैजनयन्नप्सुराजा।। अट्टाट्टहासायै नमः।। अट्टाट्टहासामावाहयामि।। स्थापयामि।।६१।। ॐ इदंव्विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम् समूढ़मस्य पा ᳪ सुरे स्वाहा।। कामाक्ष्यै नमः।। कामाक्षीमावाहयामि।। स्थापयामि।।६२।।

ॐ वृष्ण ऽ ऊर्म्मिरसिराष्ट्रदाराष्ट्रम्मेदेहिस्वाहा वृष्ण ऽऊर्मिर सिराष्ट्र दाराष्ट्र मुष्मैदेहिव्वृषसे नोऽसिराष्ट्र दाराष्ट्रम्मेदेहि स्वाहा व्वृषसेनोऽसिराष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मैदेहि।। मृगाक्ष्यै नमः।। मृगाक्षीमावाहयामि।। स्थापयामि।।६३।।

ॐ मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परापत ऽआजगन्थापरस्याः।। सृक ᳪ स ᳪ शायपविमिन्द्रतिग्मंव्विशत्रून्ताव मृधोनुदस्व।। मृगलोचनायै नमः।। मृगलोचनामावाहयामि।। स्थापयामि।।६४।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्जस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तन्नो त्वरिष्ठं यज्ञ ᳪ समिमंदधातु।। विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ आचार्य चौसठ योगिनीयों का पूजन षोऽशोपचार से करवा कर प्रार्थना करें -

प्रार्थना-

ॐ सम्पूजिता मयादेव्यो योगिन्य सगणाः शुभा।
मम यज्ञन्तु निर्विघ्नं कुर्वन्तु गण क्षेत्र पैः।।

।। इति योगिनी पूजनम् ।।

।। ग्रहपूजन ।।

ईशानकोण में ग्रहवेदी के ऊपर रक्त वस्त्र फैलाकर नौ कोष्टो में नवग्रह का पूजन कर लेवें, नवग्रह पूजन (चौकी पूजन प्रकरण) षोडशोपचार से कर लेवें।

॥ सर्वतोभद्र मण्डल देवता पूजनम् ॥

यजमान से सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं का पूजन करवानें के लिये आचार्य दायें हाथ में अक्षत पुष्प, तिल, जल एवं द्रव्य रखवाकर संकल्प करावें-

संकल्प -

देशकालौ संकीर्त्य अमुक यज्ञ (प्रतिष्ठा) कर्मणि महावेद्यां सर्वतोभद्रमण्डले ब्रह्मादि देवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

यजमान से आचार्य संकल्प करवा भद्र के ऊपर निम्न देवेताओं का आवाहन स्थापन करावे-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः॥ सबुध्न्या ऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च सोनिमसतश्च विवः॥ ब्रह्मणे नमः॥ ब्रह्माणमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१॥

ॐ व्वय ँ सोमे व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि॥ सोमाय नमः॥ सोममावाहयामि॥ स्थापयामि॥२॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्॥ पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥। ईशानाय नमः॥ ईशानमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्॥ ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ इन्द्राय नमः॥ इन्द्रमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य॥ त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष ँ रक्षमाणस्तव व्रते॥ अग्नये नमः॥ अग्निमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे॥ यमाय नमः॥ यममावाहयामि॥ स्थापयामि॥६॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य॥ अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ निर्ऋतये नमः निर्ऋति मावाहयामि॥ स्थापयामि॥७॥

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः।। अहेडमानोव्वरुणे ह बोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः।। वरुणाय नमः।। वरुणमावाहयामि।। स्थापयामि।।८।।

ॐ आनो नियुद्भिः शतिनी भीरुध्व ँ सहस्त्रिणो भिरूपयाहि यज्ञम्।। व्वायोऽअस्मिन्तसवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। वायवे नमः।। वायुमावाहयामि।। स्थापयामि।।९।।

ॐ सुगा वो देवाः सदनाऽअकर्मयऽआजग्मेद ँ सवनं जुषाणाः।। भरमाणा वहमाना हवी ँष्यषमे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा।। अष्ट वसुभ्यो नमः।। अष्टवसुनावाहयामि।। स्थापयामि।।१०।।

ॐ रुद्राः स ँ सृज्य पृथिवीं बृहज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्त्र ऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते।। एकादशरुद्रेभ्यो नमः।। एकादशरुद्रानावाहयामि।। स्थापयामि।।११।।

ॐ यज्ञोदेवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।। आवोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ँ हो श्चिद्यावरिवोवित्तरा-सत् ।। द्वादशादित्योभ्यो नमः।। द्वादशादित्यानावाहयामि।। स्थापयामि।।१२।।

ॐ अश्विना तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वतीवीर्यम्।। वचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। अश्विभ्यां नमः।। अश्विनौमावाहयामि।। स्थापयामि।।१३।।

ॐ विश्वेदेवासऽ आगत शृणुता मऽइम् ँ हवम्।। एदं बर्हिर्निषीदत।। उपयामगृहीतोऽसि वि श्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य ऽएष ते योनिर्वि श्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः।। सपैतृक विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।। सपैतृक विश्वान्देवानावाहयामि।। स्थापयामि।।१४।।

ॐ अभित्यन्देव ँ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव ँ रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्।। ऊर्ध्वायस्यामतिऽर्भा ऽ अदिद्युत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत।। सुक्रतुः कृपा स्वः प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वा ऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनु प्राणिहि।। सप्तयक्षेभ्यो नमः।। सप्तययक्षानावाहयामि।। स्थापयामि।।१५।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।। ये ऽअन्तरिक्षे

ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। अष्टकुल नागेभ्यो नमः।। अष्टकुलनागानावाहयामि।। स्थापयामि।।१६।।

ॐ ऋताषाड ऋतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोप्सर सोमुदो नाम।। स न ऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा व्वाट्ताभ्यः स्वाहा।। गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः।। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि।। स्थापयामि।।१७।।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽ उपस्त्युतं महि जातं तेऽ अर्वन्।। स्कन्दाय नमः।। स्कन्दमावाहयामि।। स्थापयामि।।१८।।

ॐ आशुः शिशानो बृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।। संक्रन्दनो ऽ निमिष ऽएकवीरः शत ॐ सेना अजयत्साकमिन्द्रः।। नंदीश्वराय नमः।। नन्दीश्वरमावाहयामि।। स्थापयामि।।१९।।

ॐ यत्तेगात्रादग्निना पच्यमानादभिः शूलयं निहतस्या-वधावति।। मातद्भूम्यामाश्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु।। शूलाय नमः।। शूलमावाहयामि।। स्थापयामि।।२०।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि।। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। महाकालाय नमः।। महाकालमावाहयामि।। स्थापयामि।।२१।।

ॐ शुक्रज्ज्योति श्च चित्रज्ज्योति श्च सत्यज्ज्योति श्च ज्योतिष्माँ श्च।। शुक्रश्च ऽ ऋतपाश्चत्यॐहाः।। दक्षादिभ्यो नमः।। दक्षादिमावाह्यामि।। स्थापयामि।।२२।।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन।। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पील वासिनीम्।। दुर्गायै नमः।। दुर्गामावाहयामि।। स्थापयामि।।२३।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम्।। समूढमस्यपा ॐ सुरे स्वाहा।। विष्णवे नमः।। विष्णुमावाहयामि।। स्थापयामि।।२४।।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरो मीमदन्तपितरो ऽतीतृप्तन्तम् पितरः पितरः सुन्धद्ध्वम्।। स्वधायै नमः।। स्वधामावाहयामि।। स्थापयामि।।२५।।

ॐ परं मृत्यो ऽअनु परेहि पन्था यस्तेऽ अन्य ऽइतरो देवयानात्॥ चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा ँ रीरिषो मोत वीरान्॥ मृत्युरोगेभ्यो नमः॥ मृत्युरोगानावाहयामि॥ स्थापयामि॥२६॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ गणपतये नमः॥ गणपतिमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२७॥

ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे॥ गर्भे सन् जायसे पुनः॥ अद्भ्यो नमः॥ अपः आवाहयामि॥ स्थापयामि॥२८॥

ॐ मरुतो यस्य हिक्षये पाथा दिवोव्विमहसः॥ ससुगोपातमोजनः॥ मरुद्भ्यो नमः॥ मरुतः आवाहयामि॥ स्थापयामि॥२९॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि॥ यच्छानः शर्म्म सप्रथाः॥ पृथिव्यैनमैः॥ पृथ्वीमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३०॥

ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः॥ सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥ गंगानदीभ्यो नमः॥ गंगानदीः आवाहयामि॥ स्थापयामि॥३१॥

ॐ समुद्रो ऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि मावहि स्वाहा॥ मारुतोऽसि मरुतांगणः शम्भूर्मयोभूरभि मां वाहि स्वाहा॥ वस्यूरसि दुवस्वाञ्छुम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा॥ सप्त सागरेभ्यो नमः॥ सप्तसागरानमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३२॥

ॐ परि त्वा गिर्वणो गिर ऽइमा भवन्तु वि श्वतः॥ वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः॥ मेरवे नमः॥ मेरुमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३३॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ गदायै नमः॥ गदामावाहयामि॥ स्थापयामि॥ ३४॥

ॐ त्रि ७ँ सद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते।। प्रति वस्तोरह द्युभिः।। त्रिशूलाय नमः।। त्रिशूलमावाहयामि।। स्थापयामि।।३५।।

ॐ महाँ २ ऽइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु।। हन्तुपाप्मा नं योऽस्मान् द्वेष्टि।। उपयामगृहीतो ऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा।। वज्राय नमः।। वज्रमावाहयामि।। स्थापयामि।।३६।।

ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मे र्थश्चम ऽएमश्च मे ऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। शक्तये नमः।। शक्तिमावाहयामि।। स्थापयामि।।३७।।

ॐ इडऽ एह्यदित ऽएहि काम्याऽएत।। मयि वः कामधरणं भूयात्।। दण्डाय नमः।। दण्डमावाहयामि।। स्थापयामि।। ३८।।

ॐ खड्गोवैश्वदेवः श्वांकृष्णः कर्णो गर्दभस्तरे रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ७ँ हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः।। खड्गाय नमः।। खड्गमावाहयामि।। स्थापयामि।।३९।।

ॐ उदुत्त मं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ७ँ श्रथाय।। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽ अदितये स्याम।। पाशाय नमः।। पाशमावाहयामि।। स्थापयामि।।४०।।

ॐ अ७ँ शुश्च मे रश्मिश्च मे ऽदाभ्यश्च मे ऽधिपतिश्च म ऽ उपा ७ँ शुश्च मेर्न्तर्यामश्च म ऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुण श्चम ऽ आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। अङ्कुशाया नमः।। अङ्कुशमावाहयामि।। स्थापयामि।।४१।।

ॐ आयंङ्गौ पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः।। पितरं च प्रयन्त्स्वः।। गौतमाय नमः।। गौतमावाहयामि।। स्थापयामि।।४२।।

ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानस स्त्रिष्टुव् ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारम्।। स्वारादन्तर्यामो ऽन्तर्य्यामात्प श्चदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाजः ऽऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः।। भरद्वाजाय नमः।। भरद्वाजमावाहयामि। स्थापयामि।। ४३।।

ॐ इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्रोत्र ꣳ सौव ꣳ शरच्छौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिन ऽएकवि ꣳ शऽएकवि ꣳशाद् वैराजं विश्वामित्र ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः।। विश्वामित्राय नमः।। विश्वामित्रमावाहयामि।। स्थापयामि।।४४।।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्र्यायुषय्।। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।। कश्यपाय नमः।। कश्यपमावाहयामि।। स्थापयामि।।४५।।

ॐ अयं पश्चाद् वि श्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऽऋकसमम्।। ऋक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्नि ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया चक्षुगृह्णामि प्रजाभ्यः।। जमदग्नये नमः।। जमदाग्निमावाहयामि।। स्थापयामि।।४६।।

ॐ अयंपुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनौ गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रा दुपा ꣳ शुरुपा ꣳ शोस्त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः।। वसिष्ठाय नमः।। वसिष्ठमावाहयामि।। स्थापयामि।।४७।।

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत।। अत्रये नमः।। अत्रिमावाहयामि।। स्थापयामि।। ४८।।

ॐ तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रांतृभिरुत वा हिरण्यैः।। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेअधि रोचनेदिवः।। अरुन्धत्यै नमः।। अरुन्धतीमावाहयामि।। स्थापयामि।। ४९।।

ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः।। पूषासिघर्मायदीष्व।। एन्द्रयै नमः।। एन्द्रीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५०।।

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिङ्का काम्पीलवासिनीम्।। कौमार्यै नमः।। कौमारीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५१।।

ॐ इन्द्रायाहिधियेषितो विप्रजूतः सुतावतः।। उपब्रह्माणि वाग्धतः।। ब्राह्मयै नमः।। ब्राह्मीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५२।।

ॐ इन्द्रस्य क्रोड़ो ऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्र दित्यै भसज्जी मूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभिरुपलान् प्लीह्ना बल्मीकान् क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्त्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्या ँ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना।। वाराह्यै नमः।। वाराहीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५३।।

ॐ समख्यै देव्या धिया संदक्षिणयोरुचक्षसा।। मामऽ आयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तववीरं विदेय तव देवि सन्दृशिः।। चामुण्डायै नमः।। चामुण्डामावाहयामि।। स्थापयामि।।५४।।

ॐ रक्षोहणं बलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं बलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि।। वैष्णव्यै नमः।। वैष्णवीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५५।।

ॐ या ते रुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी।। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।। माहेश्वर्यै नमः।। माहेश्वरी-माहयामि।। स्थापयामि।। ५६।।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा न यति क श्चन।। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिक्ङा काम्पीलवासिनीम्।। वैनायक्यै नमः।। वैनायकीमावाहयामि।। स्थापयामि।।५७।।

ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्जस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तन्नो त्वरिष्ठं यज्ञ ँ समिमं दधातु।। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ।।

आचार्य सर्वतोभद्र मंडल देवताओं का पूजन यजमान से गन्ध अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेध आदि, से करवा लेवे। अथवा पुरुष सूक्त से पूजन करें।

प्रार्थना -

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मनावानुसृत स्वभावात्।।
करोमियद्यत्सकलं परस्मै नारायणायैति समर्पयामि।।

।। इति सर्वतोभद्रमण्डल देवता पूजनम्।।

॥ लिंगतोभद्रदेवता स्थापन ॥

लिंगतोभद्र में देवताओं के पूजन के लिये आचार्य यजमान के हाथ में तिल, जल, अक्षत, द्रव्य आदि रखवाकर संकल्प करावें-

संकल्प -

अद्यैत्यादि मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सुखसौभाग्य सन्तत्यादि फल प्राप्त्यर्थं श्रीमदुमामहेश्वर प्रीत्यर्थे शिव प्रतिष्ठाङ्ग भूतलिंगतोभद्रमण्डल देवता आवाहन प्रतिष्ठा पूजनादि करिष्ये॥

आवाहन-

यजमान हाथ में अक्षत लेकर देवताओं का आवाहन स्थापन करें।

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय चमयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

लिंगतो भद्र मं ३२ देवताओं का आवाहन-

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनां पतये नमोनमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः॥ असिताङ्ग भैरवाय नमः॥ असितांग भैरवमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१॥

ॐ शिवत्र आदित्यानामुष्टो घृणीवान् वार्धीनसस्तेमत्या ऽ अरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्वयि कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः। रुरुभैरवाय नमः॥ रुरूभैरवमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२॥

ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ७ँ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा॥ भवस्य कण्स्य७ँ रुद्रस्यान्तः पाश्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत॥ चण्डभैरवाय नमः॥ चण्डभैरव वमावाहयामि॥ स्थापयामि॥ ३॥

ॐ इन्द्रस्य क्रोडो ऽदित्यै पाजस्य दिशां जत्रवो ऽदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशीभिरुपलान् प्लीह्ना बल्मिकान् क्लोमभि ग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्तीर्हृदान कुक्षिस्या

ॐ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना।। क्रोध भैरवाय नमः। क्रोध भैरवमावाहयामि।। स्थापयामि।।४।।

ॐ उन्नतऽऋषभो वामनस्त ऽऐन्द्रावैष्णवा ऽ उन्नतः शितिवाहुः शितिपृष्ठतऽ ऐन्द्रा वार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषाऽ आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः।। उन्नमत भैरवाय नमः।। उन्मतभैरवमावाहयामि।। स्थापयामि।।५।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽ उन्नयामि।। समापोऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। कपालभैरवाय नमः।।
कपाल भैरव मावाहयामि।। स्थापयामि।।६।।

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च सासह्वांश्चा भियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।। भीषण भैरवाय नमः।। भीषणभैरवमावाहयामि।। स्थापयामि।।७।।

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। संहार भैरवाय नमः।। संहारभैरवमावाहयामि।। स्थापयामि।।८।।

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वायाच पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकंठाय च।। भवायनमः।। भवमावाहयामि।। स्थापयामि।।९।।

ॐ अग्नि ॐ हृदयेनाशनि ॐ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना।। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेव मन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शीङ्गीनिकोश्याभ्याम्।। शर्वाय नमः।। शर्वमावाहयामि।। स्थापयामि।।१०।।

ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ॐ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रकीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा।। भवस्य कण्ठ्य ॐ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपते पुरीतत्।। पशुपतये नमः।। पशुपतिमावाहयामि।। स्थापयामि।।११।।

ॐ तमीशानं जगतस्त स्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।। पूषानो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरऽदब्धः स्वस्तये।। ईशानाय नमः।। ईशानमावाहयामि।। स्थापयामि।।१२।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्वय उतोत इषवे नवः।। बाहुभ्यामुत ते नमः।। रुद्राय नमः।। रुद्रमावाहयामि।। स्थापयामि।।१३।।

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च।। सासह्वां श्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।। उग्राय नमः।। उग्रंमावाहयामि।। स्थापयामि।। १४।।

ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्।। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेय नाय।। भीमाय नमः।। भीममावाहयामि।। स्थापयामि।।१५।।

ॐ मानोमहान्तमुत मानो अर्भकं मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम्।। मानो वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः।। महान्ताय नमः।। महान्तमावाहयामि।। स्थापयामि।।१६।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। अनन्ताय नमः।। अनन्तमावाहयामि।। स्थापयामि।। १७।।

ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।। निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा।। वासुकये नमः।। वासुकिमावाहयामि।। स्थापयामि।। १८।।

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यःकर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुंजिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः।। श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः।। तक्षकाय नमः।। तक्षकामावाहयामि स्थापयामि।। १९।।

ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो ह ँ सो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य ह्रियै शल्यकः।। कुलिशाय नमः।। कुलिशामावाहयामि।। स्थापयामि।।२०।।

ॐ सोमाय कुलुङ्गः आरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यंकुः कर्कटस्ते ऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः।। कर्कोटकाय नमः।। कर्कोटकमावाहयामि।। स्थापयामि।।२१।।

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः।। तमीमहे महागयम्।। उपयामगृहीतोस्यग्नये त्वा वर्चस ऽएष ते योनि रग्नये

त्वावर्चसे।। शंखपालाय नमः।। शंखपालमावाहयामि।। स्थापयामि।।२२।।

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति।। अश्विना यज्ञ ॐ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्।। कम्बलाय नमः।। कम्बलमावाहयामि।। स्थापयामि।।२३।।

ॐ अश्वतूपरो गोमृगस्ते प्राजापन्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धनोराश्विनावधौरामौ वाह्वौः सौमापौष्णः श्यामौ नाभ्या ॐसौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमश सक्थ्यौ सक्थौर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽ इन्द्राय स्वपश्याय वेहद्वैष्णावो वामनः।। अश्वतराय नमः।। अश्वतरमावाहयामि।। स्थापयामि।।२४।।

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। शूलाय नमः।। शूलमावाहयामि।। स्थापयामि।।२५।।

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।। श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्चमुखादग्निरजायत।। चन्द्रमौलिने नमः।। चन्द्रमौलिमावाहयामि।। स्थापयामि।।२६।।

ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।। रविं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृह ॐ हरिति कनिक्रदत्।। चन्द्रमसे नमः।। चन्द्रमसेमावाहयामि।। स्थापयामि।।२७।।

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोमणश्चर्षणीनाम्।। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शत ँसेना ऽ अजयत्साकमिन्द्रः।। वृषभध्वजाय नमः।। वृषभध्वजमावाहयामि।। स्थापयामि।।२८।।

ॐ सुगावो देवाः सदना अकर्मय आजग्मेद ँ सवनं जुषाणाः।। भरमाणा वहमाना हवीॐ ष्यस्मेधत वसवो वसूनि स्वाहा।। त्रिलोचनाय नमः।। त्रिलोचनमावाहयामि।। स्थापयामि।।२९।।

ॐ रुद्राः स ँ सृज्य पृथिवींबृहज्ज्योतिः समीधिरे।। तेषां

भानुरजस्त्र इच्छुक्रो देवेषु रोचते।। शक्तिधराय नमः।। शक्तिध रमावाहयामि।। स्थापयामि।।३०।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।। महेश्वराय नमः।। महेश्वर मावाहयामि।। स्थापयामि।।३१।।

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती।। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वेष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।। शूलपाणये नमः।। शूलपणिमावाहयामि।। स्थापयामि।।३२।।

आचार्य लिंगतो भद्र देवताओं का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य आदि से कर अथवा रूद्र सूक्त से पूजन करें।

प्रार्थना

वन्दे सर्वजगद् विहारमतुलंवन्देऽन्धक-ध्वसिनं
वन्दे देव शिखामणिं शशिनिभं वन्दे हरेर्वल्लभम्।।
वन्दे नाग-भुजंग-भूषणधरं वन्दे शिव चिन्मयं
वन्देभक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।

।। इतिलिंगतोभद्रस्थापन पूजनम ।।

॥ क्षेत्रपाल पूजनम् ॥

वायव्य कोण में वेदी के ऊपर श्वेत वस्त्र फैलाकर पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण आठ-आठ रेखाओं से उन्नचास कोष्टों का निर्माण करें तथा उन्नचास कोष्टो में क्षेत्रपाल देवताओं का आवाहन करें-

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्ने: एमेनम वृधन्तमृताऽ अमर्त्य वैश्वानरं क्षेत्र जित्याय देवा:॥

क्षेत्रपाल देवताओं का नाम मंत्र से आवाहन-

ॐ इमौ ते पक्षावजरौपतत्त्रिणौया ब्भ्या ँ रक्षा ँ स्यपह ँ स्यग्ने॥ ताब्भ्याम्पतेमसुकृतामुलोकं यत्रऋषयोजग्मु: प्रथमजा: पुराणा:॥ अजराय नम:॥ अजरमावाहयामि॥ स्थापयामि॥१॥

ॐ प्रथमा वा ँसरथिनासुवर्ण्णादेवो पश्यन्तौभुवना- निविश्वा॥ अपिप्रयश्चोदनावाम्मिमानाहोताराज्ज्योति: प्प्रदिशादिशन्ता॥ व्यापकाय नम:॥ व्यापकमावाह्यामि॥ स्थापयामि॥२॥

ॐ इन्द्रस्यवज्ज्रोमरुतामनीकं मित्रस्यगर्ब्भोब्बरुणस्यनाभि: सोमान्नो॥ हव्यदाति ञ्जुषाणो देवरथ प्प्रतिहव्या गृभाय॥ इन्द्रचौराय नम:॥ इन्द्रचौरमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३॥

ॐ एवेदिन्द्रं व्वृषणं व्वज्रं बाहुं व्वसिष्ठासो ऽअवभ्यर्च्चन्त्यर्कै: सनस्तुतोव्वीरवद्धातुगोमद्यूयम्पात स्वस्तिभि: सदान:॥ इन्द्रमूर्तये नम:॥ इन्द्रमूर्तिमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४॥

ॐ उक्षासमुद्रोऽअरुण: सुपर्ण्ण: पूर्वस्ययोनिम्पितुराविवेश। मध्येदिवो निहित: पृश्निरश्मा व्विचक्रमे रजसस्पात्त्यन्तौ॥ उक्ष्णै नम:॥ उक्षाणमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५॥

ॐ यद्देवा देवहेडनन्देवास श्चकृमाव्वयम्॥ अग्निर्म्मातस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व ँ हस:॥ कूष्माण्डाय नम:॥ कुष्माण्डमावाहयामि। स्थापयामि॥६॥

ॐ सनऽइन्द्रायज्जवेव्वरुणायमरुद्भ्य:॥ व्वरिवोवित्परिस्त्रव॥ वरुणाय नम:॥ वरुणमावाहयामि॥ स्थापयामि॥७॥

ॐ ब्बाहूमे बलमिन्द्रिय ँ हस्तौमेकर्म्मव्वीर्य्यम्।। आत्माक्षत्रमुरोमम।। वटुकाय नमः।। वटुकमावाहयामि।। स्थापयामि।।८।।

ॐ मुञ्चन्तु माशपथ्यादथोवरुण्यादुत।। अथोयमस्यपडवीशात्सर्व्वस्माद्देव किल्विषात्।। विमुक्ताय नमः।। विमुक्तमाहयामि।। स्थापयामि।।९।।

ॐ कुर्व्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छत ँ समाः।। एवन्त्वयिनान्यथे तोऽस्तिनकर्मलिप्यते नरे।। लिप्तकाय नमः।। लिप्तकमावाहयामि।। स्थापयामि।।१०।।

ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्द्रोब्भ्यवह्नियमाणः सलिलःप्रप्लुतोययोरोजसावक्कभितारजाँ सिव्वीर्य्येभिर्व्वीरतमाशव्विष्ठ्ाः।। यापत्त्येते ऽ अप्प्रतीता सहोभिर्विष्णूऽ अगन्वरुणा पूर्वहूतौ।। लीलालोकाय नमः।। लीलालोकमावाहयामि।। स्थापयामि।।११।।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्य श्चवो नमो नमो गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः।। एक दंष्ट्राय नमः।। एकदंष्ट्रमावाहयामि।। स्थापयामि।।१२।।

ॐ अर्म्मेब्भ्योहस्तिप ञ्जवायाश्वपम्पुटयैगोपालं व्वीर्य्याया-विपालन्ते जसेपालमिरायैकीनाशङ्की लालाय सुराकारम्भ द्द्रायगृहप ँ श्रेयसेवित्त धमाध्यक्ष्यायानुरक्षत्तारम्।। ऐरावताय नमः।। ऐरावतमावाहयामि।। स्थापयामि।।१३।।

ॐ या ऽ ओषधीः पूर्व्वा जाता देवभ्यस्त्रियुगम्पुरा।। मनैनुबब्भ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च।। ओषधीहनाय नमः।। ओषधीघ्नमावाहयामि।। स्थापयामि।। १४।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।। उर्व्वारुककमिव बन्धनादितोमुक्षीयमामुतः।। बन्धनाय नमः।। बन्धनमावाहयामि।। स्थापयामि।।१५।।

ॐ देव सवितः प्प्रसुवयज्ञम्प्रसुवयज्ञपतिम्भगाय।। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु व्वाच स्पतिर्व्वाजन्नः स्वदतु स्वाहा।। दिव्यकरणाय नमः दिव्यकरणमावाहयामि।। स्थापयामि।।१६।।

ॐ सीसेनतन्त्रमनसामनीषिणऽ ऊर्णा सूत्रेण कवयोव्वयन्ति।। अश्विनायज्ञ ँ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणोभिषज्जयन् कम्बलाय नमः।। कम्बलमावाहयायामि।। स्थापयामि।। १७।।

ॐ आशुः शिशानोव्वृषभोन भीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् संक्रन्दनोनिमिष ऽएकवीरः शत ँ सेना ऽ अजयत्साकमिन्द्रः।। भीषणाय नमः।। भीषणमावाहयामि।। स्थापयामि।।१८।।

ॐ इम ँ साहस्र ँ शतधारमुत्संव्यच्यमान ँ सरिरस्य मध्ये।। घृतन्दु हानामदिति ञ्जानायाग्नेमाहि ँ सीः परमे व्योमन्। गवयमारण्यमनुतेदिशामितेनचिन्वानस्तन्वोनिषीद गववन्ते शुगृच्छतुयन्द्विष्मस्तन्तेशुगृच्छतु।। गवयायनमः।। गववमावाहयामि।। स्थापयामि।।१९।।

ॐ कुम्भोव्वनिष्ठुर्ज्जनिताशचीभिर्य्यस्मिन्नग्रेयोन्याङ्गर्भोऽअन्तः।। प्लाशी व्व्यक्तः शातधारऽ उत्सोदुहेनकुम्भीस्वधाम्पितृभ्यः।। घण्टाय नमः।। घण्टामावाहयामि।। स्थापयामि।।२०।।

ॐ आक्रन्दयबलमोजोन ऽ आधानिष्ट निहिदुरिताबाधमानः।। अप्प्रोथदुन्दुभेदुच्छुना ऽइत ऽ इन्द्रस्यमुष्टिरसि व्वीडयस्व।। व्यालाय नमः।। व्यालमावाहयामि।। स्थापयामि।।२१।।

इन्द्रायाहि तूतुजानऽ उप ब्ब्रह्माणिहरिवः। सुतेदधिष्वनश्चनः।। अंशवे नमः।। अंशुमावाहयामि।। स्थापयामि।।२२।।

ॐ चन्द्रमा ऽ अप्स्वन्तरासुपर्णोधावते दिविः।। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्स्पृह ँ हरि रेतिकनि क्रदत्।। चन्द्रवरुणाय नमः।। चन्द्रवारुणमावाहयामि।। स्थापयामि।।२३।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसो मम।। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। घटाटोपाय नमः।। घटाटोपमावाहयामि।। स्थापयामि।।२४।।

ॐ उग्ग्रं लोहितेन मित्र ँ सौव्रत्येन रुद्रन्दौर्व्वत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतोवले साद्ध्यान्प्रमुदा।। भवस्य कण्ठ्य ँ रुद्रस्यान्तः

पाश्र्व्य म्महादेवस्ययकृच्छव्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥ जटिलाय नमः॥ जटिलमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२५॥

ॐ पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेणदेवदीद्यत॥ अग्नेक्र त्वा क्रतूंरनु॥ क्रतवे नमः॥ क्रतुमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२६॥

ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वाविशन्त्विन्दवः॥ पुनरूर्ज्जानिवर्त्तस्वसानः सहस्त्रंधुक्षोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥ घण्टेश्वराय नमः॥ घण्टेश्वर मावाहयामि॥ स्थापयामि॥२७॥

ॐ व्वायोशुक्रो ऽअयामि तेमद्ध्वोऽ अग्रन्दि विष्ट्विषु॥ आयाहि सोमपीतेये स्पार्होदेवनियुत्वता॥ विटकाय नमः॥ विटकमावाहयामि॥ स्थापयामि॥२८॥

ॐ देव्या होतारा ऽ ऊद्‌र्ध्वमध्वरन्नोग्रेर्जिह्वामभिगृणीतम्॥ कृणुतन्नः स्विष्टिम्॥ मणिमानाय नमः॥ मणिमान मावाहयामि॥ स्थापयामि॥२९॥

ॐ त्रीणित ऽ आहुर्द्दिवि बन्धनानित्रीण्यप्सुत्रीण्यन्तः समुद्दे॥ उतेवमेव्वरुण २द्दन्तस्यर्त्वन्यत्त्रात ऽ आहुः परमं जनित्रम्॥ गणवनय नमः॥ गणवन्धमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३०॥

ॐ प्रति श्रुतकाया ऽअर्तनंघोषायभषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूक ँशब्दायाडम्बराधातंमहसेव्वीणो वादङ्क्रोशायतूण वध्मवरस्थराय शंखध्मं वनाय वनपमन्यतोरण्याय दावपम् मुण्डाय नम॥ मुण्डमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३१॥

ॐ शुद्धबालः सर्ब्बशुद्धव्वालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा ऽ अवलिप्तारौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥ वर्वूकराय नमः॥ वर्वूकर मावाहयामि॥ स्थापयामि॥३२॥

ॐ वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया ऽअस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः॥ गोभिः सन्नद्धोऽअसिवीडयस्वास्थाता ते जयतुजेत्वानि॥ सुधापाय नमः॥ सुधापमावाहयामि॥ स्थापयामि॥३३॥

ॐ सुपर्ण वस्तेमृगो ऽअस्या दन्तो गोभिः सनद्धापतति

प्रसूता।। यत्रानरः संच द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म य ᳫं सन्।। वैनाय नमः।। वैनमावाहयामि।। स्थापयामि।।३४।।

ॐ अग्ने अच्छा वदेह प्रतिनः सुमना भव।। प्रनो यच्छ सहस्त्रजित त्व ᳫं हिधनदा ऽ असि स्वाहा। पवनाय नमः।। पवनमावाहयामि।। स्थापयामि।।३५।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳫं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ढुण्डकरणाय नमः।। ढुण्डकरण मावाहयामि।। स्थापयामि।।३६।।

ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिरऽइन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः।। स्थवीराय नमः।। स्थवीरमावाहयामि।। स्थापयामि।। ३७।।

ॐ वांत प्राणेनापानेन नासिके ऽ उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नुं निर्वाधेनाशनि मस्तिष्केण विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यां ँ श्रोत्रंᳫं श्रोत्राभ्यां कर्णोतेदनिमधारकण्ठेनापः शुष्क कण्ठैन न चितं मन्याभिरदितिᳫंशीर्ष्णा निऋतिं निर्जर्जल्पेन शीर्ष्णा ᳫं संक्रोशैः प्राणान् रेष्माण ँ स्तुपेन।। दन्तुराय नमः।। दन्तुरमावाहयामि।। स्थापयामि।।३८।।

ॐ इद ᳫं हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीर ँ सर्वगण ᳫं स्वस्तये आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि।। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो ऽ अस्मासु धत्।। धनदाय नमः।। धनदमावाहयामि।। स्थापयामि।।३९।।

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ᳫं हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः। नाग कर्णाय नमः।। नागकर्णमावाहयामि।। स्थापयामि।। ४०।।

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत ऽ आजगन्था परस्याः।। सृक ᳫंसँशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व।। महाबलाय नमः।। महाबलमावाहयामि।। स्थापयामि।।४१।।

ॐ इन्दुर्दक्षः श्येनऽ ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः॥ महान्त्सधस्थे ध्रुव ऽ आ निषतो नमस्ते ऽ अस्तु मामाहि ँ सीः॥ फेत्काराय नमः॥ फेत्कारमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४२॥

ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे॥ अनाविद्धया तन्वा जय त्व ँ स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्त्तु॥ वीरकाय नमः॥ वीरकमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४३॥

ॐ तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयोऽ श्वारथेभिः सह वाजयन्तः अवक्रामन्तः प्रपदै रमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँ ऽ रनपव्ययन्तः॥ सिंहाय नमः॥ सिंहमावाहयामि॥ स्थापयामि॥ ४४॥

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवां २ऽ आ सादयादिह॥ मृगाय नमः॥ मृगमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४५॥

ॐ आदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं विष्टं भनीन्दि शामधिपत्निं भुवनानाम्॥ ऊर्मिद् द्रप्सो ऽ अपामसि विश्व कर्मातऽऋषिरश्विनाद्ध्वर्य्यू सादयतामिहत्वा॥ यक्षाय नमः॥ यक्षमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४६॥

ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षंवायुश्छिद्रं पृणातु ते॥ सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया॥ मेघवाहनाय नमः॥ मेघ वानमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४७॥

ॐ सं बर्हिरङ्क्ता ँ हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः॥ समिन्द्रो विश्व देवे भिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वहा॥ तीक्ष्णाय नमः॥ तीक्ष्णमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४८॥

ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः॥ यः पोता सपुनातु मा॥ अनलाय नमः॥ अनलमावाहयामि॥ स्थापयामि॥४९॥

ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमा जिमस्मासु भद्रा द्रविणानि ध त्त॥ इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ शुक्राय नमः॥ शुक्रमावाहयामि॥ स्थापयामि॥५०॥

प्रतिष्ठापन :-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ

समिमं दधातु।। विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामो ३म्प्रतिष्ठ।।

आचार्य क्षेत्रपाल देवताओं का पूजन यजमान से गन्धाक्षत पुष्प, धूप दीप नैवेद्य से करवाले तब यजमान से प्रार्थना करावैं।

प्रार्थना –

भ्राच्चन्द्र जटाधरं त्रिनयनं निलांजनादि प्रभम्।
दोर्द्दण्डान्त गदाकपालमरुण स्त्रगन्धवस्त्रोज्वलम्।।
घण्टा मेखल घर्घर ध्वनिलस झंकार भीमं विभुं।
वन्दे सहित सर्पकुण्डल धरं श्रीक्षेत्रपालं सदा।।

।। इति क्षेत्रपाल पूजनम् ।।

।। प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग ।।

देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा में जलधिवास, घृतादिवास अन्नाधिवास शय्याधिवास का विधान शास्त्रों नें बताया है। यदि चाहें तो शर्कराधिवास गन्धाधिवास पुष्पाधिवास धूपाधिवास वस्त्राधिवास फलाधिवास मिष्ठानाधिवास औषध्याधिवास आदि देवताओं की प्रतिष्ठा में करवा सकते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग में –

जलाधिवास के लिये पहले आचार्य यजमान को आचमन दे पुनः आसन पूजन भूतोत्सरण करवा यजमान से ब्राह्मण पूजन करवा जलाधिवास हेतु संकल्प करावे।

जलाधिवास

ॐ अद्यैत्यादि० श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्त्तमानस्याद्यैतस्य ब्राह्मणोह्नि द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरत खण्डे भारतवर्षे अमुक क्षेत्रे अमुक जनपदे तत् जनपदान्तर्गत अमुक ग्रामे गंगा यमुनयोर्अमुक दिग्विभागे बौद्धावतारे श्री विक्रमादित्य राज्यात् अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुक

वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुक नामाहं अमुक राशे सकुटुम्ब सहितायां स्वात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थे आसां मूर्तीनां देवता योग्यताधिष्ठान सिद्ध्यर्थं जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये॥

यजमान संकल्प कर मूर्ती को मधु और घी से लेपन करे मूर्ती के नेत्र पर मोम लगा लेवे तथा आचार्य यजमान से मूर्ती देखने को कहे-

देवस्य अवयवान् सम्यक् निरीक्षस्व गुरो। ब्राह्मण लोग मूर्ती का निरीक्षण कर लेवें।

अग्न्युतारण -

देशकालौ संकीर्त्य (देश, समय का उच्चारण आचार्य करें) **विष्णवादि** (अथवा जिस देवता की मूर्ति हो उस देवता का नाम उच्चारण करें) **मूर्तीनां अङ्ग प्रत्यङ्ग सन्धिमुत्पन्न वासाग्निकष्ट-कान्यातपोग्नि निरासार्थं च अग्न्युतारणं करिष्ये।**

संकल्प कर **'अश्मनमूर्ज'** अनुवाक- से जल तथा दूध की धारा मूर्ति पर निरन्तर लगायें -

ॐ अश्मनमूर्ज पर्वते शिश्रियाणा मद्भ्य ऽ औषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो ऽअधि संभृतं पयः। तां न ऽ इषमूर्ज धत्त मरुतः स ꣳ रराणा ऽ अस्मँस्ते क्षुन् मयि त ऽ ऊर्ग्यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥१॥ ॐ इमा मे ऽअग्न ऽइष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं च शतं च सहस्त्रं चसहस्त्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं चन्यर्बुदं च समुद्र श्च मध्यं चान्त श्च परार्द्ध श्चैता मे ऽ अग्न ऽइष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिल्लोके॥२॥ ॐ ऋतव स्थ ऽ ऋतावृध ऽऋतुष्ठा स्थ ऽ ऋतावृध। घृतश्च्युतो मधुश्च्युतो विराजो नाम कामदुधा ऽ अक्षीयमाणाः॥३॥ ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥४॥ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥५॥ ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा॥ अग्नेपित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्ण ꣳ शिवं कृधि॥६॥ अपामिदं

न्ययन ँ समुद्रस्य निवेशनम्॥ अन्यॉस्ते ऽ अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ँ शिवोमव॥७॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥८॥ ॐ स नः पावक दीदिवो ऽग्ने देवाँ २ऽ इहावह। उप यज्ञ ँ हवि श्च नः॥९॥ पावकया याश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसोन भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽ आयो घृणे न ततृषाणोऽ अजरः॥१०॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽ अस्त्वर्चिषे। अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ँ शिवोभव॥ ११॥ ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेङ् बर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट्॥१२॥ ॐ ये देवा देवानां यज्ञियायज्ञियाना ँ संवत्सरीणमुप भागमासते॥ आहुतादो हविषो यज्ञे ऽ अस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो घृतस्य॥१३॥ ॐ ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतरो ऽअस्य। ये भ्यो न ऽऋते पवतेधाम किं चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽ अधि स्नुषु॥ १४॥ ॐ प्राणदा ऽ अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः॥ अन्यॉस्ते ऽ अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ँ शिवोभव॥१५॥

उपरोक्त मंत्रों के बाद विष्णु संज्ञकमूर्तियों को पुनः पुरुष सूक्त से जल तथा दूध की धारा देवें-

॥ पुरुष सूक्त ॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वात्यष्ठि दशांगुलम्॥१॥
ॐ पुरुषऽएवेद ँ सर्वं सद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँ श्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पूरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽ अभि॥४॥

ततो विराडजायत विराजो ऽ अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥५॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूँरस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये॥६॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे॥
छन्दा ॐसि जज्ञिरे तस्मांद्यजुस्तस्मादजायत॥७॥
तस्मादश्वा ऽ अजायन्त ये के चो भयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः॥८॥
तं जज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽ अयजन्त साध्या ऽ ऋषयश्च ये॥९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्येते॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ॐ शूद्रो अजायत॥११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽ अजायत।
श्रोत्राद्वायु श्च प्राण श्च मुखादग्निरजायत॥१२॥
नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ॐ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ 2ऽ अकल्पयन्॥१३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽ अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥१६॥

उपरोक्त मंत्रो से जल धारा दूध धारा देवे। प्रतिष्ठा यदि शिव लिंग या मूर्ति की हो तो रुद्रसूक्त से जल दूध धारा देवें। यदि दुर्गा या महाकाली आदि की प्रतिष्ठा हो तो जल दूध धारा श्री सूक्त से देवें। दूध जल धारा देकर प्रार्थना के निम्न मंत्र पढ़े-

प्रार्थना

ॐ त्वयि सम्पूजयामीशं नारायण मनोमयम।
रहिता ऽशेषदोषैस्त्वमृद्धियुक्तो सदाभव॥१॥
सर्व सत्व मयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम्।
त्वामेवालं करिष्यामि त्वं वद्यो भवते नमः॥२॥

प्रार्थना कर भगवान के दक्षिण हाथ में देवी के वाम हाथ में सफेद ऊन के तागो में सर्वोषधी मैनसिल बांधकर रक्षा सूत्र बांध देवें- तत्पश्चात् मूर्ति को सप्तमृतिका, पांच वृक्षो का कषाय, पंचामृत,भस्म, गोमूत्र गोमय, गोदुग्ध, युक्त जल में कुशा तथा वस्त्र से आच्छादित कर जलपात्र में रखें।

जल पूजन-

ॐ अद्भ्यो नमः॥ गंगादि सप्त सागरेभ्यो नमः॥ जलेवरुणाय नमः॥ ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानोवरुणेह बोध्युरुश ॐ समान आयुः प्रमोषीः॥ जल को गन्धाक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य चढ़ा देवें। जल में दक्षिणा भी रख देवें। ब्राह्मण शान्ति पाठ करें तथा मूर्ति का जलाधि वास कर देवे।

जलवास रात्रीभर एक पहर अथवा गोदोहनकाल तक समयानुसार करें। उपरोक्त समय व्यतीत होने के पश्चात् जमीन पर एक वस्त्र बिछा देवें मूर्ति को उठाकर वस्त्र के ऊपर रखें तथा निम्न मंत्र बोलें-

उतिष्ठोतिष्ठ गोविन्द उतिष्ठ गरुड़ध्वज।
उतिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलकुरू॥

अथवा

उतिष्ठतिष्ठ महादेव उतिष्ठ वृषभध्वज।
उतिष्ठ पार्वतीनाथ त्रैलोक्यं मंगलं कुरू॥

भगवान को उठाकर पूजन वेदी के ऊपर रख पंचोपचार अथवा शोडषोपचार से पूजन कर लेवें। पंचगव्य का प्रोक्षण मंण्डप में कर बालू (गंगामाटी) से तीन वेदियां कलश रखने हेतु बनावें। मूर्ति निर्माता विश्वकर्मा का पूजन भी कर लेवे-

विनियोग

विश्वकर्मन्निति शासऋषिः त्रिष्टुप् छन्दो विश्वकर्मा देवता विश्वकर्मावाहने विनियोग॥ जल छोड़ कर आवाहन करें-

एह्येहि शिल्पीश्वर विश्वकर्मन् मूर्त्यादिनिर्माण करके मुख्य। दोर्दण्ड संसाधित सर्व शिल्प गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

विश्वकर्मा का पूजन मंत्र -

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रं कृणोरवध्यम्।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रोविहव्यो यथासत्॥

विश्वकर्मा का पूजन गन्ध अक्षतादि से कर दक्षिणा से सन्तुष्ट कर प्रार्थना करें -

विश्वकर्मन प्रसीदत्वं शिल्पशास्त्र विशारद।
दण्डपाणेमहावाहो तेजोमूर्तिधर प्रभो॥

॥ कलश स्थापन ॥

एक सौ एक कलश को जल से भर देवें तथा सप्त धान्य के उपर उन कलशों का पूजन (पूजन प्रकरण से) कर देवे तत्पश्चात् अन्य विशेष सामग्री कलशों में डालते हुए यथा स्थान पर कलशों को वेदीयों में विराजमान कर देवें।

कलश स्थापन क्रम-

जो तीन वेदीयां बनी हैं उनमें पहले दक्षिण वेदी के ऊपर पिछले भाग से कलशों को स्थापित करते रहें -

१. प्रथम पंक्ति में स्थापित कलश सहित बारह कलश।

२. द्वितीय पंक्ति में छः कलश। कलशों में निम्न सामग्री भी डाल देवें। पहले में सप्तमृतिका। दूसरे में पंचवृक्ष कषाय अथवा पत्ते। तीसरे में गोमूत्र। चौथे में गोमय। पांचवें में भस्म। छटवें में गधोदक।

मध्यवेदी -

पूजन किये हुए ग्यारह कलश स्थापित कर देवें।

उत्तरवेदी -

उत्तरवेदी में पीछे से पहली पंक्ति में चार पूजित पंचपल्लव युक्त कलश। दूसरी पक्ंति में बीस कलश स्थापित करें। बीस कलशों में विषमक्रम में निम्न सामग्री डाल देवें-

१. अष्टपलसप्तमृत्तिका। २-सप्तपल गोमय। ३ -द्वादश पल गोमूत्र। ४ एक मुट्ठी भस्म। ५-सप्तपल गोमय। ६- सोलाह पल दूध। ७- बीसपल दहीं। ८-सातपल गोदधि। ९-तीनपल मधु। १०-तीन पल शर्करा। जो सम कलश हैं उनको तो यथा पूजित ही रखना है। तीसरी पंक्ति में दो कलशों में जल भर लेवे।

चतुर्थ पंक्ति में दो कलश में पंचामृत तथा बाकी चार में जल भर देवें।

पांचवी पंक्ति में चौदह कलश उनमें निम्न सामग्री क्रम से डालते जाये-१. गंध। २. पंच कषाय, ३. सर्वोषधि, ४. श्वेतपुष्प, ५. उदक, ६. अष्टफल, ७. सोना, ८. गोश्रृंग से जल, ९. सप्त धान्य, १०. सहस्त्रछिद्र, कलश तथा तत्सहायक जलकलश, ११. सर्वोषधि, १२. पंचपल्लव, १३. नवरत्न, १४. तीर्थो का जल। पूर्वादि दिशाओं में इस ही वेदी के ऊपर क्रम से आठ कलश समुद्र संज्ञक रखें- इन कलशों में क्रमशः पहले कलश में समुद्र का जल। दूसरे में क्षीर। तीसरे में दधि। चौथे घी। पाचवें में गन्ने का रस। छटवें में फलों का रस। सातवें में स्वादुजल। आठवें कलश में नारियल का जल रखें।

छटवीं पक्ति में दश कलश निम्नक्रम से रख निम्न सामग्री कलशों में रखें- पहले में कदम्ब के पत्ते। दूसरे में शाल्मली के पत्ते। तीसरे में जम्बू के पत्ते। चौथे में अशोक के पत्ते। पांचवे में पीपल के पत्ते। छटवें में आम के पत्ते। सातवें में बड के पत्ते। आठवें में विल्व के पत्ते नवें में नाग के पत्ते और दशवें कलश में पलाश के पत्ते रखें।

सातवी पंक्ति में चार बड़े कलशों में सुगधि तेल या, चावल,

गेहूँ, मसूर, बिल्व तथा आंवलों का चूर्ण रखें।

अन्य सुगन्धित वस्तुयें भी मूर्ति के उद्वर्तन के लिये रखे- **कस्तूरिकायां द्वौभागौ चत्वारश्चन्दनस्य च। कुंकुमस्य त्रयश्चैकः शशिनः स्तवैक एवं च॥** दो भागकस्तूरी चार भाग चन्दन तीन भाग कुंकुम और एक भाग कपूर को भी एक स्थान पर वेदी के ऊपर रख लेवे।

यक्ष कर्दम को भी उद्वर्तन के लिये रख लेवे- **कस्तूरी ह्यगुरूश्चैव कर्पूरश्चन्दनं तथा कक्कोलं च भवेदेभि पंचभिर्यक्ष कर्दम॥** कस्तूरी, अगर, कर्पूर, चन्दन और कंकोलको मिला लेवे इन पांचों के मिश्रण के यक्ष कर्दम कहा जाता है।

अन्य कलशों को रखकर कलशों की प्रार्थना कर लेवे-

कलश प्रार्थना

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥
त्वत्तोयेसर्व तीर्थानिदेवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्तिभूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयंत्वमेवासि विष्णु त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय
सुश्वेत हाराय सुमंगलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय
जलाधि नाथाय नमो नमस्ते॥
पाशपाणी नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीव नायक।
यावत् कार्य समाप्तिः स्या त्तावत् त्वं सुस्थिरोभव॥

।। पुण्याहवाचन ।।

आचार्य चार ब्राह्मणों से पुष्ण्याहवाचन करावे तथा यजमान कहें- **भो ब्राह्मणाः अमुकदेव प्रतिष्ठा कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।** ब्राह्मण कहे, **पुण्याहम्।।३।।**

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जात वेदः पुनीहि मा।।

यजमान कहे-

भो ब्राह्मणाः अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।। ब्राह्मण कहे- **कल्याणम्।।३।।**

ॐ यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः ब्रह्म राजन्यांभ्या ॳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।

यजमान कहे-

भो ब्राह्मणाः अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणः ऋद्धि भवन्तो ब्रुवन्तु।। ब्राह्मण कहे- **ॐ ऋद्धियताम्।।३।।**

ॐ सत्रस्यऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽअभूम।
दिवं पृथिव्यां अद्ध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान कहे-

भो ब्राह्मणाः अमुकदेव प्रतिष्ठा कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।। ब्राह्मण कहें- **स्वस्ति।।३।।**

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

।। दक्षिणादानसंकल्प ।।

अद्येत्यादि पुण्याहवाचन कर्मणः सांगता सिद्धयर्थ दक्षिणा द्रव्यं नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदातु महमुत्सृजे।।

यजमान ऐसे संकल्प कर ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तथा आशीष ग्रहण करें ।

॥ दिक्पाल पूजन बलिदान ॥

पूर्व में इन्द्र पूजन -

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव
ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ँ
स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र॥ इन्द्राय नमः॥

बलिदान -

भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥१॥

अग्नि कोण में अग्नि पूजन -

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमँशोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ अग्नये नमः॥

बलिदान-

भो अग्ने दिशं रक्ष बलिंभक्ष यजमान स्याभ्युदयं कुरु॥२॥

दक्षिण में यम पूजन -

ॐ असियमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि स्वाहा॥ यमाय नमः॥

बलिदान-

भो यम दिशं रक्षबलिं भक्ष यजमानस्याभ्यु दयं कुरु॥३॥

नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋत पूजन-

ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छ स्तेनसेत्या मन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ निर्ऋतये नमः॥

बलिदान -

भो नैर्ऋत दिशं रक्ष बलिंभक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥५॥

पश्चिम में वरुण पूजन-

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुष ँ समान आयुः प्रमोषीः॥ वरुणाय नमः॥

बलिदान -

भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भक्ष। यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥५॥

वायव्य में वायु पूजन-

ॐ आ नियुद्भिः शतिः नीभिरध्वर ँ सहास्त्रिणीभिरूप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात् स्वस्तिभिः सदा नः॥ वायवे नमः॥

बलिदान -

भो वायो दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥६॥

उत्तर में सोम पूजन -

ॐ वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि॥ सोमाय नमः॥

बलिदान-

भो सोम दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥७॥

ईशान में ईशान पूजन-

ॐ ईशावास्यमिद ँ सर्वं यत्किंचजगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥ ईशानाय नमः॥

बलिदान-

भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥८॥

ईशान पूर्व के मध्य अनन्त पूजन -

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ अनंताय नमः॥

बलिदान-

भो अनन्त दिशं रक्ष बलिं भक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥९॥

नैर्ॠत्य पश्चिम के मध्य ब्रह्म पूजन-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्वि सीमत सुरुचो वेन ऽआवः॥ सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ब्रह्मणे नमः॥१०॥

बलिदान-

भो ब्रह्मन् दिशं रक्ष बलिंभक्ष यजमानस्याभ्युदयं कुरु॥

॥ देव प्रतिमा स्नान ॥

जो कलश देवमूर्ति के स्नान के लिये रखे है उन कलशों से क्रमश स्नान करायें आचार्य मंत्रों का उच्चारण करे यजमान मूर्ती में कलशों से धारा देवे-

१. मृत्तिका के कलश से- ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥

शुद्धजल से- ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽ अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥

२. कषायोदक से- ॐ यज्ञायज्ञा वोऽअग्नये गिरागिरा चदक्षसे। प्रप्र वयममृतं जातवेदसंप्रियं मित्रं न शँ सिषम्॥ पुनः शुद्ध स्नान॥

३. गोमूत्र से- ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ पुनः शुद्ध स्नान॥

४. गोमय से- ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वये॥ श्रियम्॥ पुनः शुद्ध स्नान॥

५. भस्मोदक स्नान- ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्ह विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे। पुनः शुद्ध स्नान॥

६. गन्धोदक से- ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वास्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। पुनः शुद्धजल से स्नान॥

७. पुनः गन्धोदक से- ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय चनमः शिवाय च शिवतराय च॥ पुनः शुद्धजल से स्नान॥

८. पुनः गन्धोदक से- ह ँ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदतिथिर्दुरोण सत्। नृषद्वरसदृतसद्वयोम सदब्जा गोजाऽऋतजाऽ अदृजा ऽऋतं बृहत्॥ पुनः शुद्ध स्नान॥

९. पुनः गधोदक से-ॐ याते रुद्र शिवा तनूरधोरा पापकाशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।। पुनः शुद्ध स्नान।।
१०. पुनः गधोदक से- विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। पुनः शुद्ध स्नान।।
११. पुनः गन्धोदक से- ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः। स बुध्न्याऽ उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। पुनः शुद्ध जल से स्नान करावें।

।। दूर्वा प्रोक्षण ।।

मूर्ति के ऊपर दूर्वा अथवा श्वेत पुष्प रख देवें-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

अथवा

ॐ शंत जीव शरदो वर्द्धमानः शतहेमन्तां शतमुव सन्तात्।
शतमिन्द्राग्नि सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः।।

मूर्ती को पीतवस्त्र से ढक देवे-

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऋचः सामानि जज्ञिरेछन्दाꣳसि जज्ञिरे
तस्माद्य जुस्तस्मादजायत।। वस्त्रं सर्मपयामि।।

दूसरी वेदी के ऊपर वस्त्र भगवान के आसन के लिए बिछायें-

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

वस्त्र के ऊपर प्रागग्र कुशाओं को बिछा देवे-

ॐ स्तीर्ण बर्हिःसुष्टरीमा जुषाणोरू पृथुः प्रथमानं पृथिव्याम्।।
देवेभिर्युक्तमेदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु।।

आचार्य यजमान द्वारा कुंकुम से रंगे हुये सूत्र या मौली से मूर्ति को वेष्टित करावे-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्स्वः।
वासो ऽअग्ने विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।

सूत्र से वेष्टित कर मूर्ति को आसन पर विराजमान कर देवें-

।। नेत्रोन्मीलन संस्कार ।।

स्वर्ण पात्र में मधु और घी डाल देवें-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरके ऽआसीत्।। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

घी और मधु को इन दो मंत्रो द्वारा अभिमंत्रित करे-

१. **ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।**
माध्वीर्नः सत्वोषधीः।।

२. **धृतेनांजन्त्सं पथो देवयानान् प्रजानन्वाज्यप्येतु देवान्। अनुत्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ता ৺ स्वधामस्मै यजमानाय धेहि।।** अभिमंत्रित घृत और मधु को स्वर्ण शलाका द्वारा मूर्ति के नेत्रों की कल्पना करें-

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

अथवा- **अग्निज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिज्योतिः सूर्य : स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योति र्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।**

नेत्रों की कल्पना कर मधुघृत का अंजन लगाये-

विश्वत श्चक्षुरुत विश्वतोमुखो वि श्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽ एकः।।

अंजन लगाकर नेत्रों के सामने ब्राह्मण कुमारी कन्या देव मूर्ती को दर्पण दिखावे-

ॐ रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः।
अश्वस्य वाजिन स्त्वाचि सीमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः।।

ब्राह्मण कुमारी को दक्षिणा तथा वस्त्रादि से यजमान सन्तुष्ट करें-

मूर्ति को जिस वस्त्र से ढका था उन्हें हटाकर मध्य वेदी के एकादश कलशों से स्नान करायें-

ॐ इमं मे वरुणश्रुधि हवमद्या च मृडय त्वाम वस्युराचके।

पुनः मूर्ति को पीताम्बर वस्त्र पहनावें -

ॐ तस्माद्यज्ञा0 मंत्र कह दूर्वा चढा देवे- **ॐ काण्डात्का0** मंत्र कह रक्त सूत्र से वेष्टित करे- **ॐ सुजातो0** मंत्र कहे। यज्ञ कुण्ड

में एक सौ आठ आहुति निम्न मंत्र से देवे-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात्॥

॥ देव महास्नान ॥

महास्नान के लिये आचार्य यजमान से संकल्प करावें-

ॐ अद्यैत्यादि अमुक मूर्तौ प्राण प्रतिष्ठापन योग्यता सिद्ध्यर्थ नाना द्रव्योदक कलशैः महास्नानं शुद्धिमहं करिष्ये।

आसन से भगवान की मूर्ति का उत्थान करें-

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

भगवान के वस्त्र तथा सूत्र को निकाल देवे तथा तीसरी वेदी के जो चार कलश जिनमें जल भरा है उनसे स्नान करावें-

१ **ॐ समुद्रेते हृदयमप्स्वन्तः संत्वा विशन्त्वोषधीरुतापः। यज्ञस्यत्वा यज्ञपते सूक्तौक्तौ नमोवाके विधेमयत् स्वाहा॥**

२ **ॐ या आपो दिव्या उतवा स्त्रवन्ति खनित्रिमा उतवायाः स्वयंजाः। समुद्रार्थाया शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥**

३ **ॐ या सा राजा वरुणोयाति मध्ये सत्यानुते अवपश्यं-जन्नाना। मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥**

४. **ॐ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा यासूर्ज मदन्ति।वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टता आपो देवीरिह मामवन्तु॥**

स्नान करवाकर देव मूर्ति पर दही दूर्वा हल्दि कुंकुम तथा अक्षत चढ़ायें-

प्रार्थना-

ॐ नमस्ते सुरेशानि प्रकृते विश्वकर्मणे।
प्रभाविताशेषजगद्धात्रि तुभ्यं नमो नमः॥

त्वयि सम्पूजयामीशं नारायणमनोमयम्।
रहिता शेष दोषैश्च ऋद्धियुक्ता सदाभव।।
सर्वसत्व मयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम्।
त्वामेवालं करिष्यामि त्वं वद्यो भवते नमः।।

तीसरी वेदी में जो बीस कलश हे उन से क्रमशः स्नान करायें-

१. **सप्तमृत्तिका के कलश से-** ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम्। अपा ॐ रेता ॐ सि जिन्वति।।

२. **शुद्धोदक से-** ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कभ्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद।।

३. **गोमय कलश से** -ॐ गन्ध द्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।

४ **शुद्धोदक से-** ॐ देवी रापो ऽ अपांनपाद्यो व ऽ ऊर्म्मिर्हविष्य ऽइन्द्रियावान् मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो मेषां भाग स्थ स्वाहा।।

५. **गोमूत्र कलश से**-ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।।

६. **शुद्धोदक से-** ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्ष्से।

७. **भस्मोदक से-** ॐ प्रसद्यभस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। स ॐ सृज्य मातृभिष्टवं ज्योतिष्मान् पुनरासदः।।

८. **शुद्धोदक से-** ॐ शंनो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्त्रवन्तु नः।।

९. **पंचगव्य के कलश से-** ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पय स्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।

१०. **पुनः शुद्धोदक से** - यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिवमातरः।।

११. क्षीर कलश से- ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा बाजस्य सङ्गथे।।

१२. शुद्धोदक से- ॐ तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।।

१३. दधि कलश से- ॐ दधिक्राब्णो ऽअकारिषं जिष्णोर श्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽ आयू ँ षितारिषत्।।

१४. शुद्धोदक से-ॐ युंजानः प्रथमं मनस्तत्वाय सविताधियः। अग्ने ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या ऽ अध्या भरत्।।

१५. घृतोदक कलश से- ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुधे सुपेशसा। द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽअजरे भूरिरेतसा।।

१६. शुद्धोदक से - ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनो बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

१७. मधु कलश से- ॐ मधु वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्ध वः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।

१८. शुद्धोदक से- ॐ आपोऽ अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्व ँ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत ऽ एमि।

१९. शर्करा कलश से- ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्य्ये सन्त ँ समहितम्। अपा ँ सरस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णामेषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

२०. शुद्धोदक से- ॐ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधना जनयन्तिरग्निम्। ततो देवाना ँ समवर्त्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

भगवान की मूर्ती को शुद्ध वस्त्र से पोंछ लें -

ॐ यज्ञायज्ञा वो ऽअग्नये गिरागिरा च दक्षसे। प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ꣳ सिषम्।।

मूर्ती के उवटन लगायें -

चावल, गेहू, मसूर, आवले आदि के चूर्ण से उवटन-

ॐ या ऽओषधीः सोमेराज्ञी विष्ठिताः पृथिवी मनु।
बृहस्पति प्रसूता ऽ अस्यै संदत वीर्य्यम्।।

यक्ष कर्दम का लेपन- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी।।

जटामांसी का अनुलेपन- तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिरान्ताभिचाकशीहि।।

तृतीय पक्ति के दो कलशों से-

१. ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।।

२. ॐ प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्य्येण मृगोन भीमः कुचरोगिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।

चतुर्थ पक्ति के दो कलशों के पंचामृत तथा चार जल के कलशों से स्नान करायें-

१. ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशे ऽभवत्सरित्।।

२. ॐ पयसो रूपं यद्यवा दघ्नो रूपं कर्कन्धूनि। सोमस्य रूपं वाजिन ꣳ सौमस्य रूप मामिक्षा।।

३. ॐ सं ते पया ꣳ सि समुयन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानो ऽ अमृताय सोम दिवि श्रवा ꣳ स्युतमानि धिष्व।।

४. ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिर ꣳ शुभि। भवानः सप्रथस्तमः सखावृधे।।

५. ॐ अपस्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भेसन् जायसे पुनः।।

६. ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽ अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥

पंचम पक्ति में रखे हुये चौदह कलशों से स्नान के मंत्र -

१. गंधोदक कलश से- ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। इश्वरीं सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।

२. कषायोदक कलश से- ॐ यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे। प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ॐ सिषम्॥

३. सर्वोषधी कलश के जल से- ॐ या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः। तासामसि त्वमुत्तमारं कामाय स ॐ हृदे॥

४. पुष्पोदक कलश से- ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अ श्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

५. उदक कलश से- ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ॐ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽ आदितये स्याम्॥

६. फलोदक के कलश से- ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा या श्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ॐ हसः॥

७. स्वर्णोदक के कलश से- ॐ हिरणमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। यो ऽसावादित्ये पुरुषः सो. सावहम्॥

८. श्रृगोदक कलश के जल से- ॐ हविष्मतीरिमा ऽ आपो हविष्मा ऽ आविवासति। हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्मा २ऽ अस्तु सूर्यः॥

९. धान्योदक कलश के जल से-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्य पाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुसे त्वा महीनां पयोऽसि॥

१०. सहस्र छिद्र के सहायक कलश से सहस्त्र छिद्र वाले कलश में जल डालकर स्नान करावें- **ॐ सहस्त्रस्य प्रमासि सहस्रस्य**

प्रतिमासि सहस्त्रस्योन्मासि सहस्त्रोऽसि सहस्त्रायत्वा।।

११. सर्वोषधी कलश के जल से-**या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामह ॐ शतं धामानि सप्त च।।**

१२. **पंचपल्लवोदक कलश से- ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किला सथयत् सनवथ पूरुषम्।।**

१३. **नवरत्न के कलशोदक से- ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्य क्रमीत्। दध द्रत्नानि दाशुषे।।**

१४. **तीर्थोदक के कलश से- ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शतद्रु स्तोमं स च तापरुष्ण्या। असिक्न्या मरुदवृधः वितस्तयाजीकीये श्रृणुया सुषोमया।।** पूर्व आदि दिशाओं में रखे हुये समुद्र संज्ञक आठ कलशों से स्नान -

१. समुद्र जल के कलश से- **ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शाचिष्ठया वृता।।**

२. क्षीर जल कलश से- **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवावाजस्य सङ्गथे।।**

३. दधि जल के कलश से- **ॐ दधि क्राष्णोऽअकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽआयू ॐषि तारिषत्।**

४. घृत जल कलश से- **ॐ घृतंमिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।**

५. इक्षुरसोदक कलश से- **ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पय स्वतिप्रदिशः सन्तुमह्यम्।।**

६. फलाशव कलश से- **ॐ देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र से सदः इशायै मन्यु ॐ राजानं बर्हिषादधुरिन्द्रियंवसुवने वसुधेयस्य व्यनुयज।।**

७. स्वादुजल कलश से- **ॐ स्वदिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः।।**

८. **नारियल जल के कलश से - ॐ सरस्वती योन्यां**

गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नि सुकृतं विभर्ति। अपा ॐ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्र ॐ श्रिये जनयंनप्सु राजा।। छटवीं पक्ति में रखे हुए **दश कलशों से स्नान मंत्र-**

१. कदम्ब पत्ते के कलश से- **त्रातार मिन्द्रमवितार मिन्द्र ॐ हवेहवे सुहव ॐ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ॐ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।**

२. शाल्मलिपत्र के कलश से- **ॐ त्वन्नो वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितम शोशुचानो विश्वा द्वेषा ॐ सि प्रमुग्ध्स्मत् स्वाहा।।**

३. जम्बू पत्र के कलश से-**ॐ यमाय त्वा मखायत्वा सूर्यस्य त्वा तप से। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ॐ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपो ऽसि।।**

४. अशोक पत्र के कलश से- **ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ स्तेन स्येत्यामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्यानमो देवि निर्ऋतेतुभ्यमस्तु।।**

५. पीपल के पत्र वाले कलश से- **ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः अहेडमानोवरुणेह बोध्युरुष ॐ समान आयुः प्रमोषीः।।**

६. आम्रपत्र के कलश से- **ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरॐ सहस्त्रिणीभीरुपयाहियज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयंपात स्वस्तिभिः सदानः।।**

७. वटपत्र के कलश से -**ॐ वय ॐ सोम व्रते तवमनस्तनूषुः विभ्रतः प्रज्जावन्तः सचेमेहि।।**

८ विल्वपत्र के कलश से- **ॐ ईशावास्यमिद ॐ सर्वं यत्किंच जगत्यांजगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।**

९. नागवल्लीपत्र के कलश से- **ॐ नमो ऽस्तु सर्पेभ्या ये केच पृथिवी मनु येन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यो सर्पेभ्यो नमः।**

१०. पलाश. पत्र के कलश से- **ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्वि**

सीमत् सुरुचो वेनऽआव। सवुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च व्विवः।।

शिवजी के लिंग या मूर्ती की प्रतिष्ठा हो तो ग्यारह पत्र रुद्राक्ष युक्त जल चढ़ावें-

रुद्राक्ष पत्र तथा जल- ॐ नमो बिल्मिने च कवचि ने च नमो वर्मिणे च वरुथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।।

।। सूक्त से स्नान ।।

विष्णु मूर्ती को पुरुष सूक्त शिव की मूर्ती या लिंग को रुद्र सूक्त से तथा यदि भगवती दुर्गा की मूर्ति हो तो श्री सूक्त का पाठ करे यजमान जल से स्नान करावे। स्नान के पश्चात् मूर्ति को स्वच्छ वस्त्र से पोछ लें।

भगवान की मूर्ती में भगवान के विराट रूप का ध्यान करें-

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखोवि श्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः।।

।। षडङ्गन्यास ।।

यजमान पुष्प लेकर मूर्ति के शरीर का स्पर्श करें-

ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिर से स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्।
ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्र त्रयाय वोषट्। ॐ अस्राय फट्।।

भगवान की मूर्ति का पंचोपचार से अथवा षोडशोपचार से पूजन कर लेवे-

घृतादिवास

भगवान की मूर्ति को उठाकर बड़े पात्र में रखे तथा यजमान घृत की धारा लगाये जब तक घृत से पूरी मूर्ति न डूब जाय तब तक घृत धार लगी रहे आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न मंत्र बोले-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम।।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽ आदिशो विदिश ऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुधे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽ अजरे भूरिरेतसा।। ॐ घृतेनांजन्त्सं पथो देवयानान् प्रजानन्वाजप्येतु देवान्। अनुत्वा सप्ते प्रदेशः सचन्ता ॐ स्वधा मस्मै यजमानाय धेहि।। ॐ घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वेर्देवेरनुमता मरुद्भिः। ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानास्मान्तसीते पयसाभ्या वबृत्स्व।।

उपरोक्त मंत्रो के बोल कर जब तक घृत धारा बहती रहे तब तक पुरुष सूक्त, रुद्र सूक्त अथवा श्री सूक्त का भी पाठ करे पुनः घृत से उठाकर मूर्ति को स्वच्छ वस्त्र के ऊपर रखें।

मूर्ति का उठाने का मंत्र-

ॐ उतिष्ठ तिष्ठ गोविन्द उतिष्ठ गरुडध्वज।
उतिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्य मंगलं करु।।

भगवान की मूर्ति को उठाकर पुरुष सूक्त, या रुद्र सूक्त से जलाभिषेक करें-

।। अन्नाधिवास ।।

भगवान की मूर्ति को अन्न राशी पर रखे तथा अन्न से मूर्ति को पूर्णरूप से ढक देवें आचार्य निम्न मंत्रों का उच्चारण करे-

ॐ अन्नपते ऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्र दातारं तारिष ऽ ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्प दे।। ॐधान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिम्मायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिग्टभ्णात्वच्छि द्रेणपाणिना चक्षुसे त्वा महीनां पयोसि।।

उपरोक्त मंत्रो को बोलकर ब्राह्मण पुरुष सूक्त रुद्र सूक्त अथवा श्री सूक्त का पाठ करे-

पुनः भगवान को अन्न से उठाकर सुन्दर वस्त्र के ऊपर रखे

निम्न मंत्र उठाते हुए कहे-

उतिष्ठ तिष्ठ गोविन्द उतिष्ठ गरुडध्वज।
उतिष्ठ कमलाकान्त त्र्यैलोक्य मंगलं कुरु।।

भगवान को उठाकर पुनः पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन कर लेवें।

यदि चाहें तो अन्यवास यथा- पुष्प, धूप- वस्त्र, फल, मिष्ठान, औषधी, पंचमेवा का भी अधिवास करवायें-

शय्याधिवास

अन्नवास से देव प्रतिमा को उठाकर मण्डप से बाहर लाकर रथ में बैठा यज्ञमण्डप की परिक्रमा अथवा नगर यात्रा जयघोष वाद्य यंत्रों के साथ मांगलिक गीत गाते हुए करें पुनः प्रतिमा को मण्डप में विराजमान कर शय्याधिवास करायें।

।। शय्या स्थापन ।।

पूर्व मुख मन्दिर या मण्डप में अग्निकोण, पश्चिम मुख मण्डप में वायव्य कोण उत्तर मुख मन्दिर में ईशान कोण दक्षिण मुख मन्दिर में नैर्ऋत्य कोण में शय्या स्थापित करें।

पुरुष सूक्त से प्रार्थना करते हुए पश्चात् निम्न मंत्रों का उच्चारण करें-

ॐ उतिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्रपाशूर्भवासचा।।
उतिष्ठोतिष्ठ गोविन्द उतिष्ठ गरुड़ध्वज।
उतिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु।।

अधिवास हेतु वेदी बनायें अक्षतों या गुलाल हल्दी आदि से अष्टदल बनाकर धान्य के ऊपर काष्टमयी सजाई हुई शय्या रखें अच्छे वस्त्र बिछाकर कुंमकुंम या रोली से स्वस्तिक बनाकर पूर्व मुख कुशायें रखें। इस प्रकार सजाई हुई देव प्रतिमा को शय्यावास करायें। पूर्वादि दिशाओं में इन देवताओं का पूजन करें-

विष्णु प्रतिमाओं में- पूर्वे-**ॐ विष्णवे नमः।** **दक्षिणे- ॐ मधु**

सूदनाय नमः
पश्चिमे - ॐ त्रिविक्रमाय नमः। उत्तरे- ॐ वामनाय नमः
आग्नेयां-हृषिकेशाय नमः। नैऋत्ये-केशवायनमः वायव्य ॐ पद्मनाभाय नमः। ऐशान्याम- ॐ दामोदराय नमः।

शिव प्रतिष्ठा में-
पूर्वे - ॐ शर्वाय नमः। आग्नेयम् - ॐ भवाय नमः
दक्षिणे - ॐ पशुपतये नमः। निऋतौ- ॐ ईश्वराय नमः।
पश्चिमे- ॐ उग्राय नमः। वायव्याम्- ॐ भीमाय नमः। उत्तरे हरये नमः।। ऐशान्याम ॐ महते नमः।

दुर्गा प्रतिष्ठा में-

पूर्वे - ॐ ब्राह्मयै नमः। आग्नेयम् - ॐ वैष्णव्यै नमः
दक्षिणे - ॐ माहेश्वर्यै नमः। निऋतौ- ॐ चामुण्डायै नमः।
पश्चिमे- ॐ कौमार्यै नमः। वायव्याम्- ॐ वाराह्यै नमः।
उत्तरे- ॐ इन्द्राण्यै नमः। ईशान्याम्- ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

भगवान विष्णु की प्रतिष्ठा में प्रतिमा को निम्न मंत्र के द्वारा निवेशन करायें-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पाᳬ सूरे स्वाहा।

शिव प्रतिष्ठा में-

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः।
शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।

दुर्गा प्रतिष्ठा मे :-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पात्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।

वस्त्र आच्छादन -

कपास से निर्मित वस्त्रों से देव प्रतिमा को ढक देवें-

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।।

निद्राकलश स्थापन-

देवता के शिरोभाग की तरफ हिरण्य सहित जल से भरा घड़ा वस्त्र से ढककर रख लेवें-

ॐ आपो देवी: प्रतिगृभ्णीत भस्मै तत्स्योने कृणुध्वꣳ सुरभाऽउलोके। तस्मै नमन्तां जनय: सुपत्निर्मातेव पुत्रम्बिभृताप्स्वनत्॥

प्रतिष्ठापन:-

ॐ आपो अस्मान् मातर: शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्व: पुनन्तु। विश्वꣳ हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्य: शुचिरापूत एमि। दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्।

मधुघृत से अभ्यञ्जन-

ॐ आप्यायस्वसमिन्तम सोम वि श्वेभिर ꣳ शुभि:।
भवान: सप्रथस्तम: सखावृधे॥

तिल व पीली सरसों के चूर्ण से अनुलेपन-

ॐ यां ते रुद्र शिवा तनूर घोरा ऽपापकाशिनी।
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

गन्धक्षतादि से अर्चन कर सफेद सूत से रक्षाबन्धन करें-

ॐ बृहस्पति परिदीया रथेन रक्षोहा मित्राँ अपबाधमान्न:।
प्रभञ्जन्त्सेना: प्रमिणो युधाजयंनस्माकमे द्ध्यविता रथानाम्॥

पैर नाभि तथा वक्षस्थल का स्पर्श-

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखोविश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् सं बाहुभ्यां धमति संपत त्रैद्यावा भूमी जनयन्देव एक:॥

देव प्रतिमा के दक्षिण भाग में छत्र व्यंजन चामर आसन दर्पण रत्न पैरों की जगह खड़ाऊ अगल-बगल में दो शान्ति कलश भक्ष्य भोज्य फल जलपात्र आदि स्थापित करें।

तदन्तर- देव रक्षा हेतु भष्म कुशा तिल देवता के चारों तरफ तीन बार विकरण करते हुए तीन रेखायें बनायें।

पूर्ववत इन्द्रादि दिक्पाल के नामानुसार बलि प्रदान कर हस्तप्रक्षालन करें।

हवन-

विष्णु संज्ञक देवताओं को निम्न मंत्र से एक सौ आठ अथवा अठाईस आहुति प्रदान करें-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।

रुद्र संज्ञक देवताओं को निम्न मंत्र से एक सौ आठ अथवा अठाईस आहुति प्रदान करें-

ॐ नमः शंभवाय मयोभवायं च नमः। शङ्कराय च मयस्काराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

देवी संज्ञक प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा में निम्न मंत्र से एक सौ आठ अथवा अठाईस आहुति प्रदान करें-

ॐ श्री श्चते लक्ष्मि श्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं म ऽ इषाण।।

।। न्यास प्रकरण ।।

ॐ अद्यैत्यादि0 देशकालौ संकीर्त्य अमुकदेवार्चाधिवासन कर्माणि देवकला सान्ध्यिर्थं प्रणवादिन्यासं करिष्ये।

हाथ में पुष्प लेकर देवताओं की प्रतिमा का स्पर्श करते हुए देवता का अंगन्यास करें।

1. प्रणवन्यास- ॐ अं नमः पादयो। ॐ उं नमः हृदये। ॐ मं नमः ललाटे। इति प्रणवन्यास।

2. व्याहृतिन्यास- ॐ भूः नमः पादयोः ॐ भुवः नमः हृदये। ॐ स्वः नमः ललाटे । इति व्याहृतिन्यास।

3. मातृका का न्यास- ॐ अं नमः तालुके। ॐ आं नमः मुखे। ॐ इं दक्षिण नेत्रे। ॐ ईं वाम नेत्रे। ॐ उं दक्षिण कर्णे। ॐ ॐ वामकर्णे। ॐ ऋ दक्षिण गण्डे। ऊँ ॠं वामगण्डे। ॐ लृ दक्षिण नासापुटे। ॐ लृ वामनासापुटे। ॐ एं ऊर्ध्वोष्ठे ॐ ऐं अधरोष्ठे ॐ ओं ऊर्ध्वदन्तपक्तौ। ॐ औं अधः दन्तपक्तौ ॐ अं ललाटे। ॐ अः जिह्वायाम्। ॐ यं त्वचि। ॐ रं चक्षुषो। ॐ लं नासिकायाम्।

ॐ व दन्तेषु। ॐ शं श्रोत्रयो। ॐ षं उदरे। ॐ सं कटौ। ॐ हुं हृदये। ॐ लं नाभ्याम्। ॐ लं लिंगे। ॐ पं फं बं भं मं दक्षिण बाहौ। ॐ तं थं दं धं नं वामबाहौ ॐ टं ठं डं ढं णं दक्षिण जंघायाम्। चं छं जं झं ञं वाम जंघायाम्।
कं खं गं घं ङं सर्वाङ्गुलीषु। इति मातृकान्यासः।।
उपरोक्त न्यास सभी देवताओं की प्रतिष्ठा में करना चाहिये।

।। ऋक्षन्यास।।

ॐ रविचन्द्राभ्यां नेत्रयोः। भौमाय नमः हृदये। बुधाय नमः स्कन्धे। बृहस्पतये नमः जिह्वायाम्। शुक्राय नमः लिंगे। शनैश्चराय नमः ललाटे। राहवे नमः पादयो। केतवे नमः केशेषु। रोहिणीभ्यो नमः हृदये। मृगशिरशे से नमः शिरसि। आर्द्रायै नमः केशेषु। पुनर्वसवे नमः ललाटे। पुष्याय नमः मुखे। आश्लेषाभ्यो नमः नाशायाम्। मघाभ्यो नमः दन्तेषु। पूर्वफाल्गुणीभ्यो नमः दक्षिण कर्णे। उत्तराफाल्गुणीभ्यो नमः वाम कर्णे। हस्ताय नमः हस्तव्यो। चित्राये नमः दक्षिण भुजे। स्वात्यै नमः वाम भुजे। विशाखाभ्या नमः हृदये। अनुराधाभ्यो नमः स्तनयो। जेष्ठाभ्यो नमः दक्षिण कुक्षौ। मूलाय नमः वाम कुक्षो। पूर्वषाढाभ्यो नमः कटिपार्श्वयो। उत्तरषाढाभ्यो नमः लिंगे। श्रवणधनिष्ठाभ्यो नमः वृषणयो। शतभिषाभ्यो नमः नेत्रे। पूर्वभाद्रपदाभ्यो नमः दक्षिण उरौ। उत्तरा भाद्रपदाभ्यो नमः वामउरौ। रेवतीभ्यो नमः दक्षिणजंघाभ्याम्। अश्विनीभ्यां नमः वामजंघायाम्। भरणीभ्यो नमः दक्षिणपादे। कृतिकाभ्यो नमः वामपादे। ध्रुवाय नमः नाभ्याम्। सप्तर्षिभ्यो नमः कण्ठे। मातृमण्डलाय नमः कटिदेशे। विष्णुपदेभ्यो नमः पादयो। नागवीथ्यै अंगवीव्यै नमः वनमालादेशे। ताराभ्ये नमः रोमकूपेषु। अगस्त्याय नमः कौस्तुभे।
न्यास करते हुए पहले ॐ का उच्चारण करें।

।। इति ऋक्षन्यास।।

।। कालन्यास।।

चैत्राय नमः शिरसि। वैसाखाय नमः मुखे। ज्येष्ठाय नमः हृदये। आषाढाय, श्रावणाय नमः स्तनयोः। भाद्रपदाय नमः उदरे। आश्विनाय नमः कट्याम्। कार्तिकाय मार्गशीर्षाय नमः ऊर्वोः। पौषायमाघाय नमः जङ्घयोः। फाल्गुनाय नमः पादयोः। संवत्सराय नमः दक्षिणोर्ध्वबाहौ। परिवत्सराय नमः दक्षिणोधो बाहौ। इडावत्सराय नमः दक्षिणोर्ध्वात्। प्रादक्षिणेन चतुर्ष बाहुषु। पर्वेभ्यो नमः सन्धिषु। ऋतुभ्यां नमः लिंगे अहोरात्रेभ्यां नमः अस्थिषु। क्षणाय लवाय काष्ठायै नमः रोमसु। कृताय नमः मुखे। कामायै त्रेतायै नमः हृदये। द्वापराय नमः नितम्बे। कलियुगाय नमः पादयोः। मन्वतरेभ्यो नमः बाहवे। परायपरार्धाय नमः जंघयोः। महाकल्पाय नमः शरीरे। उदगयनायदक्षिणायनाय नमः पादयोः। ′ विषुवतये नमः सर्वांगुलीषु।

।। इति कालन्यासः।।

।। वर्णन्यासः।।

ब्राह्मणाय नमः मुखे। क्षत्रियाय नमः बाहवे। वैश्याय नमः ऊर्वोः। शूद्राय नमः पादयो। संकरेभ्यो नमः पादाग्रे। अनुलोमजेभ्यो नमः सर्वांग सन्धिषु। गोभ्यो नमः मुखे। अजाविकाभ्यो नमः हस्तयोः। ग्राम्यारण्यपशुभ्यो नमः कुक्षिदेशे।

।। इतिवर्णन्यासः।।

।। तोय न्यासः।।

मेघेभ्यो केशेषु। अभ्रेभ्यो रोमषु। नदीभ्यो सर्वगात्रेषु समुद्रेभ्यो कुक्षिदेशे।

इति तोयन्यासः।

।। वेद विद्या न्यासः।।

ॐ ऋग्वेदाय नमः शिरसि। यजुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे। सामवेदाय नमः वामभुजे। सर्वोपनिषद्भ्यो नमः हृदये। इतिहास पुराणेभ्यो

नमः जंघयोः। अथर्वांगिरसे नमः नाभौ। कल्प सूत्रेभ्यो नमः पादयोः। व्याकरणाय नमः वक्त्रे। तर्केभ्यो नमः कण्ठे। मीमांसायै निरूक्ताय नमः हृदये। छन्दोज्योतिः शास्त्रेभ्यो नमःनेत्रयोः। गीतभूत-शास्त्रेभ्यो नमः श्रोत्रयोः। आयुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे। धनुर्वेदाय नमः वामभुजे। योगशास्त्रेभ्यो नमः हृदये। नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयोः। वश्यतन्त्राय नमःओष्ठयोः।

।। इति विद्या न्यासः।।

।। वैराज न्यासः ।।

ॐ दिवे नमः मूर्घ्नि। सूर्यचन्द्रलोकाभ्यां नमः नेत्रयोः। अनिल लोकाय नमः घ्राणे। व्योम्ने नमः नाभ्याम्। समुद्रेभ्यो नमः वस्तिदेशे। पृथिव्यै नमः पादयोः।

।। इति वैराज न्यासः।।

।। देवयोनि न्यासः ।।

हिरण्यगर्भाय नमः शिरसि। कृष्णाय नमः केशेषु। रुद्राय नमः ललाटे। यमाय नमः भृकुट्याम्। अश्विभ्यां नमः कर्णयोः। वैश्वानराय नमः मुखे। महद्भ्यो नमः घ्राणे। वसुभ्यो नमः कण्ठे। रुद्रेभ्यो दन्ते। सरस्वत्यै नमः जिह्वायाम्। इन्द्राय नमः दक्षिण-भुजे। वलये नमः वामभुजे। प्रह्लादाय नमः दक्षिण स्तने। विश्वकर्म्मणे नमः वामस्तने। नारदाय नमः दक्षिणे कुक्षौ।

।। इति देवयोनि न्यासः।।

।। एकादश मूर्ति न्यासः ।।

मत्स्याय नमः मूर्घ्नि। कूर्माय नमः पादयोः। नृसिंहाय नमः ललाटे। वाराहाय नमः जंघयोः। वामनाय नमः मुखे। परशुरामाय नमः हृदि। रामाय नमः वाहुषु। कृष्णाय नमः नाभ्याम्। बुद्धाय नमः बुद्धौ। कल्किने नमः जान्वोः। केशवाय नमः शिरसि। नारायणाय नमः मुखे। माधवाय नमः ग्रीवायाम्। गोविन्दाय नमः वाह्वोः। विष्णवे

नमः हृदि। मधुसूदनाय नमः पृष्ठे। त्रिविक्रमाय नमः कट्याम्। वामनाय नमः जठरौ। श्रीधरहृषीकेशाभ्यो नमः जंघयो। पद्मनाभाय नमः गुल्फयोः। दामोदराय नमः पादयोः।

।। इति मूर्तिन्यासः।।

।। क्रतुन्यासः ।।

अश्वमेधाय नमः मूर्ध्नि। नरमेधाय नमः ललाटे। राजसूयाय नमः मुखे। गोसवाय नमः कण्ठे। द्वादशाहाय नमः हृदि। अहीनेभ्यो नमः नाभौ। सर्वजिदभ्यो नमः दक्षिण कट्याम्। सर्वमेधाय नमः वामकट्याम्। अग्निष्टोमाय नमः लिंगे। अतिरात्राय नमः वृषणयोः। आप्तोर्यामाय नमः ऊर्वोः। षोडशिने नमः जान्वोः। उक्थाय नमः दक्षिण जंघायाम्। वाजपेयाय नमः वामजंघायाम्। अत्यग्निष्टोमाय नमः दक्षिण बाहौ। चातुर्मास्याय नमः वामबाहौ।। सौत्रामण्ये नमः हस्तेषु। पशिवष्टिभ्यो नमः अंगुलीषु। दर्शपौर्णमास्यां नमः नेत्रयोः। सर्वेष्टिभ्यो नमः रोमकूपेषु। स्वाहाकाराय नमः वषट्वाराय नमः स्तनयोः। पंचमहायज्ञेभ्यो नमः पादांगुलीषु। दक्षिणाग्नये नमः हृदये। आवहनीयाय नमः मुखे। गार्हपत्याय नमः नाभौ। वेद्यै नमः उदरे। प्रवर्ग्याय नमः भूषणेषु। सवनेषु नमः पादयोः। इध्यमेभ्यो बाहुषु। दर्भेभ्यो केशेषु।।

।। इति क्रतुन्यासः।।

।। गुण न्यास ।।

धर्माय नमः मूर्ध्नि। ज्ञानाय नमः हृदये। वैराग्य नमः गुह्ये। ऐश्वर्याय नमः पादयोः। इति गुण न्यासः।।

।। आयुधन्यासः ।।

अथ विष्णुप्रतिष्ठायाम्- खड्गाय नमः शिरसि। शार्ङ्गाय नमः मस्तके। मुसलाय नमः दक्षिणमुखे। हलाय नमः वामभुजे। चक्राय नमः नाभ्यां जठरे नमः पृष्ठे च। शंखाय नमः लिंगे-वृषणे च। गदायै नमः जंघयोः जाघ्राणेश्च। पदमाय नमःगुल्फयोः पादयोः।

।। इत्यायुधन्यासः।।

2. विष्णोः शक्ति न्यासः- लक्ष्म्यै नमः ललाटे। सरस्वस्त्यै नमः मुखे। रत्यै नमः गुह्ये। प्रीत्यै नमः कण्ठे। कीर्त्यै नमः दिक्षु। शान्त्ये नमः हृदि। तुष्ट्यै नमः जठरे। पुष्ट्यै नमः सर्वत्र।

3. अथ विष्णोः द्वादशाक्षर न्यासः- ॐ पादयोः। नं जानुनोः। मों गुह्ये। भं नाभौ। गं हृदये। वं कण्ठे। तें मुखे। वां नेत्रयोः। सुंभाले। दे मूर्ध्नि। वां दक्षिणपाश्र्वे। यं उत्तर पाश्र्वे।

शिव प्रतिष्ठायां आयुध न्यासः- वज्राय शिरसि। शक्तये मस्तके। दण्डाय दक्षिणभुजे। खड्गाय वामभुजे। पाशाय पृष्ठदेशेषु। ध्वजाय नाभ्याम्। अङ्कुशाय लिंगे वृषणयोश्च। त्रिशूलाय जठरनाभिजान्वोश्च। पद्माय गुल्फ पादयोः। इत्यायुद्य न्यास॥

शिवस्य शक्तिन्यासः- वामायै ललाटे। ज्येष्ठायै मुखे। रुद्राण्यै गुह्ये। काल्यै कण्ठे। कलविकरण्यै दन्तेषु। बलायै हृदये। बलप्रमथनायै जठरे। सर्व भूतदमनायै नाभौ। उन्मनायै सर्वांगेषु।

शिवस्य अंगन्यासः- ॐ नमः हृदये। नं नमः शिरसि। मं नमः शिखायै वषट्। शि नमः कवचाय हुम्। वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। यं नमः अस्त्राय फट्॥

शिवस्य द्वादशाक्षर मन्त्रन्यासः- ॐ नमो भगवते शिवाय नमः। ॐ नमः पादयोः। नं नमो जानुनि। मो गुह्ये। भं नाभौ। गं हृदये। वं कण्ठे। तें मुखे। शिं नेत्रयोः। वां ललाटे। यं शिरसि। नं दक्षिणपाश्र्वे। मं वाम पार्श्र्वे॥

गणेश प्रतिष्ठायाम्- वीजपूराय शिरसि। गदायै मस्तके। धनुषे वामभुजे। त्रिशूलाय दक्षिणभुजे। चक्राय नमः नाभ्याम्। कमलाय नमः जठरे। पाशाय पृष्ठे। उत्पलाय नमः लिंगे वृषणेच। वाणाय जंघयोः। अंकुशाय नमः जानुनोः। विषाणाय गुल्फयोः। रत्नकलाय पादयो। इति गणेशस्य आयुध न्यासः।

गणेश शक्ति न्यासः- तीव्रायै ललाटे। ज्वालिन्यै मुखे। नन्दायै गुह्ये। भोगदायै कण्ठे। कामरूपिण्यै दन्तेषु। उग्रायै हृदये। तेजोवत्यै नाभौ। सत्यायै उदरे। सर्वविघ्नविनाशायै सर्वांगेषु॥

गणपतेरंगन्यासः-ॐ श्री ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्वीजस्य गां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड़जीवस्य गीं नमः शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं क्लीं गं षड्जीवस्य गूं शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं षड्जीवस्य गैं कवचाय हुम्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्जीवस्य गौं नेत्रत्रयाय वोषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लों गं अस्त्राय फट्।

गणेशस्य मन्त्रन्यासः- ॐ मूर्ध्नि। ॐ नमः शिखायाम्। ॐ श्रीं ललाटे। ॐ ह्रीं दक्षभ्रुवि। ॐ क्लीं वामभ्रुवि। ॐ ग्लों दक्षिण नेत्रे। ॐ गं वामनेत्रे। ॐ ण दक्षिण श्रोत्रे। ॐ पं वाम श्रोत्रे। ॐ तं दक्षनाशापुटे। ॐ यें वामनाशा पुटे। ॐ सं ओष्ठयोः। ॐ वां तालुदेशे। जं नाभौ। ॐ नं उदरे। ॐ भं कट्याम्। ॐ शं लिंगे। ॐ वं वृषणे। ॐ मां ऊर्वोः। ॐ नं जंघयो। ॐ मं गुल्फयोः। ॐ स्वां पादयोः। ॐ ह्रां अंगुलीषु।

दुर्गाप्रतिष्ठायाम्ः- त्रिशूलाय शिरसि। खड्गाय मस्तके। चक्राय दक्षिण भुजे। वाणाय वामभुजे। शक्तये नाभौ। खेटकाय गुह्ये। चापाय जंघयोः। पाशाय जानुनोः। अंकुशाय गुल्फयो। परशवे पादयोः। इति दुर्गायाः आयुध न्यासः।।

देव्याः शक्तिन्यासः- प्रभायै ललाटे। उमायै मुखे। जयायै गुह्ये। सूक्ष्मायै कण्ठे। विशुद्धायै दन्तेषु। नन्दिन्यै हृदये। सुप्रभायै नाभौ। विजयायै उदरे। सर्वसिद्धिप्रदायिन्यै सर्वांगेषु।

देव्याः अंगन्यासः- ॐ ह्रां दुर्गायै हृदयाय नमः। ह्रीं दुर्गायै शिरसे स्वाहा। ह्रू दुर्गायै शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं दुर्गाये कवचाय हुम्। ह्रौं दुर्गायै नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः दुर्गायै अस्त्राय फट्।।

दैव्या मन्त्रन्यासः-ॐ नमो मूर्ध्नि। ह्रीं मुखे। क्लीं कण्ठे। चांहृदि। मुं दक्षिणपार्श्वे। डांवामपार्श्वे। यैं नाभौ। विं गुह्ये। च्चें पादयोः।।

मूलमन्त्र न्यासः- ॐ हृदयं हृदये। शिरः शिरसि। शिखा शिखायां। कवचं सर्वत्र। नेत्रं नेत्रयोः। ऊर्वं करयोः। मुक्ताहराय दक्षिण स्तने। श्री वत्साय वामस्तने। कौस्तुभाय उरसि। वनमालायै कण्ठे।।

॥ अथ प्रतिमायां जीव न्यासः ॥

अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्यं ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दादि चैतन्य देवता आं वीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अमुक देव प्रतिमायाः प्राणप्रतिष्ठायां जीव न्यासे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मा विष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुः सामछन्दोभ्यो नमः मुखे। प्राणाख्य देवतायै नमौ हृदि। आं वीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे॥

ॐ कं खं गं घं ङः अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वांकाशात्मने आंहृदयाय नमः। ॐ चं छं, जं झ ञ शब्द स्पर्श रूपरस गन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक् चक्षुः जिह्वा प्राणात्मने ॐ शिखायै वषट्। ॐ तं थं दं धं नं एं वाक् पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्। ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादान विहरणोत्सर्गा नन्दात्मने ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनो बुद्धहङ्कारचितात्मने अः अस्त्राय फट्। ॐ आं ह्रीं क्रौं ॐ आं विष्णो यं रं लं वं शं षं सः विष्णों र्वा अमुक देवस्य प्राण। अं विष्णौ र्वा अमुक देवस्य सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं अमुक देवस्य वाङ्मनः चक्षु श्रोत्र जिह्वाघ्राण प्राणाः इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥ इति मंत्र वार त्रयं पठेत्॥

ततः प्रतिमायाः हृद्यंगुष्ठं दत्वा जपेत्।

प्रतिमा के हदय का स्पर्श करें-

ॐ अस्ये प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाक्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै माम हेति च कश्चन।
इति पुरुषभावं सम्भावयित्वा-

प्रतिमा में जीव का ध्यान करते हुये गायत्री मंत्र जपैं-

ॐ इति प्रणवेन सन्निरुध्य संजीवं ध्यात्वा
मूलमन्त्रं गायत्रीमन्त्रं च देव कर्णे जपित्वा।
स्वागतं देव देवेश मदभाग्यात् त्वमिहागतः।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत् परिपालय॥

अथ जीव न्यासे तत्त्व न्यास –

ॐ मं जीवात्मने नमः। ॐ मं प्राणात्मने नमः शरीर व्यापकत्वेन न्यसेत। ॐ बं बुद्ध्यात्मने नमः। फं अहङ्कारात्मने नमः। ॐ पं मनः आत्मने नमः हृदये। ॐ नं शब्द तन्त्रात्मने नमः शिरसि। ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः वक्त्रे। ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने नमः हृदये। ॐ थं रस तन्मात्रात्मने नमः अंसयोः। ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने नमः पादयोः। ॐ णं श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयोः। ॐ ढं त्वगात्मने नमः त्वचि। ॐ डं चक्षुरात्मने नमः चक्षुषोः। ॐ ठं जिह्वात्मने नमः जिह्वायाम्। ॐ टं घ्राणात्मनेनमः घ्राणे।

अथ द्वादशाक्षर नारायणस्य मूर्त्तिन्यास–ॐ केशवाय नमः शिरसि। ॐ नं नारायणाय० मुखे। ॐ मो माधवाय० ग्रीवावाम्। ॐ भं गोविन्दाय० कण्ठे। ॐ गं विष्णवे० पृष्ठे। ॐ वं मधुसूदनाय० कुक्षौ। ॐ तें त्रिविक्रमाय० कट्याम्। ॐ वां वामनाय० जंघयोः। ॐ सुं श्रीधराय० वामगुल्फे। ॐ दें हृषीकेशाय० दक्षिण गुल्फे। ॐ वां पद्मनाभाय० वामपादे। ॐ यं दामोदराय० दक्षिणपादे। इति नारायण द्वादशाक्षरन्यासः।

नारायणमूर्त्तौ अष्टांग विष्णुन्यासः–ॐ हृदयाय नमः हृदये। ॐ विष्णवे नमः शिरसि। ॐ ब्रह्मणे० शिखायाम्। ॐ माधवाय० कवचे। ॐ चक्रिणे० नेत्रयोः। ॐ चक्रिणे नमः अस्त्राय फट्।। ॐ शंभवे० गायत्र्यै० दक्षिण–नेत्रे। विजयाय० सावित्र्यै० वामनेत्रे। चक्रिणे० चक्रनेत्रायै पिंगलास्त्रं सर्वदिक्षु।

नारायणमूर्त्तौ पुरुषसूक्त न्यासः– पुरुषसूक्त के मन्त्रों का पाठ करते हुए अंगन्यास करें।

ॐ सहस्त्रशीर्ष० इतिपादयोः। पुरुष एव० जंघयोः। एतावानस्य० जानुनोः। त्रिपादूर्ध्व० ऊर्वोः। ततोविराड० वृषणयोः। तस्माद्यज्ञाद्० कट्याम्। तस्माद्यज्ञात०नाभ्याम्। तस्मादश्वा० हृदि। तं यज्ञं० स्तनयोः। यत्पुरुषं० वामाङ्के। ब्राह्मणोऽस्य० मुखे। चन्द्रमा मनसो० चक्षुषोः।

नाभ्या0 कर्णयो:। यत्पुरुषेण0 भ्रुवो:। सप्तास्या0 भाले। यज्ञेन यज्ञ0 शिरसि। इति पुरुषसूक्तन्यास:।

अथ नारायणमूर्तौ उत्तर नारायण न्यास:- अद्भ्य: संभृत0-हृदये। वेदाहमे0-शिरसि। प्रजापति0 शिखायाम्। योदेवेभ्य:0 कवचे। रुचं ब्राह्मम्0- नेत्रयो:। श्रीश्चते0 अस्त्रम्। (इन पूरे मंत्रों का पाठ करें)।

अथ शिवस्य पञ्चदश ब्रह्मन्यास:- अंगुष्ठयो: ईशानम्। तर्जन्यो0 तत्पुरुषम्। मध्यमयो: अघोरम्। अनामिकयो: वामदेवम्। कनिष्ठिकयो: सद्योजातम्। कनिष्ठिकयो: हृदयम्। अनामिकयो: शिर:। मध्यमयो:- शिखायाम्। तर्जन्यो: कवचम्। अंगुष्ठयो: अस्त्रम्।। इति विन्यस्य परेण तेजसा संयोज्य हं इति कवचेन अवगुण्ठ्य सर्वकर्मसु नियोजयेत्।

एवमेव देवस्य करन्यासं कृत्वा लिंग मुद्रां वध्वा:- ॐ ईशान: सर्वविद्यानामीश्वर:। सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति-ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्।। इति मन्त्रेण ईशान नाम्नीं मुष्टिं वद्ध्वा तत: अंगुष्ठाग्रेण रुद्रमुद्रया मूर्ध्नि।।१।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नोरुद्र: प्रचोदयात्- इति तर्जनी-अंगुष्ठययोगात् तत्पुरुषं मुखे।।२।। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य:। सर्वेभ्य: सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य:। इति मध्यमा-अंगुष्ठयोगेन हृदि अघोरम्।।३।। ॐ वाम देवाय नमो ज्येष्ठ्यानम: श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नम: कालाय नम: कलविकरणाय नमो वलविकरणाय नमो वलाय नमो बलप्रमथनाय नम: सर्वभूत दमनाय नम: उन्मनाय नम: इति अंगुष्ठ-अनामिका योगेन गुह्ये।।४।। ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नम:। भवं भवे नातिभवे भवस्व-मां भवोद्भवाय नम:।। इति कनिष्ठिका- अंगुष्ठ योगेन पादौ आरभ्य मस्तकान्तम्।। यावन्मूर्ति व्यापकत्वेन ब्रह्म न्यसेत्।।

शिवस्य कलान्यासः-

ईशानः सर्वविद्यानां नमः-शशिनं उपरितनं मूर्ध्नि। ईश्वरः सर्वभूतानां इति कल्पितं चन्द्रोभयदलं पूर्व-मूर्ध्नि॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रणोऽधिपतिः इति हृष्टां दक्षिणमूर्ध्नि। शिवो मे अस्तु नम इति मरीच्याम् उत्तरमूर्ध्नि। सदाशिवो नमः इति ज्वालिनीं पशिमम्मूर्ध्नि॥

तत्पुरुष कला चतुष्टय न्यासः-

तत्पुरुषाय विद्महे नमः इति पूर्ववक्त्रे शान्तिम्। महादेवाय धीमहि-इति दक्षिण वक्त्रे-विद्याम्। तन्नोरुद्र इत्युत्तरवक्त्रे प्रतिष्ठाम्। प्रचोदयात् इति पश्चिम वक्त्रे धृतिम्। इति तत्पुरुषस्य कला चतुष्टय न्यासः।

अघोर कलान्यास-

अघोरेभ्योः उरसि। अथ घोरभ्यो मोहायै० ग्रीवायाम्। घोराय नमः क्षमायै- स्कन्धयोः। घोरतरेभ्यो निद्रायै० नाभौ। सर्वेभ्यः सर्वव्याध्यै० कुक्षौ। सर्वशर्वेभ्यो मृत्यवे नमः पृष्ठे। नमस्ते अस्तु क्षुधायै० वक्षसि। रुद्ररूपेभ्यः तृषायै० उरसि। इत्यष्टा घोर कला न्यासः।

वामदेव कला-न्यासः-

ॐ वामदेवाय नमः गुदे। ज्येष्ठाय नमः रक्षां लिंगे। श्रेष्ठाय नमः रतिं दक्षिणोरौ। रुद्राय नमः इति कामां वामोरौ। कालाय नमः कट्याम् दक्षिणजानौ। कलविकरणाय नमः संजीवनीम्- वामजानौ। बलविकरणाय नमः क्रियाम् दक्षिण जंघायाम्। बलाय नमः बुद्धिं वामजंघायाम्। बलविकरणाय नमः छायां दक्षिण स्फिचि। बलप्रमनाथाय नमः धात्रीं वामस्फिचि॥ सर्वभूतदमनाय नमः भ्रामणीं कट्याम्। मनसे नमः शोषिणीं दक्षिणपार्श्वे। उन्मनाय नमः ज्वरां वामपार्श्वे इति त्रयोदश कलान्यासः॥

सद्योजात कला न्यास -

सद्यो जातं प्रपद्यामि नमः सिद्धिं दक्षिणे पादे। सद्योजाताय वै नमः ऋद्धिं वामपादे। भवे नमः जयां दक्षिणपाणौ। अभवे नमः लक्ष्मीं वामपाणौ। नातिभवे मेधां नासायाम्। भवस्व मां नमः कान्तिं

शिरसि। भवाय नमः स्वधां दक्षिणबाहौ। उद्भवाय नमः प्रभां वामबाहौ। इति सद्योजात कलाष्टक न्यासः॥

हंस हंसः हृदयादि न्यासः- ॐ हंस संसेति हृदयाय नमः। ॐ हंस हसेति शिरसे स्वाहा। ॐ हंस हंसेति शिखायै वषट्। ॐ हंस हंसेति कवचाय हुम्। ॐ हंस हंसेति नेत्र-त्रयाय वौषट्। हंस हंसेति अस्त्राय फट् इति शिवन्यासः॥

अथ षोडश तत्त्वन्यासः- रामतत्त्वाय नमः। विद्यातत्त्वाय0। नीति तत्त्वाय0। तर्क तत्त्वाय0। काल तत्त्वाय। माया तत्त्वाय0। बुद्धि तत्त्वात्मने0 पुरुषतत्त्वाय नमः। सदाशिव० तत्त्वाय0। शक्तितत्त्वाय0। शिव तत्त्वाय। इति षोडश न्यासः।

॥ वेदमंत्र न्यास॥

अथन्यासः- ॐ अग्नि मीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्त्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥१॥ पादयोः।

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रारर्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमध्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशतमाघशः ॐ सो ध्रुवा अस्मिन् गौपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥२॥ गुल्फयोः॥

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि वर्हिषि॥ जंघयोः॥३॥

ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। जानुनोः॥४॥

ॐ सुपर्णोसि गुरुत्मान् त्रिवृत्ते शिरोगायत्रञ्चक्षुर्वृहद्रथंतरपक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दा स्यङ्गानि यजूꣳषि नाम। सामते तनूर्वामदेव्यं यज्ञाय यज्ञियं पुच्छधिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वपत। ऊर्वोः॥५॥

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥ जठरे॥६॥

ॐ दीर्घायुत्वा बलाय वर्च्चसे सुप्रजास्त्वाय सहसा अथो जीव

शरदः शतम्। हृदये ।।७।।
ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण। कण्ठे।।८।।
ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे-हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रं ꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। वक्त्रे।।९।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव वन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। स्तनयोः नेत्रयोश्च।।१०।।
ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृतमाजातमग्निम्। कवि ꣳ सम्राजमतिथिं जानाना मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः। मूर्ध्नि।।११।।
इति वेदमंत्र न्यास।।

देवीमूर्तौ षोडश न्यासनन्तरं निवृत्तिन्यासः-

ॐ ह्रीं अं निवृत्त्यै नमः शिरसि। ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै० मुखे। ॐ ह्रीं इं विद्यायै० दक्षिणनेत्रे। ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै० वामनेत्रे। ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै० दक्षिण श्रोत्रे। ॐ ह्रीं ऊं दीपकायै० वामश्रोत्रे। ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै० दक्षिणनासा पुटे। ॐ ह्रीं मोचिकायै नमः वाम नासापुटे ॐ ह्रीं लृपरायै दक्षकपोले ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै० वामकपोले। ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै० ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतान्यै० अधोदन्तपंक्तयौ। ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै० ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्रीं व्यापिन्यै० अधरोष्ठे। ॐ ह्रीं अं सुरूपायै० जिह्वायाम्। ॐ ह्रीं अनन्तायै० कण्ठे। ॐ ह्रीं कं सृष्टयै० दक्षबाहुमूले। ॐ ह्रीं खं ऋध्यै० दक्षकूपरे। ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै० दक्षमणिबन्धे। ह्रीं घं मेधायै दक्षकरागुलीमूलेषु। ह्रीं ङंकान्त्यैदशागुल्यग्रेषु। ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै वाम बाहुमूले। ॐ छं द्युत्यै वामकूपरे। ॐ ह्रीं जं स्थिरायै० वाममणिबन्धे। ॐ ह्रीं झं स्थितायै वामांगुलिमूले। ॐ ह्रीं ञं सिध्यै० वामांगुल्यग्रेषु। ॐ ह्रीं टं जरायै० दक्षपादमूले। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै० दक्षजानुनि। ॐ ह्रीं डं शक्त्यै० दक्षगुलके। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्य्यै० दक्षपादांगुलिषु। ॐ ह्रीं णं रत्यै वामपादमूले। ॐ ह्रीं तं

कामिन्यै० दक्षपादमूले। ॐ ह्रीं थं रदायै० वामजानुनि। ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै० वामगुल्फे। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै० वामपादांगुलिमूले। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै० वामपादागुल्यग्रेषु। ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै० दक्षिण कुक्षौ। ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै० वामकुक्षे। ॐ ह्रीं बं अभयायै० पृष्ठे। ॐ ह्रीं भं निद्रायै० नाभौ। ॐ ह्रीं मं मात्रे० उदरे। ॐ ह्रीं यं शुद्धायै० हृदि। ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै० कण्ठे। ॐ ह्रीं लं कृपायै० ककुदि। ॐ ह्रीं वं उल्कायै० स्कन्धयोः। ॐ ह्रीं शं मृत्यवे दक्षिण करे। ॐ ह्रीं षं पीतायै० वाम करे। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै० दक्षिणपादे। ॐ ह्रीं हं अरुणायै० वामपादे। ॐ ह्रीं त्रं असितायै० मूर्द्धादिपादान्ताय। ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै० पादादि मूर्द्धान्तम्।

इति तृतीयो निवृत्तिन्यासः

देवमूर्त्तौ वशिन्यासदिन्यास

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं लॄं एं ऐं ओं औ अं अः क्लीं वासिनी वाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ कं खं गं घं ङं. क्लीं ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै ऐश्वर्य्यै नमः ललाटे। ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनी वाग्देवतायै० भ्रूमध्ये। ॐ टं ठं डं ढं णं क्ल्यूं विमला वाग्देवतायै० आधारे। ॐ शं षं सं हं क्षं श्रीं कौलिनी वाग्देवतायै० सर्वांगे। ॐ मं जीवात्मने नमः। ॐ भं प्राणात्मने नमः। ॐ वं बुद्धि हृदात्मने नमः। ॐ श्रीं फं अहंकारात्मने नमः॥ इति वशिन्यादि न्यासः।

॥ अथ प्रासादाधिवासनम् ॥

नवीन प्रासाद का अधिवासन-संकल्प

अस्मिन् प्रासादे देवता प्रतिष्ठान योग्यता
सिद्ध्यर्थं स्नपपूर्वकं प्रासादाधिवासनं करिष्ये।

प्रासाद के आगे इक्यासी पद वास्तु का मण्डल अक्षतों से बनाकर उन पर सप्तधान्य पुञ्जों को बनाकर जल से भरें इक्यासी घड़ों को लाकर उस पर नौ के मध्य-मध्यों को जानकर उन मध्यों में नौ कुंभों को पूर्वादिक्रम से मध्यभागों में विन्यास करें। मध्य कुम्भ में-

१. शमी-उदुम्बुर- अश्वत्थ-चम्पक-अशोक-पलाश-प्लक्ष-न्यग्रो -कदम्ब-आम्र-विल्व और अर्जुन के वृक्ष के पत्ते, इन बारह वृक्षों के पत्तों को **ॐ सोमाय वनस्पत्यर्न्गताय नमः।** इस मंत्र से पत्तों को छोड़ देवें।

२. पूर्वादि मध्य कलश में पद्मक-गोरोचन-दूर्वांकर-दर्भपिञ्जून सफेद सरसों पीली सरसों सफेद चन्दन लाल चन्दन-जाती-पुष्प (चमेली) और नन्द्यावर्त ये दस वस्तुएं **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः।** इस मन्त्र से इन में छोड़ दें।

३. अग्नि कोण के मध्य कलश में यव-ब्रीहि-तिल-सुवर्ण-चांदी नदी तट की मृत्तिका-भूमि पर न गिरा हुआ गोबर इन सात वस्तुओं को **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः** इस मन्त्र से छोड़ दें।

४. दक्षिण दिशा वाले मध्य कुंभ में सहदेवी-विष्णुक्रान्ता-भृंगराज-महोषधि -शमी-शतावरी-गुडूची और श्यामाक इन आठ वस्तुओं को **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः।।** इस मंत्र से छोड़ दें।

५. नैर्ऋत्य कोण वाले मध्य कुम्भ में केला-सुपारी-नारिकेल-विल्व-नारंगी-मातुलिंग-वेर और आंवला इन आठ वस्तुओं को **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः।** इस मंत्र से छोड़ दें।

६. पश्चिम वाले मध्य कुम्भ में- शमी उदुम्बर-अश्वत्थ-न्यग्रोध और पलाश के कषाय को **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः।** इस मन्त्र से छोड़ दें।

७. उत्तर दिशा वाले मध्यकलश में शंख पुष्पी-सहदेवी-बला शतावरी-कुमार-गुडूची वच और व्याघ्री इन आठ वस्तुओं को **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः।** इस मन्त्र से छोड़ दें।

८. ईशान कोण में मध्यस्थित कलश में वल्मीक आदि सात मृत्तिका को **ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः।।** इस मन्त्र से छोड़ दें। इसके पश्चात् **ॐ हिरणयवर्णा०** इस मन्त्र से मध्य के नौ कलशों का अभिमन्त्रण करें।

शेष कलशों को गन्धोदक से भर कर मध्यमादि कलशों के

चारों ओर पूर्वादि क्रम से आठ-आठ रखकर मूल से अभिमन्त्रण कर सूत्र से वेष्टन कर भीतर और बाहर प्रासाद को पंचगव्य से प्रोक्षण कर **(मूद्‌र्धानं दिवः)** इस मन्त्र से वल्मीक मृत्तिका से लेपन कर (समुद्र ज्येष्ठा) इस मन्त्र से ईशान कोण में स्थित मृत्तिका कुम्भ से स्नान करवायें **(यज्ञा यज्ञावः)** इस मन्त्र से वायव्य कोण स्थित कषाय कुम्भ से स्नान करवायें। **(पयः पृथिव्यां)** इस मन्त्र से पश्चिम दिशा वाला पंचगव्य वाले कुंभ से स्नान करवायें **(या फलिनीः)** इस मन्त्र से नैर्ऋत्य कोण वाले कुम्भ से स्नान करावे। **(हंसः शुचिपद)** इस मन्त्र से उत्तर दिशा वाले मूल कुम्भ से स्नान करावें। पूर्व वाले मध्य कुम्भ से **(विष्णोरराटमसि)** इस मंत्र से स्नान करावें। अग्नि कोणस्थ मध्य कुम्भ से **(सोमे राजानं)** इस मंत्र से स्नान करावें। **(विश्वतश्चक्षु)** इस मन्त्र से दक्षिण दिशा वाले मध्य कुम्भ से स्नान करावें। **(नमोऽस्तु सर्पेभ्यः)** इसके मंत्र से मध्य कुम्भ कलश से स्नान करावें।

॥ प्रासाद के शिखर का स्नान ॥

(इदमापः) इस मन्त्र से आठ कलशों द्वारा पूर्वादि क्रम से प्रासाद और शिखर को स्नान करावें।

यदि इक्यासी कुम्भों को इकट्‌ठा न कर सके उसके अभाव में गन्धोदक पूरित एक कलश से **(देव्याय कर्मणे)** से प्रासाद का प्रक्षालन करें। फिर सूत्र से वेष्टन कर स्नान करवाकर देवरूप प्रासाद की कल्पना कर पताका आदि से सुशोभित कर गन्ध आदि से पूजन कर उसके नीचे देव के मंत्र से प्रासाद का अधिवासन करें। **(ॐ ह्रीं)** इस मंत्र से सब देवों की कल्पना कर प्रार्थना करें कि जब तक सूर्य-चन्द्र आदि नक्षत्रगण स्थिर हैं, तब तक यहां स्थिर रहें। यही प्रासाद का अधिवासन है। ऐसा करने के बाद विष्णुपिण्डिका मंत्र या शिव पिण्डिका मन्त्र से अट्‌ठाइस आहुतियां दें। यहां बारह ब्राह्मणों को भोजन का विधान है। ऐसा करके रात्रि को जागरण करें। प्रासाद को सांष्टांग प्रणाम करें। पूर्ण मंत्रों के साथ अधिवासन निम्न प्रकार होगा-

॥ अथ प्रासाद-अधिवासनम् ॥

प्रासाद प्रतिष्ठा-

तत्र प्रासादाग्रे एकाशीतिं पदमण्डलं अक्षतैः कृत्वा तेषु पदेषु सप्तधान्यपुञ्जानं कृत्वा जलपूर्णान् एकाशींतिकुम्भान् आहृत्य तत्र नव-नवक-अंकानां मध्ये मध्यमं कोष्ठं ज्ञात्वा तेषु धान्य पुञ्जेषु कुम्भान् मध्य पूर्वादिक्रमेण न्यस्य।

मध्यकुम्भे शमी-उदुम्बर-अश्वत्थ-चम्पक-अशोक-पलाश-प्लक्ष-न्यग्रोध कदम्ब-आम्र-विल्व-अर्जुन वृक्ष- सम्भवं पल्लव द्वादशम्-ॐसोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः इति निक्षिपेत्।

ततः पूर्वकलशादिषु-

पद्मक-गोरोचन-दूर्वांकुर-दर्भपिञ्जूल-श्वेत-पीत-सित
रक्त-चन्दन-जाती-कुसुम-नन्द्यावर्तम् इति दशकम् पूर्वे।

३. यव-व्रीहि-तिल सुवर्ण-रजत-समुद्रगामिनी- कूलमृत्तिका-भूम्यसंपृष्टगोमयम् इति सप्तकम् आग्नेय।

४. आग्नेय-सहदेवी विष्णु क्रान्ता-भृंगराज-महाबधि-शमीशतावरी गुडूची-श्यामाकम्-इत्यष्टकम् याम्ये।

५. कदली-पूंगीफल-नारिकेल-विल्व-नारंग-मातुलंग-वदर-आम्रकम् इति फलाष्टकम् नैर्ऋत्ये।

६. मन्त्रसाधितं पंचगव्यम्। वारुणे-शमी-उदुम्वर-अश्वत्थ-न्यग्रोध-पलाश-कषाय पञ्चकम् वायव्ये।

७. शंखपुष्पी-सहदेवी-वला-शतावरी-कुमारी गुडूची-वचा-व्याघ्री इति मूलाष्टकम्। सौम्ये।

८. सप्तमृत्तिका-ईशान कुम्भे। एवं निधाय-ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदों म आवह-इति मध्यकुम्भान् अभिमन्त्र्य। शेषान् गन्धोदकेन पूरयित्वा मूलमन्त्रेण अभिमन्त्र्य रक्तसूत्रेण आवेष्ट्य अन्तः बहिः अधस्ताद्-ऊर्ध्वं च्र सर्वत्र प्रासादं पंचगव्येन संप्रोक्ष्य-इति मन्त्रेण बल्मीकमृदा विलिप्येत्। ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत-आजातमग्निम्।

कवि ँसम्राजमतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥१॥
ततः समुद्रादूर्मि र्मधुमां-२ उदार दुपा ँ शुना सममृतत्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः। इति
मन्त्रेण ईशान्दिक् संस्थेन मृत्तिका कुम्भेन प्रासादं स्नापयेत्।
ॐ यज्ञायज्ञावो अग्नेय गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतञ्जातवेदसम्प्रियं
मित्रन्न श ँसिषम्। ३. वायव्येन कषाय कुम्भेन।
ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वती
प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ४. इति वारुणेन पञ्चगव्यकुम्भेन।
ॐ या फलिनीर्याऽ अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी बृहस्पतिः।
प्रसूतास्तान्नो मुञ्चन्त्व ँहसः। ५. इति नैर्ऋतेन फलकुम्भेन।
ॐ ह ँ सः शुचिषद्वसु रन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोण
सत नृषद्वरं सदृत सद्व्योम सद्व्जागोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्वृहत्।
६. इति सौम्यस्थमूलाष्टक कुम्भेन॥
ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः स्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो
र्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥७. इति पूर्वेण कुम्भेन॥
ॐ सोमः राजानमवसेऽग्नि मन्वारभामहे। आदित्यान् विष्णु ँ
सूर्यं ब्रह्माणञ्च बृहस्पति ँ स्वाहा॥
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः॥ ९. इति
याम्यदिक्स्थेन कुम्भेन।
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि
तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। १०. इति मध्य कुम्भेन।

अथ प्रासादशिखरस्नपनम्।

ॐ इदमापः प्रवहतावद्यञ्च मलं च यत्। यच्चाभिदुद्रोहान्नृतं
यच्च शेषे अभीरुणम् आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु।
इत्यष्टाभिः। पूर्वादिक्रमेण प्रासादं सशिखरं स्नापयेत्।
ॐ दैव्याय कर्म्मण शुन्धध्वं देवयज्जायै यद्वोऽशुद्धः
पराजघ्नुरिदम्वस्तच्छुन्धामि। इक्कासी कलश न हो तो नौ या एक

कलश से स्नान-

एकाशीति कुम्भासम्भवे तु गन्धोदक पूरितैः नवकलशैः एकेन कलशेन वा स्नापयेत, प्रासादं च सम्प्रोक्ष्य प्रासादं सूत्रेणावेष्ट्य स्नापयित्वा देवरूपं प्रासादं चिन्तयित्वा पताकादिना शोभयित्वा गन्धादिना पूजयित्वा स्थापयाधस्ताद्देवं संचिन्त्य वक्ष्यमाण मन्त्रेण प्रासादमधिवासयेत्। तत्रमन्त्रः- ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नोज्ज्वलाकृते। यावच्च्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरोभव।

॥ इति प्रसाद अधिवासन॥

॥ प्रासाद वास्तु पूजनम् ॥

इत्यधिवास्य ॐ रक्षोहणं वल गहनं वैष्णवीमिदमहन्तं-इति पूर्वोक्त रक्षोघ्नसूक्तेन- ॐ अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमिः संस्थिताः। ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ भूतानि राक्षसाः वापि यत्र तिष्ठन्ति केचन। ते सर्वेऽप्यपसर्पन्तु विष्णोर्यागं करोम्यहम्॥ इति मन्त्राभ्यां भूतसंघं श्वेत सर्षपैः निस्सार्य-ॐ वास्तुपुरुषाय नमः- इति वास्तुं संपूज्य-पूर्व स्थापित पञ्च कषाय-पञ्चामृत-पञ्चपल्लव-पञ्चगव्य-पञ्चरत्न सर्वौषधी-कलश जलेन कुशैश्च सर्वतः प्रासादं प्रोक्ष्य प्रासादं स्पृष्ट्वा प्रासादन्यासं कुर्यात्।

पांच कलशों के जल का प्रोक्षण करे देवें।

॥ प्रासादन्यासम् ॥

ॐ ह्रां पृथिवी तत्त्वाय नमः। ॐ ह्रां पृथिवी तत्त्वाधिपतये श्री कूर्माय नमः। ॐ ह्रां अप्तत्त्वाय नमः अप्तत्त्वाधिपतये जलेशाय नमः। ॐ ह्रीं तेजस्तत्वाय नमः तेज स्तत्वाधिपयेत्विषां निधिपतये नमः। ह्रां वायुतत्वाय नमः। ॐ ह्रीं वायु तत्त्वाधिपतये मातरिश्वने नमः। ॐ ह्रां आकाशतत्त्वाय० आकाश तत्त्वाधिपतये सूक्ष्माय नमः इति प्रसाद पादेषु॥

ॐ ह्रां रूप तन्मात्राधि नमः ॐ ह्रां रूपतन्मात्राधिपतये नमः-भानुमते नमः। ॐ ह्रां रस तन्मात्राय० रसतन्मात्राधिपतेय वलतत्त्वाय

नमः। ॐ ह्रां शब्दतन्मात्राय० शब्द तन्मात्राधिपतये जलदाय नमः। ह्रां स्पर्श तन्मात्राय स्पर्शतन्मात्राधिपतये सूक्ष्मनादाय नमः। इति प्रासाद जंघयोः।

कटि प्रदेश में - वाक्तत्त्वाय० वाक्तत्त्वाधिपतये दुन्दुभये०। ॐ पाणितत्त्वाय० पाणितत्त्वाधिपतये समादानाय०। ॐ पादतत्त्वाय० पाद तत्त्वाधिपतये संक्रमाय०। ॐ पायुतत्त्वाय० पायुतत्त्वाधिपतये विसर्गाय नमः। ॐ उपस्थत्त्वाय० उपस्थतत्त्वाधिपतये आनन्दाय नमः।

अथ प्रासाद नाभि में - ॐ ह्रां श्रोत्रतत्त्वाय० श्रोत्रतत्त्वाधिपतये व्योमाय नमः। ॐ ह्रां त्वक्तत्त्वाय० त्वक्तत्त्वाधिपतये सर्वांगाय नमः। ॐ चक्षुस्तत्त्वाय० चक्षुस्तत्त्वाधिपतये आकाशाय नमः। ॐ रसना तत्त्वाय० रसनातत्त्वाधिपतये महावक्त्राय नमः। ॐ घ्राण तत्त्वाय० घ्राण तत्त्वाधिपतये विलुण्ठाय नमः।

अथ प्रासाद कण्ठ- ॐ मनस्तत्त्वाय० मनस्तत्त्वाधिपतये संकल्पाय नमः। ॐ बुद्धितत्त्वाय० बुद्धितत्त्वाधिपतये बुद्ध्ये नमः।

ॐ अहंकार तत्त्वाय० अहंकार तत्त्वाधिपतये अहंकृतये नमः॥

ॐ चित्ततत्त्वाय० चित्ततत्वाधिपतये मनसे०॥

अथद्वार मध्ये- प्रकृतितत्त्वाय नमः प्रकृति तत्त्वाधिपतये पितामहाय नमः।

प्रासाद के मध्य- (हृदये) पुरुषतत्त्वाय० पुरुष तत्त्वाधिपतये विष्णवे नमः।

प्रासाद वक्त्रे- ॐ कला तत्त्वाय० कला तत्त्वाधिपतये क्रतु-ध्वजाय०। ॐ विद्यातत्त्वाय० विद्यातत्त्वाधिपत्तये गुरवे नमः॥

प्रासाद कलश- ॐ सदाशिवतत्त्वाय० सदाशिव तत्त्वाधिपतये अजेशाय नमः।

प्रासाद के कलश के ऊपर- ॐ चक्रायुध चिह्नेभ्यो नमः। ॐ ह्रां सं सत्त्वाय नमः, रं जरसे नमः, तं तमसे नमः, मं बह्निमण्डलाय नम। ॐ सोम मण्डलाय नमः। ॐ अर्क मण्डलाय नमः। इति

संपूज्य प्रणवेन व्याहृतिभिः उपचारान् अथ आचरेत। इति प्रासाद न्यासं कृत्वा ऋत्त्विग्भिः सह कुण्डे तत्त्व होमं कुर्यात्। घृताक्ततिलैरेव जुहुयात्- तिल से हवन घी युक्त-
ॐ ह्रां पृथ्वी तत्त्वाय स्वाहा। ॐ पृथिवी तत्त्वाधिपतये कूर्माय स्वाहा- इत्यादि पूर्वोक्त प्रसादन्यासमन्त्रैः तत्त्वहोमः कुर्यात्। होमान्ते-अनेन कृतेन तत्त्व होमेन लक्ष्मीकान्तः प्रीणातु-इति देवाय निवेदयेत।
ततो वहिर्दिगीशेभ्योऽघोर मन्त्रेण माषान्न-बलिं दत्त्वा क्षेत्रपालाय भूतेभ्यश्च दत्त्वा आचम्य मण्डपं प्रविशेत्।। पूर्ववत्।।

।। अथ देवालय शिखर कलशप्रतिष्ठा ।।

आचार्यो मण्डपस्योत्तर-भागे स्वस्तिक मण्डलं लिखित्वा यजमान-ऋत्विक्सहितौ यत्र कट्यां शिल्पिभिः कलशसंघट्टनं कृतं तत्र गत्वा पञ्चभिः कलशैः शिखर कलशं संस्नाप्य तत्रैव ॐ मनोजूति र्जुषतामा०- इति मंत्रेण प्रतिष्ठाप्य लोकपालेभ्यो बलिं दत्त्वा आचम्य कलशं तैलेन अभ्युक्ष्य चन्दनादिभिरभ्यर्च्य त्रिसूत्र्यावेष्ट्य वामहस्ते गृहीत्वा शान्तिमंगलतूर्यघोषेण स्नानमण्डपमानयेत्- आनीय स्वस्तिकोपरि भद्रासनं तस्योपरि स्थापयेत्। तस्य पुरतः पुण्याहवाचनं अथवा शान्ति पाठं कृत्वा ॐ घृतं घृतपावानः ० इति मन्त्रेण घृतेन अभ्यज्य ॐ द्रुपदादिवमुमुचान०
इति मंत्रेण यव-मसुर-हरिद्रा-पिष्टेन उद्वर्त्य उष्णोदकेन प्रक्षाल्य ॐ मर्धानं दिव-इति बल्मीक मृत्तिकया उपलिप्य- ॐ या दिव्याः आपः पयसा सम्बभूबुःया अन्तरिक्ष उत्पार्थि वीर्या। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिव ँ स्योनः सुहवाः भवन्तु।। इस प्रकार गंधयुक्त जल से स्नान करवायें।
देविक कोणस्थैः कलशैः चतुर्भिः ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषुमानो अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्रभामिनो

वधीर्हविष्मन्तः सद्मित्वा हवामहे। इति प्रथमेन।
ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोः ध्रुवोसि वैष्णव मसि विष्णवे त्वा।। इति द्वितीयेन।
ॐ सोमः ᳬ राजान मवसेऽग्नि मन्वारभामहे। आदित्यान् विष्णु सूर्य-ब्रह्माणं च बृहस्पतिः स्वाहा। इति तृतीयेन।।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो वाहुरुत विश्वतस्पात। सम्बाहुभ्यां धमति संपतत्रैः द्यावाभूमि जनयन्न देव एकइति चतुर्थेन।
ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्। इति शुद्धोदकेन स्नापयित्वा
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय इति।
द्वादशाक्षरेण मूलेन वाऽर्चयित्वा गन्धाद्यैः संपूज्य वस्त्रै राच्छाद्य शान्तिपाठं पठित्वा ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः० इति मन्त्रेण उत्थाय मण्डप देवालय प्रादक्षिण्येन मण्डपमानीय पश्चिम द्वारेण प्रविश्य देवसमीपे भद्रासने निवेश्य गन्धादिना संपूज्य भक्ष्यभोज्यादिना परिपूर्य ॐ विश्वतश्चक्षु इति मन्त्रं पठित्वा संकलीकृत्य आचार्यः घृत-दधि-क्षीर-मधुभिः पृथक्-पृथक् ॐ त्र्यम्बकं यजामहे- इति मन्त्रेण अष्टोत्तर शतं हुत्वा शान्तिकलशे संस्रवं निक्षिप्य तेनोदकेन पाद-नाभि-गुदा-अक्षि-शिरांसि कलशस्य क्रमेण स्पृशेत्।
कलशे पुरुषसूक्तं विन्यस्य कलशं गन्धादिना संपूज्य बलिं दत्त्वा प्रासादमारुह्य शान्ति मंगल-तूर्य-जय स्वनैः कलशं प्रासाद मस्तकमानीय क्षणं विश्राम्य सुमुहूर्ते प्रासादे द्वादशाक्षरेण। ॐ अजिघ्रकलशं मह्यन्त्वा विशन्त्विद। पुनरूर्जा निवर्तस्व सान सहस्त्रध क्षारू धारा पयस्वती। पुनर्माविशताद्रयिः। इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य तदुपरि वस्त्रेणावेष्ट्य अस्त्रेण हुं फट् इति मन्त्रेण तस्योपरि न्यसेत। तस्मिन् कलशे चक्रं हिरणमयं वा ताम्रमयं स्थापनीयम्। सूर्य-लक्ष्मी विरञ्चीनां पद्मम्। शंकरस्य त्रिशूलम्। भूतादि निवारणार्थं आयुधानि विन्यसेत्। शिल्पितं कलशं स्थिरीकृत्य शुभवारिणा संस्थाप्य गन्ध

पुष्पैः पूजयित्वा प्रासादात् उत्तीर्य भूमौ साष्टांगं प्रासादं प्रणमेत।
विशेष- यदि मन्दिर के कलश की स्थापना पहले कर दी गई हो, तब लगे हुए कलश का पूजन आदि विधान वही करना चाहिये।

॥ प्रासादोत्सर्गः रात्रौ जागरण-विधानं च ॥

कर्ता आचमन आदि क्रियाओं को करके मास-पक्ष आदि को कहकर **"इमं शिला-इष्टका दार्वादि निर्मित वलभी-जगती प्राकार-परिवार, गोपुरपरिवार, देवतालयसंयुतं तत्तद् देवता लोकावाप्ति कामः कुलद्वयानुग्रहाणां अमुक देवता प्रीतये अहमुत्सृजामि।** इससे कुश जल और यव को छोड़कर देवता को नमस्कार करें।

ॐ सर्वभूतेभ्यः उत्सृष्टः प्रासादोऽयं मयार्जितः। रमन्तु सर्वभूतानि छाया संश्रयणादिभिः॥

इसके बाद सायंकालीन बलि देकर वेदघोष पुराण पाठ आदि करके आचार्य के साथ यजमान रात्री को जागरण करे।

॥ अथ अचल प्रतिष्ठा कर्म ॥

जिस वेदी पर मूर्ति की स्थापना करनी हो- पहले उसकी पूजा करनी चाहिए। यदि कूर्मशिला, ब्रह्मशिला या पिण्डिका का निर्माण हो चुका है तो- इस शिला का पूजन इस प्रकार करें-

ॐ नमो व्यापिनि स्थिरे अचले ध्रुवे ॐ श्रीं लं स्वाहा- मंत्रेण यथाशक्तिः संपूज्य प्रार्थयेत्-त्वमेव परमा शक्तिः त्वमेवासन-धारिका। शिवाज्ञया त्वया देवि स्थातव्यमिह सर्वदा॥ इति प्रार्थ्य ततः आसन शिलायां पूजयेत्- वर्णाध्वने नमः पदाध्वने नमः मंत्राध्वने नमः । भुवनाध्वने नमः। तत्त्वाध्वने नमः। सकलाध्वने नमः। इति

आसन-स्थानस्थां कूर्मशिलां संपूज्य पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा प्रणमेत। इति शिलां स्थिरीकृत्य देवपत्नी लिंगकेन मन्त्रेण पिण्डिकां अभिमन्त्रयेत्।

तत्र विष्णुश्चेत्- ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीः ० इति मन्त्रं पठेत्।

यदि शिवश्चेत्- ॐ आयंगौ पृश्निरक्रमीद० इति मन्त्रं पठेत्। ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी वभूवुषि सहस्त्राक्षरा परमे व्योमन्। ॐ जातवेदसे० इत्यादि मन्त्रान् पठेत्।

तदन्तर ब्रह्मशिला के ऊपर के भाग में या कूर्म शिला के ऊपर भाग में। श्वभ्र (गर्त) पिण्डिका को पूर्व-पश्चिम मुख प्रासाद में उत्तर प्रणाली और दक्षिणोत्तर मुख में, पूर्व प्रणाली को ध्रुवसूक्त से रखकर देव-पत्नी लिंगक मन्त्र से पिण्डिका का अभिमन्त्रण करें। उसमें विष्णु पिण्डिका का स्थापना में "**श्रीश्चते**" से रुद्रपिण्डिका स्थापना में **गौरीर्मिमाय** से, सूर्य की स्थापना में, "**उषस्तच्चित्राणाम्**" से गणेश पिण्डिका स्थापना में **पावमानः सरस्वती०** से, देवी पिण्डिका में, "**जातवेदसे सुनवाम**" इस मन्त्र का प्रयोग करें तदन्तर पिण्डिका में तत्त्व न्यास करें।

ततः तत्त्व न्यासं कुर्यात्। ॐ आत्म तत्त्वाय नमः आत्मतत्त्वाधि पत्यै क्रियाशक्त्यै नमः। ॐ विद्या तत्त्वाय नमः विद्या तत्त्वाधि पत्यै ज्ञान शक्त्यै नमः। ॐ शिवतत्वाधिपत्यै इच्छाशक्त्यै नमः। इति तत्वन्यासः। प्रतितत्वं मूर्ति-लोकपालान् विन्यसेत्। ततः आधारशक्त्यै नमः इति न्यस्य-ॐ अनन्तासनादि-वह्नि तत्त्वान्तपीठ देवताभ्यो नमः इति पीठपूजां निवर्त्य आसन शक्तिभ्यां नमः। इयुक्त्वाऽभ्यर्च्य प्रार्थयेत् सर्वदेव-मयीशानि त्रैलोक्यह्लादकारिणी। त्वां प्रतिष्ठाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते। यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेषा वसुन्धरा। तावत्त्वं देवदेवेशि मन्दिरेऽस्मिन् स्थिराभव। पुत्रानायुश्च लक्ष्मीं च अचलामजरा मराम्। अभयं सर्वभूतेभ्यः कुरु देवि नमोऽस्तु ते।। इति पार्वतीं लक्ष्मीं च प्रार्थ्य देव प्रार्थयेत्। ॐ प्रबुध्य श्व महाभाग देव-देव जगत्पते। मेघश्याम गदापाणे वुध्यस्व कमलेक्षण। बुध्यस्व भूधरानन्त वासुदेव-नमोऽस्तु ते। ॐ नृसिंहाय उग्ररूपायं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा- इति प्रार्थ्य।

तदन्तर प्रति तत्त्व में पिण्डिका में मूर्तिपति लोकपालों का न्यास करें।

।। पिण्डिका में तत्त्व न्यास ।।

तदन्तर प्रतितत्त्व में, पिण्डिका में मूर्ति, मूर्तिपति, लोकपालों का न्यास करे- **पृथ्वीमूर्तये नमः। इन्द्राय नमः १। अग्निमूर्तये नमः। अग्निमूर्त्यधिपतये नमः पशुपतये नमः अग्नये नमः२। यजमान मूर्तये नमः। यजमान मूर्त्यधिपतये उग्राय नमः यमाय नमः३। सूर्य मूर्तये नमः। सूर्य मूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः। नैर्ऋतये नमः४। जलमूर्तये नमः। जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः। वरुणाय नमः५। वायु-मूर्तये नमः। वायुमूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः। कुवेराय नमः७। आकाशमूर्तये नमः। आकाशमूर्त्यधिपतये भौमाय नमः ईशानाय नमः।।८।। सर्वदेव प्रतिष्ठासु मूर्तिपास्तु एते एव हि।।**

इसके बाद पिण्डिका में मन्त्रों द्वारा गन्धाक्षत आदि से अर्चन करें। तदन्तर प्रार्थना करें।

।। पिण्डिका में मन्त्र द्वारा पूजन ।।

तदन्तर पिण्डिका में **ॐ आधारशक्त्यै नमः। अनन्तासनतत्त्वेभ्यो नमः। आसन शक्तिभ्यो नमः**, इन वाक्यों को कहकर गन्धाक्षत से अर्चन कर प्रार्थना करें-

सर्व देवमयीशानि त्रैलोक्याह्लाद कारिणि।
त्वां प्रतिष्ठापयाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते।।१।।
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेषा वसुन्धरा।
तावत्त्वं देव देवेशि मन्दिरेऽस्मिन् स्थिरा भव।।२।।
पुत्रानां ऽऽयुष्मतो लक्ष्मीमचलामजरामृताम्।
अभयं सर्व भूतेभ्यः कर्तुर्नित्यं विधेहि भो।।३।।
विजयं नृपतेः सर्वलोकानां क्षेममेव च।
सुभिक्षं सर्व वस्तूनां कुरु देवि नमो नमः।। इति प्रार्थयेत्।।

तदन्तर गर्त आदि में स्वर आदि की स्थापना करे।

पिण्डिका में षोडश स्वर- आदि की स्थापना

हाथ से शिला का स्पर्श करके मध्य में- **ॐ नमः१।** उसके बाहर-**अं नमः। आं नमः। इं नमः। ईं नमः। उं नमः। ऊं नमः। ऋं नमः। ॠं**

नमः। लृं नमः। लॄ नमः। एं नमः। ऐं नमः। ओं नमः। औं नमः। अं नमः। अः नमः। इन सोलह स्वरों का विन्यास करें। उनके चारों तरफ व्यंजनों का विन्यास करें- **ॐ कं नमः। खं नमः। गं नमः। घं नमः। ङं नमः। चं नमः। छं नमः। जं नमः। झं नमः। ञं नमः। टं नमः। ठं नमः। डं नमः। ढं नमः। नमः। णं नमः। तं नमः। थं नमः। दं नमः। धं नमः। नं नमः। पं नमः। फं नमः। बं नमः। भं नमः। मं नमः। यं नमः। रं नमः। लं नमः। वं नमः। शं नमः। षं नमः। सं नमः। हं नमः। क्षं नमः।**

तदनन्तर बाह्य परिधि में और उसके मध्य चार परिधियों में पूर्वादि से आठ दिशाओं से पूर्व ईशान के मध्य में क्रम से नौ छिद्रों में पूर्व दिशा में आवरण पूजा करें।

प्रथमावरण में-

यव, ब्रीहि, मटर, प्रियंगु, तिल, माष, निवार, शालि। पूर्व और ईशान के मध्य में पीली सरसों।

द्वितीयावरण में-

फिर पूर्वादि क्रम से ऊपर के छिद्रों में- वज्र, मौक्तिक, पन्ना, शंख, स्फटिक, पुष्पराग (पुखराज) चन्द्रकान्त, नीलम और पूर्व और ईशान के मध्य में ऊपर वाले छिद्रों में पद्मराग।

तृतीयावरण में-

पूर्वादि क्रम में मनशिला, हरिताल, अञ्जन, कासी, सौराष्ट्री, गोरोचन, गेरु, पूर्व और ईशान मध्य में पारा।

चतुर्थावरण में-

पूर्व आदि क्रम से ऊपर वाले छिद्रों में सुवर्ण, चांदी, लोहा, तांबा, रांगा, कांसा, पीतल, पूर्व और ईशान के मध्य में तीक्ष्ण लोह।।

पंचम आवरण में-

पूर्वादि क्रम से सफेद चन्दन, लाल चन्दन, अगर, अर्जुन, ऊशीर, वैष्णवी, सहदेवी, लक्ष्मणा। सोम और ईशान के मध्य में पंचमावरण में द्रव्य का प्रक्षेप नहीं होता।

विशेष- बीजों के अभाव में यवों को, रत्नों के अभाव में वज्र को, धातुओं के अभाव में हरताल को, ताम्र आदि के अभाव में सुवर्ण को, औषधियों के अभाव में सहदेवी को रखना चाहिये।

देवता का दिग्बन्धन- **ॐ नरसिंह उग्ररूपाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुं फट्**'' इस मन्त्र से देवता का दिग्बन्धन करें।

प्रबोधक मन्त्र- जिस देवता की स्थापना हो-उस उस देवता के अनुसार मूर्तियों पर देवता से प्रार्थना करें।

देवता के लिए अर्घ्यदान- जल, दूध, कुशाग्र तिल, चावल एवं पीली सरसों और पुष्प को शंख में रखकर मुद्रा से देवता के लिये अर्घ्य दें। तदनन्तर देवता को उठाकर **''उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते'' ॐ रथे तिष्ठत्''** इस मन्त्र से रथ पर बिठा कर आचार्य आगे हो, यजमान पीछे हो- प्रासाद का भ्रमण करवा कर शान्ति पाठ करते हुए प्रासाद में रखें। रथ से उतार कर प्रासाद द्वार के सम्मुख पीठ पर देवता को स्थापित करवाए। लिंग प्रतिमा हो तो अर्घ्य देकर प्रासाद में प्रवेश करवा दें। ध्रुव सूक्त का पाठ करें।

इसके बाद मण्डप के उत्तर से पूर्वकल्पित शान्तिकलश जलों से चावल से निर्मित अष्ट दल के ऊपर भद्रासन पर उपविष्ट सपरिवार यजमान का अभिषेक करें। तदनन्तर यजमान, आचार्य मूर्तियों और ब्राह्मण स्थपतियों को प्रसन्न कर प्रासादोत्सर्ग करें।

तदनन्तर स्थापन मुहूर्त में आचार्य जितने स्थापित होने वाले देव हैं उनके मूल मन्त्रों से एक सौ आठ, अट्ठाइस या आठ आहुति देकर और मूर्ति, मूर्तिपति, लोकपाल मन्त्रों से प्रत्येक के मन्त्र से यथा संख्या समिधा-तिल-घृत से हवन करें।

तदनन्तर अधिवासित कूर्मशिला, ब्रह्मशिला और पिण्डिका को **''त्रातारमिन्द्रम्''** इस मन्त्र से ग्रहण कर विघ्न के अभावार्थ **'ॐ अस्त्राय फट्'** इस अस्त्र मन्त्र से पुष्पोदक की धारा से या शान्तातीय सूक्त से प्रासाद गर्भ का अभ्युक्षण कर **''महा इन्द्राय''** इस मन्त्र से **कुशा से ॐ अस्त्राय फट्** अभिमन्त्रित जल से फिर प्रासाद और द्वार

का मध्य यव या यवार्ध से ईशान या उत्तर दिशा का आश्रय कर स्नानोदक से सुसंस्कृत कूर्मशिला का प्रोक्षण 'मध्य' साधन कर देवता की दृष्टि की पवित्रता का निर्णय कर-वहाँ पर **'ॐ'** इस प्रणव से पञ्चरत्न के ऊपर रखकर उस छिद्र में सुवर्ण के कूर्मद्वार के सम्मुख (द्वार के सामने) रखकर उसके ऊपर **'ॐ'** इस प्रणव मन्त्र से रत्नों को रखकर छत्तीस गर्त (गढ़ा) वाली पैंतालीस गर्त वाली ब्रह्मशिला को **ॐ नमो व्यापिनि स्थिरेऽचले ध्रुवे श्री लं स्वाहा** इस मन्त्र से ब्रह्मशिला को रखकर यथाशक्ति गन्ध-अक्षत-पुष्प आदिको से पूजन कर प्रार्थना करें।

हे शिले! तुम हीं परम शक्ति हो, तुम ही आसन धारिका हो, हे देवि, यहां पर शिव की आज्ञा से सर्वदा तुम स्थित रहो।

तदनन्तर **ॐ वर्णाध्वने नमः, प्रसादाध्वने नमः, मन्त्राध्वने नमः, भुवनाध्वने नमः, तत्त्वाध्वने नमः, सकलाध्वने नमः। इति सकलाध्वानं तदारूढ़ं ध्यायेत्॥**

इनसे नमस्कार करते हुए सम्पूर्ण अध्वान ब्रह्मशिलारूढ़ का ध्यान करें। वहां पुण्याहवाचन या स्वस्ति पाठ करें। तदनन्तर कुण्ड में मूलमन्त्र से १२८, २८ या ८ आहुतियाँ दें।

॥ शान्तातीयसूक्तम् ॥

ॐ शंवतीः पारयन्त्येते तं पृच्छन्ति वचो युजा।
अभ्यारं तं यमाकेतुं य एवेदमिति ब्रुवन्॥१॥
भासकेतुं परिश्रुतं भारती ब्रह्मवर्धनीः।
संजनाना मही माता य एवेदमिति ब्रुवन॥२॥
इन्द्रस्तं किं विभुं प्रभुं भानुनेयं सरस्वतीम्।
येन सूर्यमरोचयद्येनेमे रोदसी उभे॥३॥
जुषस्वाग्ने काण्वं मेध्यातिथिम्।
मा त्वा सोमस्य वर्वृहत् सुतस्य मधुमत्तमः॥४॥
त्वमग्ने अंगिराः शोचस्व देववीतमः।

आ शन्तम् शन्तमभिरभिष्टिभिः शान्तिः स्वस्तिमकुर्वत।।५।।
शंनः कनिक्रदद् देवाः पर्जन्यो अभिवर्षतु।
शं नो द्यावा पृथिवी शं प्रजाभ्यः शं न एधि द्विपदे शं चतुष्पदे।।६।।

।। ध्रुव सूक्तम् ।।

ॐ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विशामयम्।।१।।
ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुव देवो बृहस्पति।
ध्रूवं ते इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रूधारयतां ध्रुवं।।२।।
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाऽभिसोमं मृशामसि।
अथो ते इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्।।
गौरीर्मिंयाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी वभूवुषी सहस्त्राक्षरा परमे व्योमन्।
उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवती।
येन तोकं च तनयं च धामहे।।

इस प्रकार रत्नों के न्यास करने के पश्चात् दिक्पाल मन्त्रों से आलम्भन कर सुवर्ण के पृथ्वी, मेरु तथा कूर्म वाहन को द्वारोन्मुख कर उसके मध्य पिण्डिका गर्त में पारद को रखें। गुग्गुलरस आदि से रत्नादि को स्थित कर मधु और दूध की खीर से गर्त का अनुपेलन कर वस्त्र से ढककर "**ॐ कवचाय हुम्**" इस मन्त्र से अवगुण्ठन मुद्रा द्वारा "**ॐ अस्त्रायफट्**" इस मंत्र से संरक्षण कर- **ॐ गृहावै प्रतिष्ठा सूक्तं तत्प्रतिष्ठिततया वाचा शंस्तव्य तस्माद् यद्यपि दूरे एव पशूंल्लभते गृहानि वै नाना जिगमिषति गृहा हि पशुनां प्रतिष्ठा।।** इससे प्रासाद का अभिषेचन कर इन्द्रादि को बलि देकर आचमन करें। इस प्रकार पिण्डिका की प्रतिष्ठा करें।

।। प्रासाद से बाहर आठ स्थण्डिलों का निर्माण ।।

प्रासाद से बाहर आठ दिशाओं में एक हाथ के आठ स्थण्डिलों का निर्माण कर वहां पर स्थण्डिलों के ईशानादि भागों में आठ कलशों को

समन्त्रक स्थापन कर पंच भूसंस्कार पूर्वक अग्नियों की स्थापना कर ब्रह्मोपवेशनान्त आज्यभाग के अन्त में प्रत्येक स्थण्डिल में पलाश समिधाा से १०८ बार मूल मन्त्र से हवन कर फिर **''ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्**। इस विष्णु गायत्री मंत्र से घी से १०८ बार, २८ या ८ बार हवन करें।

।। देव मूर्ध्नि अभिषेचनम् ।।

आचार्य आठ दिशाओं में स्थापित कुम्भपात्रों से जल को किसी एक पात्र में लेकर मूल मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित कर प्रतिमा के समीप में जाकर '' **सर्वतीर्थमयं जलम्**'' ऐसा ध्यान करते हुए देवता के शिर पर अभिषेक करें।

।। देवस्य दिग्बन्धनम् ।।

ॐ नरसिंह उग्ररूप ज्वल-ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुं फट्''। इस मन्त्र से देवता का दिग्बन्धन करें।

। इति द्वितीय दिन कृत्यम्।

।। अथ प्राण प्रतिष्ठा ।।

देवता की शिखा हृदय आदि का स्पर्श करते हुए प्राण प्रतिष्ठा के मंत्र कहें।

अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषयः ऋग्युजः सामाथर्वाणि छन्दांसि क्रियामय वपुः प्राणाख्याः देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः।

ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुसामछन्दोभ्यो नमः मुखे। प्राणाख्यदेवतायै नमः हृदि। आं वीजाय नमः गुह्ये। क्रों शक्त्यै नमः पादयोः।

ॐ अं कं खं गं घं ङं. पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः ॐ इं चं छं जं झ. ञं शब्द स्पर्श रूप रसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं टं ठं डं ढं णं ॐ श्रोत्रत्वकचक्षुजिह्वा घ्राणात्मने शिखायै वषट्। ॐ पं फं बं भं मं ॐ वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने

औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनो बुद्ध्यहंकार चित्त विज्ञानात्मने अः अस्त्रायफट्। एवमात्मनि देवे च न्यासं कुर्यात्।

ततः देवं स्पृष्ट्वा जपेत्।- ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं ष सं हं सः देवस्य इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः देवस्य वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्रजिह्वा घ्राणप्राणः इहागत्य स्वस्तये सुखेन सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ततः- ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथा मिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।। आत्वा हार्ष मन्तरभूध्रुवास्तिष्ठा विचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तुमा त्व द्राष्ट्र मधिभ्रशत्।। ध्रुवासिधरुणास्तृता विश्वकर्मणा। मात्वा समुद्र उद्बधीन्मा सुपर्णोऽव्यथमाना पृथिवीं दृꣳह ह।।

अर्घ्य- जल-क्षीर-कुशाग्र-तिल-तण्डुल-यव-सिद्धार्थक-पुष्पाणि कृत्वा शंखमुद्रया देवाय अर्घ्यं दत्त्वा- ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा।। इति मन्त्रेण देवं उत्थाप्य ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र मत्र कामयते सुषारथिः। अभीशूनाम्महिमानं पनायतमनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः। इति रथे उपवेश्य पुरतो गुरुः पृष्ठतो यजमानः पुत्रकलत्रबन्धुयुतः तूर्यघोषेण शनैः रथात् अवतीर्य प्रासादद्वारसन्मुखं देवं लिंग वा कृत्वा अर्घ्यं दत्त्वा शुभमुहूर्त्ते प्रासादं प्राविशेत्। ततः यजमानः गुरु देवं पिण्डिकायां स्थापयेत्। ततः ध्रुवसूक्तं पठेत्- ॐ ध्रुवा द्यौः ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत्। ध्रुवाश्च मे नगाः सर्वे ध्रुवाः पति कुले स्त्रियः। ॐ ध्रुवा द्यौः ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वताः इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्।। ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं ते इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतं ध्रुवम्।। ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभिसोमं

भृशामसि। अथो त इन्द्र केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्।।
इति सूक्तं पठित्वा-यवं यवार्द्धं वा उत्तराश्रितं वा ईशानाश्रितं वा देवं पिण्डिकाश्वभ्रे निधाय स्थिरोभव शाश्वतो भव इत्युक्त्वा पिण्डिका-लिंगयोरन्तराले वालुकासीसकादिभिः दृढं पूरयित्वा पुन र्न चालयेत्।। ततो देवस्य वामभागे देवपत्नीं न्यसेत्।
तत्र मन्त्राः- विष्णोर्वामभागे विष्णुपत्नीं लक्ष्मीं, रामपत्नीं सीतां, कृष्णसखीं राधिकां स्थापयेत्- ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीः- इति मन्त्रेण। शंकरस्य वामभागे पार्वतीं-ॐ आयंगौ०-इति गौरीम्। ब्रह्मणो वामभागे सावित्रीम्। सूर्यस्य वामभागे प्रभाम्। गणपतेः वामदक्षिणोः सिद्धिबुद्धी-स्थापयेत्।
ततः विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुम्यांधमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः। इति मन्त्रेण देवस्य मूर्ध्नि हस्तं निधाय पर देव ध्यात्वा पुरुषसूक्तेन रुद्रसूक्तेन वा सामनी जप्त्वा प्रार्थयेत्- स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात् त्वमिहागतः। प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत् परिपालय। धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शिवाय न। सान्निध्यं तु महादेव स्वर्च्चायां परिकल्पय।। यावच्चन्द्रावनीसूर्याः तिष्ठन्त्यप्रतिघातिनः। तावत्त्वयाऽत्र देवेश स्थेयं भक्तानुकम्पया।। इति प्रार्थयेत्।।
विष्णुश्चेत्- ॐ अतसी पुष्प संकाशं शंखचक्रगदाधरम्। संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जनार्दनम्।।
रुद्रश्चेत्- त्र्यक्षं च दशबाहुं च चन्द्रार्धकृतशेखरम्।। गणेशं वृषभस्थं च स्थापयामि त्रिलोचनम्।
अन्येषां देवानां तत्त्व प्रकाशकान् मन्त्रान् जपित्वा प्रणव व्याहृति शिरः संहितां गायत्रीं प्राणसूक्तं च जपित्वा सान्निध्यं कुर्यात्।
ॐ नमस्ते त्यक्तसंगाय सन्तोषपरमात्मने। ज्ञानविज्ञानरूपाय ब्रह्मतेजोऽनुशीलिने। गुणातिक्रान्तवेगाय पुरुषाय महात्मने। अव्यक्ताय पुराणाय विष्णो सन्निहितोभव।। भगवन् देव देवेश त्वं पिता सर्व देहिनाम्। त्वया व्याप्तमि सर्वं जगत् स्थावर जंगमम्। त्वमिन्द्रः

पावकश्चैव यमो निष्टति रेवच। वरुणा मारुतः साम ईशानः प्रभुरव्ययः । एन रूपेण भगवन् सन्निधिमानं सदा। सूर्य चन्द्रमसौ यावद् यावत तिष्ठति मेदिनी। तावत्त्वयाऽत्र देवेश स्थातव्यं स्वेच्छया प्रभो।। यावच्चन्द्रो यमः सूर्य तिष्ठन्त्यप्रतिघातिनः। तावदत्र तु देवेश स्थेयं सर्वानुकम्पया।। इति प्रार्थ्य स्थापितं देवं प्रधाने कृत्वा तस्य परितः परिवारदेवताः स्थापयेत्। ततः कुण्डे सर्वायु भ्यः स्वाहा, विमलादि नव पीठ शक्तिभ्यां स्वाहा, सर्वेभ्योऽग्निभ्यः स्वाहा।। सपरिवार देवताभ्य स्वाहा। सर्व दिगिशेभ्य स्वाहा। अघोर मन्त्रेण- अष्टोत्तर शतं, अष्टाविंशतिः अष्टौ वा आहुतिः देयाः। ततः देवं प्रार्थयेत्-लोकानुग्रह हेत्वर्थं स्थिरो भव सुखासने। सान्निध्यं हि मया देव प्रत्यहं परिवर्तय।। माभूत पूजा विरामऽस्मिन यजमानः समृद्धयता। सम्पाद्यय सतां राष्ट्रं सर्वोपद्रव वर्जितम्।। क्रमेण वृद्धिमतुलां सुखमक्षय्यमश्नुताम्। इति संप्रार्थ्य षोडशोपचारैः देवं सांगं समर्चयेत्।।

।। दुर्गा प्रतिष्ठा पूजन ।।

प्राण प्रतिष्ठित दुर्गा मूर्ति को वेदी के ऊपर रख हाथ में रक्त पुष्प लेकर भगवती दुर्गा का ध्यान करें

ध्यान-

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यै श्चतुर्भिर्भुजैः।
शंखचक्रधनुः शरां श्चदधती नेत्रेस्त्रिभिः शोभिता।।
आमुक्तांगद हारकंकणरणत्काञ्चीरणन्नू पुरा।
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।१।।
या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजासिनी।।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्ध लक्ष्मीपरा।
सा दुर्गा नवकोटि मूर्ति सहिता मां पातु विश्वेश्वरी।।२।।

रक्त पुष्प देवी पर चढ़ा देवें।

आवाहन -

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
संसार जननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्।
अनन्त शक्ति सम्पन्ना दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

दुर्गा देवी पर अक्षत डाल आवाहन करें।

आसन -

ॐ ताम ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यंकरं शुभम्।
आसनं च मयादत्तं गृहाणं परमेश्वरी॥

माँ दुर्गा को सुवर्ण का अथवा पुष्प आसन अर्पण कर दें।

पाद्य -

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥
उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय गृहाण जगदम्बिका॥

शुद्ध जल को पैर धोने के लिए अर्पण करें।

अर्घ्य -

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
स्वर्ण पात्र स्थितं तोयं गन्धपुष्प फलान्वितम्।
सहिरण्य ददाम्यर्घ्यं गृहाण परमेश्वरी॥

अर्घ्य में जल भर गन्ध पुष्प फल दक्षिणा सहित अर्पण करें।

आचमन -

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये
अलक्ष्मिर्मे नश्यतां त्वां वृणो मि।।
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
स्नानार्थ मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी।।

आचमन जल सुगन्धियुक्त कर अर्पण कर देवें।

पयस्नान -

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं तव हेतुश्च पयस्नानं मयार्पितम्।।

दुर्गा देवी को स्नान के लिए पय चढ़ाकर आचमन जल अर्पण कर देवें।

दधि स्नान -

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत्।।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

भगवती दुर्गा देवी को घी से स्नान करवाकर पुनः जल से स्नान करवायें।

घृत स्नान-ॐ घृत पावानः पिवत वसां वसापावनःपिवन्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशऽआदिशोविदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। नवनीत समुत्पन्न सर्वसन्तोष कारकम। घृततुभ्यं प्रदास्यानि स्नानार्थप्रति गृह्यताम्।।

भगवती दुर्गा देवी को घी से स्नान करवाकर पुनः जल से स्नान करवायें।

मधु स्नान-

ॐ मधु व्वाता ऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौ रस्तु नः पिता।।
मधुम्मान्नोव्वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

वृक्ष पुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को मधु से स्नान कर पुनः जल से स्नान करवायें।

शर्करा स्नान-

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्य्ये सन्त ँ समाहितम्।
अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युतममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टंगृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्।
इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को शर्करा से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

पंचामृत स्नान-

आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातोवनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्य अलक्ष्मीः।।

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित।
पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करा युतम्।
पंचामृतं मयाऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को पंचामृत से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

गन्धोदक स्नान-

गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
मलयाचल सम्भूतं चन्दनाऽगरुसम्भवम्।
गन्धोदक मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को गन्ध, जल से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

उबटन-

ॐ अ ॐ शुना ते अ ॐ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽ अच्युतः॥
नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनी युतम्।
उद्वर्तनं मया दतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्॥

भगवती दुर्गा को उबटन करवा पुनः जल से स्नान करवायें।

शुद्ध स्नान -

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥

कावेरी नर्मदा वेणी चन्द्रभागा सरस्वती।
गंगा च यमुना ऽ सां वाः स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

दुर्गा देवी को तीर्थों के जल से शुद्ध स्नान करवायें।

वस्त्र -

उपैतु मां देव सखः कीर्ति श्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिंददातु मे॥
सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृहाण परमेश्वरी॥

दुर्गा देवी को वस्त्र अर्पण कर एक आचमन जल छोड़ दें।

कज्जल-

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्ये सुभगेशान्तिकारिके।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्ना गृहाण परमेश्वरी॥

दुर्गा देवी की आंखों में कज्जल लगायें।

सुगन्धि द्रव्य-

चन्दनागरु कपूर कुंकुमंरोचनं तथा
कस्तूर्यादि सुगन्ध्या च सर्वांगेषु विलेपनम्॥

दुर्गा देवी को इत्र आदि सुगन्धित द्रव्यों से विलेपन कर देवें।

गुलाल -

अबीर गुलालं परिद्रव्यै निर्मितं चूर्णउत्तमम्।
अबीर नामक चूर्ण गन्धचारूपगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को अबीर गुलाल चूर्ण चढ़ा देवें।

आभूषण-

स्वभाव सुन्दरांगायै नानादेवाश्रये शुभा।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यस्तव अर्चयै।।

दुर्गा देवी को नाना प्रकार के आभूषण अर्पण कर देवें।

हार कंकण -

हार कंकण केयूर मेखला कुण्डलादिभि।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को हार कंकण आदि अर्पण कर देवें।

गन्ध-

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं महादेवी चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को गन्ध लगावें।

अक्षत -

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा न विष्ठया मतियोजान्विन्द्र ते हरी।।
अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान्।
गृहाणेन महादेवी देहि मे निर्मलां मतिम्।।

दुर्गा देवी को अक्षत लगा देवें।

पुष्प -

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः।।

मन्दार-पारिजातादि-पाटली केतकानि च।
जाति-चम्पक-पुष्पाणि गृहाण परमेश्वरी।

दुर्गा देवी को नाना प्रकार के पुष्प अर्पण करें-

पुष्पमाला-

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रम कर्दम्।
श्रियंवासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।
पद्म शंखज-पुष्पादि शतपत्रैर्विरर्चितम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि।।

दुर्गा देवी को पुष्पमाला अर्पण कर देवें।

धूप -

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वसमे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
दशांग-गुग्गलं धूपं चन्दनाऽगरु संयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या गृहाण परमेश्वरी।।

माँ दुर्गा को धूप दिखावें।

दीपक -

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयिं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
साज्यवर्तिसयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशी त्र्यैलौक्यति मिरापह।।

दुर्गा देवी को दीपक दिखाये-

नैवेद्य -

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयिं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह।
अंन्नः चतुर्विधं स्वादुरसै षडभि समन्वित।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु।।

दुर्गा देवी को नैवेद्य अर्पण कर एक आचमन जल छोड़ देवें।

दक्षिणा –

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधर पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
पूजाफल समृद्धयर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरी।
स्थापितं तेन मे प्रीत्या पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।

दुर्गा देवी को दक्षिणा अर्पण कर देवें।

ताम्बूल –

ताम्य आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्याऽश्वान् विन्देयपुरुषानहम्।।
पूगीफल महाद्दिव्यं नागवल्लि-दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

दुर्गा देवी को ताम्बूल अर्पण कर देवें।

ऋतुफल –

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणिः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।
फलेन फलितं देवि त्रैलोक्यं स चराचरम्।।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णासन्तु मनोरथाः।।

मां दुर्गा को फल चढ़ायें।

क्षत्र –

ॐ ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।
घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।

दुर्गा को छत्र डुलायें।

चामर–

अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्बीव सोमः।
वाजसनि ँ रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्।।

चामर ढुलायें।

दर्पण -

ॐ रजता हरिणः सीसा युजो युजन्ते कर्मभिः।
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः।।
दर्पणं निर्मलं दिव्य परिबिम्बोसिविग्रहे।
कुरु दृष्टि महाभागं आदर्शं दर्शयाम्यहम्।।

दुर्गा देवी को दर्पण दिखायें।

अंग पूजन -

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि। ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ मङ्गलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः उरुद्वयं पूजयामि। ॐ भद्रकाल्यै नमः। कटिं पूजयामि। ॐ कमल वासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि। ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि। ॐ क्षमाये नमः हृदयं पूजयामि। ॐ कौमार्ये नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि। ॐ महागौर्ये नमः दक्षिण वाहुं पूजयामि। ॐ वैष्णव्यै नमः वामवाहुं पूजयामि। ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पूजयामि। ॐ स्कन्दमात्रे नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ महिषासुर मर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि। ॐ सिंह वाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि। ॐ माहेश्वर्ये नमः शिरः पूजयामि कात्यायन्यैनमः सर्वाङ्गं पूयामि।।

उपरोक्त प्रत्येक नाम से गन्धाक्षत पुष्प धूपादि अर्पण कर देवें।

कर्पूर आरती-घी के दीपक अथवा **कर्पूर** जलाकर घण्टा आदि बजाते हुए दुर्गा देवी के चरणों में चार-बार, नाभि देश में दो बार मुख पर एक बार और समस्त अंगों में सात बार आरती घुमायें।

मंत्र-

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।।१।।

ॐ आ रात्रि पार्थिव ७ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ७ँ सि बृहति वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।२।।

ॐ इद ७ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ७ँ सर्वगण ७ँ

स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥३॥
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्नि स्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतीषिं आर्तिक्य प्रतिगृह्यताम्॥

प्रार्थना-

मंत्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं चण्डिकास्तवम्।
सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलि-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महेस। मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः। सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति तदप्ये श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामाप्रेर्विश्वेदेवा सभासद इति॥

ॐ विश्वत श्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति। सम्पतत्रैद्यावा भूमि जनयन् देव एकः॥ ॐ कात्यायन्यैच विद्महे कन्याकुमारि धीमहि दुर्गेः प्रचोदयात्॥

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै च विद्महे। महाशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

सेवन्तिका-बकुल-चम्पक-पाटलाब्जैः
पुन्नाग-जाति-करवीर-रसाल-पुष्पैः।
विल्व-प्रवाल-तुलसी दल मञ्जरीभिः
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद॥
नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च।

पुष्पाञ्जलिं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरी।।
मां दुर्गा देवी को पुष्पाञ्जलि देकर परिक्रमा कर लेवें-
प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि-तानि विनश्यति प्रदक्षिण पदे-पदे।।

।। इति दुर्गा पूजन।।

।। श्री विष्णु प्रतिष्ठा पूजनम।।

ध्यानम्- नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादक्षि शिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शास्वते सहस्त्रकोटियुगधारिणे नमः।।
लक्ष्मी पते कमलनाभ सुरेश विष्णो
वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
देवेश देहि कृष्णास्य करावलम्बम्।।
भगवान विष्णु को पुष्प अर्पण करें।
आहवाहन- एह्येहि नारायण दिव्यमूर्ते सर्वामरेरर्चित पादपद्मं।
शुभा शुभानन्द शुचामधीशं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।
ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात।
स भूमि ँ् सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्।।
आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं सनिधौ भव।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।।
आसनम-

ॐ पुरुष एवेद ँ् सर्वं य ूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।।
भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। आसनम् समर्पयामि।

पाद्यम् -

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँ पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्य संयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् - ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभिः॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं प्रसन्नो वरदो भव॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
आचमनम्- ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि।
स्नानम् - ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि।
स्नानाङ्ग आचमन- ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
पयः स्नानम्- ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे।
पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमयार्पितम्॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।।

दधिस्नानम्- ॐ दधिक्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयुॐषि तारिषत।।

पयस्तु समु ूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्- ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ श्रीमन्नाराणाय नमः। घृतस्नानम् समर्पयामि।

मधुस्नानम -

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्योरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्य माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

पुष्परेणुसमुत्पन्न सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्-

ॐ अपा रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त् समाहितम्
अपा रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽ
सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुसारसमु ूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।
गन्धोदक स्नानम्- ॐ अँ्शुनाते अ ँ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं नु गृह्यताम्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदक स्नानं - ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥
शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
वस्त्रम्- ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँ्सिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत्॥
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि आचमनीयं जलं च समर्पयामि।
उपवस्त्रम्- उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि आचनमनीयं जलं च समर्पयामि।
यज्ञोपवीतम्- ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये केचो भयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दतं गृहाण परमेश्वरः॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
गन्धम्- ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
श्रीखंड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। चन्दनं समर्पयामि।
अक्षतम्- ॐ अक्षनमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजनान्विद्रते हरी॥
अक्षता श्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता सुशोभिताः॥
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। अक्षतस्थाने श्वेततिलान् समर्पयामि।
पुष्पम् - ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढमस्य पाँ सूरे स्वाहा॥
माल्यादिनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।
तुलसीपत्रम्- ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि।
दूर्वा- ॐ काण्डात्काण्डत् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्र तनु सहस्त्रेण शतेन च॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरः॥

ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।
आभूषणम्-वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। अलङ्कारणार्थे आभूषणानि समर्पयामि।
सुगन्धित द्रव्यम्- अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान पुमान पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।।
तैलानि च सुगन्धिनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरः।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। सुगन्धित तैलादिद्रव्यं समर्पयामि।
धूपम्- ॐ ब्रह्मणोऽस्यमुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तंदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत।।
वनस्पतिरसो ूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। धूपमाघ्रापयामि।
दीपम्- ॐ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।
साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। दीपं दर्शयामि।
नैवेद्यम्- ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्पयन्।।
त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेव समर्पये।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर।।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं

जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि।
अखण्ड ऋतुफलम् - ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ् हसः।।
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरस्तस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेजन्मनि जन्मनि।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। अखण्ड ऋतुफलं समर्पयामि।
ताम्बूलम्- ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।
पूगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलालवङ्गसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। एलालवङ्ग पूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि।
दक्षिणाम्- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
दक्षिणा प्रेमसहिता यथाशक्तिसमर्पिता।
अनन्तफलदानेनां गृहाण परमेश्वर।।
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।।
आरार्तिक्यम्- ॐ इद ँ् हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ् सर्वगण ँ् स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक भयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
शङ्ख जलम्- शङ्खमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति।।
पुष्पाञ्जलिम्- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। ॐ

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्म हे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येे श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐ विश्वतश्चरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।
नाराणाय विद्महे वासुदेवायधीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
कायने वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्॥
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥
ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

प्रदक्षिणा -

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनष्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥

॥ शिव पूजनम् ॥

भगवान शंकर की पूजा के साथ-साथ नन्दीश्वर पूजन वीरभद्र पूजन, कार्तिकेय पूजन, कुबेर पूजन, कीर्तिमुख पूजन, सर्प पूजन क्रमशः इनके पूजन के पश्चात भगवान शङ्कर का विधिवत पूजन किया जाता है।

नन्दीश्वर पूजन -

मंत्र- ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन् मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

नन्दीश्वराय नमः गन्धाक्षतं पुष्पं, धूपं, दीपं नैवेद्यं च समर्पयामि।।
प्रार्थना करें- प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा।।

।। वीरभद्र पूजन ।।

मंत्र- ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।
ॐ वीरभद्राय नमः गन्धाक्षतं पुष्पं, धूपं, दीपं नैवेद्यं च समर्पयामि।।
प्रार्थना करें- भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः।।

कार्तिकेय पूजन -

मंत्र- ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन।।
कार्तिकेयश्वराय नमः गन्धाक्षतं, पुष्पं धूपं, दीपं, नैवेद्यं च समर्पयामि
प्रार्थना करें- ॐ यत्र वाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाइव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।।

।। कुबेर पूजन ।।

मंत्र- ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।।
कुबेराय नमः गन्धाक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं नैवेद्यं च समर्पयामि।।
प्रार्थना करें- ॐ वयं ँ सोमव्रते तव मनस्तनुषु विभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।।

।। कीर्तिमुख पूजन ।।

मंत्र- असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽ धिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ँ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय दिवा पतये स्वाहा।।
कीर्तिमुखाय नमः गन्धाक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं च समर्पयामि।

प्रार्थना करें- ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म चे मे ऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परुँ षि च मे शरीराणि च मे आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

।। सर्प पूजन ।।

मंत्र- ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

सर्पाय नमः गन्धाक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं च समर्पयामि।।

प्रार्थना- आशीविष समोपेत, नागकन्या विराजिता।
पाहि पूजामिमं देव फणसप्तक मण्डित।।

।। शिव पूजन ।।

पुष्प लेकर भगवान शंकर का ध्यान करें।

ध्यानम् -

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभिं चारु चन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पो ज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम।।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रम्।

आवाहन- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः साम्वसदाशिवाय नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि

पादयो पाद्यं - यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्रतां कुरु माहि ँ सीः पुरुषं जगत्।। ॐ भुर्भुव स्वः साम्व सदा शिवाय नमः। पादयो पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ्यं - ॐ शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा वदामसि यथानः सर्व मिजदगयक्ष्म ँ सुमना असत्।। ॐ भूर्भुव स्वः साम्बसदा शिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।।

आचमन- ॐ अध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचिः परा सुव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः साम्वसदाशिवाय नमः आचमनीयं समर्पयामि॥
स्नान - ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत वभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन ँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवेषा ँ हेड ईमहे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्वसदाशिवाय नमः स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥
पयः स्नान- ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥
दधिस्नान- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ँ षि तारिषत्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥
घृतस्नान - ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिधृते श्रितो घृतम्बस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षिहव्यम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥
मधुस्नान - ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदा शिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
शर्करास्नान- ॐ अपा ँ रसमुद्धयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्।
अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमुपयागृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णामेष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नान समर्पयामि शर्करास्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान- ॐ पञ्चधासो नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्च सो देशेऽभवत्सरित्॥
ॐ भुर्भुवः स्वः साम्बसदा शिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि पंचामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
गन्दोदक स्नान - ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषापरुः। गन्धस्ते सोममवतुमदाय रसो अच्युतः॥ ॐ भूर्भुवः स्व साम्बसदाशिवाय नमः। गन्धाोदक स्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नान- ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपयते कर्णायामा अविलप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्या॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्वसदाशिवाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥ (शुद्ध जल या गंगाजल से स्नान करावें)।
आचमनीय जल - ॐ अध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् अहींश्च सर्वाञ्जभयन्त्सर्वाश्चयातु धान्योऽधराचीः परा सुव॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीय जलं समर्पयामि॥

अभिषेक -

भगवान शंकर का गंगाजल, शुद्धजल अथवा दुग्धादि से सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी या रुद्राष्टाध्यायी के पञ्चम अध्याय के सोलह मंत्रों (रुद्रसूक्त) से अभिषेक करें॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव..। से
.... वधीर्हविष्मंतः सदमि त्वा हवामहे तक।

अभिषेक करने के पश्चात भगवान शंकर को वस्त्रादि चढ़ावें।

वस्त्र- **ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उत्तैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुहार्यः स दृष्टो मृडयातिनः**
ॐ भूर्भुवः स्वः साभ्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत -

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योकरं नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।
पुनः आचमनीय जलं समर्पयामि।

उपवस्त्र - ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमाऽसदस्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो।।
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।।
पुनः आचमनीय जलं समर्पयामि।

गन्ध -

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप।।
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्यं - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।।

अक्षत- व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्चमे मुद्गाश्चमे खल्वाश्चमे प्रियङ्गवश्चमेऽणवश्चमे श्यामाकाश्चमे नीवाराश्च मे गोधूमाश्चमे मसूराश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पामाला -ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

विल्वपत्र -ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च
नमो वर्मिणे च वरुथिने च नमः श्रुताय च
श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपासंहा विल्पत्रं शिवार्पणम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदा शिवाय नमः विल्वपत्राणि समर्पयामि।
नानापरिमलद्रव्य- ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान पुमान् पुमा ँ् सं परि पातु विश्वतः॥
ॐ भूर्भुवः साम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि॥
धूप- ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्व मयक्ष्मया परि भुज॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामि॥
दीप- ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः दीपं दर्शयामि॥
हस्तप्रक्षालनम्॥
नैवेद्य- ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ँ् सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्वसदाशिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि॥
करोद्वर्तन- ॐ सिञ्चति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च।
सुरायै वभ्रवै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बदाशिवाय नमः करोद्वर्तनाये चन्दनानुलेपनं समर्पयामि॥ (चन्दन का अनुलेप करें)।
ऋतु फल- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ् हसः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः ऋतुफलं समर्पयामि॥
ताम्बूल-पूगीफल- ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे।

उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।

ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदा शिवाय नमः मुखवासार्थे सपूगीफलं ताम्बूल पत्रं समर्पयामि।

दक्षिणा- ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पुर्तत्यू याश्च दक्षिणाः॥ तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदा शिवाय नमः सद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

आरती- ॐ आ रात्रि पार्थिवँ् रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदाँ् सि बृहति वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥

प्रार्थना करें-

अज्ञानयोगादुपचारकर्म यत्पूर्व मस्माभिरनुष्ठितं ते।
तदेव सोद्वासनकं दयालो पितेव पुत्रान तनो जुषस्व॥
वन्दे देवमुमापति सुरगुरु वन्दे जगत कारणम्।
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम्॥
वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।
आनन्दमूर्ति सुख कल्पवृक्षं कुमार नाथं विधृत प्रपंचम्।
यज्ञादि नाथं परमप्रकाशं नमामि विश्वम्भरमीशितारम्॥

॥ इति शिव पूजनम् ॥

॥ हवन॥

॥ यज्ञ हवन कुण्ड पूजा ॥

यजमान यज्ञ कुण्ड के पश्चिम भाग में बैठकर प्राणायाम कर तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करें।

पूर्वोक्त गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक देव प्रतिष्ठायां यज्ञ (ग्रहमख, रुद्रयाग, विष्णुयाग, वा शत-चण्डी याग) प्रतिष्ठा कर्मणि कुण्ड पूजनम्, मेखला कण्ठ पूजनम नाभि पूजनम, अग्निस्थापनमहं करिष्ये।

गोबर से लीपकर फिर पंचगव्य से यज्ञ कुण्ड का प्रोक्षण करें।

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य
भाजयतेहनः उशतीरिवमातरः॥ तस्मा अरंगमाम
वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ॥

दाहिने हाथ से कुण्ड का स्पर्श कर आवाहन करें-

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म विनिर्मितम।
शरीरं यच्च ते दिव्यं अग्निधिष्ठानमद्भुतम्॥

यज्ञ सिद्धि हेतु हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

ये च कुण्डे स्थिता देवा कुण्डाङ्गे याश्च देवता।
ऋद्धि यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञ सिद्धिं मुदान्विता॥
हे कुण्ड तव रूपं तु रचितं विश्वकर्मणाः।
अस्माकं वाच्छितां सिद्धिं यज्ञ सिद्धि ददस्व च॥

कुण्ड के मध्य में विश्वकर्मा की पूजा करें-

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्।
तस्मैः विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत।
विश्वकर्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

पूजन कर प्रार्थना करें।

अज्ञानाद् ज्ञानतो वापि दोषा ये खननोद्भवाः।
नाशाय त्वखिलांस्तांस्तु विश्वकर्मन् नमोऽस्तुते॥

अब मेखला की पूजा के क्रम में चार अंगुल ऊँची, चौड़ी ऊपर की मेखला को श्वेत अक्षतों से अलंकृत कर विष्णु भगवान की पूजा करें-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाँ सुरे स्वाहा॥ विष्णवे नमः गंधाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि॥

मध्य की मेखला तीन अंगुल ऊंची व चौडी रक्तवर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर ब्रह्मा की पूजा करें -.

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ब्रह्मणे

नमः गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं समर्पयामि।।

सबसे नीचे की मेखला दो अंगुल ऊंची व दो अंगुल चौड़ी कृष्ण वर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर शिव का पूजन करें-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। रुद्राय नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं समर्पयामि।।

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽ अम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्।।

गौर्ये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

कुण्ड योनि पूजन निम्न मंत्र से करें-

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मा त्वा हिँ सीन्मा माहिँ सीः।

कुण्ड योन्ये नमः गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्य च समर्पयामि।।

प्रार्थयेत् -

सेवन्ते महतीं योनिं सिद्धाः देवर्षि मानवा।
चतुराशीति लक्षाणि पन्नगाद्याः सरिसृपाः।।
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पति हेतुका।।
मनोभवयुता देवी रतिसौख्य प्रदायनि।
मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोऽस्तुते।।

यज्ञ कुण्ड में नीले रंग के चावलों से सजाकर कण्ठ में रुद्र का पूजन करें।

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः तेषा सहस्त्रयोजने ऽवधन्वा नितन्मसि।।

कण्ठे रुद्राय नमः।। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।

प्रार्थना-

जीवनं सर्व जन्तुनां स्त्रगादिस्थानमुत्तमम्।
उत्तमांगस्य चाधारं कण्ठं पूजयाम्हम्।।

यज्ञ के नैर्ऋत्य कोण में वास्तुदेव का आवाहन करें -

विशन्तु भूतलेनागाः लोकपालाश्च सर्वतः।
कुण्डे नैर्ऋत्य तिष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा॥

वास्तु का पूजन करें-

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥
वास्तुपुरुषाय नमः गन्धाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि॥

प्रार्थना -

पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षादि हेतवे।
त्वां विनानार्चनं सिद्धेद्यज्ञदानादिषु क्वचित॥

यज्ञकुण्ड की चारों दिशाओं में वेदों का पूजन करें।

ॐ ऋग्वेदं स्थापयेद् पूर्वे यजुर्वेदं दक्षिणे पश्चिमे सामवेदं च उत्तरे च अथर्वणम्॥

चतुर्वेदेभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य च समर्पयामि॥

ईशान में रुद्र कलश स्थापन कर पूजन करें-

ॐ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ँ सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि। रुद्रकलश देवताभ्यो नमः गंधाक्षत पुष्पं धूप दीप नैवेद्य च समर्पयामि॥

अथ पञ्च भू संस्कार -

पहले यज्ञ मण्डप को कुशा से साफ कर देवें। फिर एक हाथ प्रमाण का कुशा लेकर उससे यज्ञ कुण्ड में बुहारा देवें-

हस्तमात्र परिमितां चतुरस्त्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य तानैशान्यां परित्यज्य॥ कुशा को ईशान में छोड़कर **गोमयेनोपलिप्य।**

यज्ञकुण्ड को गोबर से लीप देवें। अब स्त्रुव दाहिने हाथ में लेकर श्रुव के मूल से पश्चिम से पूर्व की तरफ अंगूठा तर्जनी (प्रादेश मात्र) लम्बाई की तीन रेखा खीचें-

स्त्रुव मूलेन प्राङ्मुखं प्रादेशमात्रं उत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य।

रेखाओं से अनामिका अंगुष्ठा से कुछ मिट्टी उठाकर ईशान कोण में फेंक दें-

उल्लेखन क्रमेण अनामिका अंगुष्ठाभ्यां मृद्मुद्धृत ऐशान्य दिशि स्थापयेत्।

यज्ञ कुण्ड में जल के छींटे दें -

ततः उदकेन अभ्युक्षणम्॥

ये पांचों भू संस्कार जहां अग्नि स्थापन हो वहां करने चाहिये।

॥ अग्नि स्थापनम् ॥

वामहस्तानामिकया भूमि स्पृशन् ताम्रपात्रेण (कांस्यपात्रेण वा) आहृतमग्निं स्वाभिमुखं निदध्यात तद्रक्षार्थ किंचिन्नियुज्य आनीताग्निपात्रे अक्षतादि प्रक्षेपः।

बायें हाथ की अनामिका से भूमि का स्पर्श करें। तांबे या कांसी के पात्र में अग्नि मंगाकर सामने रखें। अग्निरक्षार्थ किसी को नियुक्त कर यज्ञकुण्ड में अग्नि डालकर अग्निवाले पात्र में अक्षतादि डाल देवें। योनि मार्ग से अग्नि को यज्ञ कुण्ड में स्वाभिमुख स्थापना करते हुए यह मंत्र बोले -

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ २ऽ आसादयादिह॥ ततोऽग्नि प्रदक्षिणां कृत्य पुष्प चन्दन ताम्बूल पूंगीफल द्रव्य वस्त्राण्यादाय अग्नेर्दक्षिणतो वास्त्रतरणं कल्पयित्वा ब्राह्मणं पाद प्रक्षालन गन्ध माल्यादिभिसम्पूज्य॥

पुनः अग्नि की परिक्रमा कर दक्षिण में ब्रह्मा को वरण कर पूजन कर लेवें-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः। स वुध्न्या ऽउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च बिवः॥

ततः प्रणीतापात्रं वारण काष्ठमयं द्वादशांगुलौच्यं चतुरंगुल मध्य खातं पद्माकृतिं पुरतो निधाय जले नापूर्य कुशैराछाद्य ब्रह्मणो मुख मवलोक्य अग्नेरुतरतः कुशोपरि निदध्यात्।

इसके बाद यजमान प्रणीतापात्र यज्ञीय काष्ट का बना हुआ बारह अंगुल प्रमाण फैला ऊँचा एवं चार अंगुल गहरा (पद्माकृति) जल से

भरकर कुशाओं से ढककर ब्रह्मा का मुख देखकर (या ब्रह्मा को दिखाकर) अग्नि के उत्तर की ओर कुशा पर रख देवें।

ततः बर्हिषां परिस्तरणम्। बर्हिर्नाम्नामेकाशी दर्भदलानां अथवा यावल्लब्धानां चतुर्भागं कृत्वा यथा एकेन दर्भेण शून्य हस्तो न भवति।

यहाँ ८१ दर्भ दल या जितनें उपलब्ध हों उनके चार भाग करें एक कुश हाथ में रहे जिससे हाथ खाली न रहे।

प्रथम भागमादाय अग्नेयादीशानान्तम्।

पहले भाग को अग्नि कोण से ईशान तक रखें।

द्वितीय भागमादाय ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्॥

दूसरे भाग को लेकर ब्रह्मा (दक्षिण) से अग्नि कोण तक रखें।

तृतीय भागमादाय नैऋत्याद्वायव्यान्तम्॥

तीसरे भाग को लेकर नैऋत्य से वायव्य तक रखें।

चतुर्थभागमादाय अग्नितः प्रणीता पर्यन्तं॥

चतुर्थ भाग लेकर अग्नि से प्रणीता तक अग्र भाग पूर्व की ओर रखते हुए बिछा दें।

॥ अथ पात्रासादनम् ॥

ततो अग्नेरुतरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रयम करणार्थं साग्रमनन्तगर्भ कुशपत्र द्वयं प्रोक्षणी पात्रं आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशाः पञ्च, उपयम-कुशाः सप्त समिध स्त्रय प्रादेशमात्रः, स्त्रुवखादिर, आज्यं षट्पञ्चाशादुत्तर शतद्वय मुष्ट्यवछिन्नं तण्डुल पूर्णपात्रं दक्षिणा (सहित) पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्व पूर्वक्रमेण एतान्यासादनीयानि॥

इसके बाद अग्नि कुण्ड के पश्चिम दिशा अथवा उत्तर की ओर से निम्न सामग्रियां रखें- पवित्र तोड़ने की तीन कुशा पवित्र करने की दो कुशा, प्रोक्षणी पात्र, घी का पात्र चरु मात्र, समार्जन की ५ कुशा उपयन की ७ कुशा प्रोदश मात्र लम्बी ३ समिधा खैर का स्त्रुवा, चावलों से भरा हुआ दो सौ छप्पन मुष्टि प्रमाण का पूर्ण पात्र एवं दक्षिणादि रख देवें।

अथ त्रिभिः पवित्रच्छेदन कुशै द्वै पवित्रे छित्वा सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय (पश्चात्) प्रोक्षणी पात्रं वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तअनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्।।

अब तीन पवित्र छेदन कुशाओं से दो पवित्रियों को (तीन आंट देकर) काटकर तीन को त्याग देवें और दो फिर दायें हाथ में रखकर इसी कुशा से प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डालें फिर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ में लेकर हाथ के अनामिका अंगुष्ठ से पवित्र पकड़कर प्रोक्षणी के जल को तीन बार ऊपर उछालें।

ततः प्रोक्षणी पात्रं आकाशस्थ प्रणीतोदकेनापूरयेत्।

भूमौ पतति चेतदा प्रायश्चितं गोदानाम्।।

फिर प्रोक्षणी पात्र को प्रणीता के जल से भर लेवें किन्तु जल को पृथ्वी पर न गिरने दें। यदि गिर जाय तो प्रायश्चित गोदान करें।

ततः प्रोक्षणी जलेनयथासादितवस्त्वनुरूपं सेचनम्।

इसके बाद प्रोक्षणी के जल से सब सामग्री पर छींटे देवें।

ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्।।

अब अग्नि व प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र को रख देवें।

आज्यास्थाल्यामानिर्वायः। आज्यस्थाली में घी भरें। **चरुपात्रे माज्य प्रक्षेपः।** चरु पात्र में चरु बना लें। **आज्यऽविश्रयणम्।** घी को गर्म कर देवें।

ततो ज्वलतृणमादाय आजस्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः। एक तृण जला हुआ लेकर प्रदक्षिणा क्रम से घी के ऊपर घुमाकर अग्नि में डाल देवें।

ततो दक्षिण पाणिना श्रुवमादायाधोमुखं मग्नौ त्रिस्तापियित्वा वामहस्ते कृत्वा सम्मार्जन कुशानामग्रेरन्तरतो मूलैर्वाह्यत स्त्रुवमूर्ध्वमुखं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रताप्यदक्षिणतो निधाय।।

अब दाहिने हाथ में स्रुव लेकर स्त्रुव का मुंह अग्नि में तीन बार तपाकर वामहस्त में रखकर पांच सम्मार्जन कुशा के अग्रभाग से स्त्रुव

के अग्रभाग को मध्य से मध्य को अधोभाग से स्त्रुव के अधोभाग को साफ कर पुनः स्त्रुव को तीन बार तपा लेवें। अब इसके बाद स्त्रुव का अवाहन कर स्त्रुव पर मौली बांध लेवें-

आवाहयाम्यहं देवं स्त्रुवं शेवधिमुत्तमम्।
स्वाहाकार स्वधाकारवषट्कार समन्वितम्॥

स्त्रुव पूजन करके दाहिनी तरफ रख देवें।

ततः आज्योत्तारणम् अवेक्षणम् अपद्रव्य निरसनं च।

फिर घी उतार कर देखें कोई खराब चीज पड़ी हो तो उसे निकाल देवें।

ततः उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते धृत्वा अग्नि पर्युक्षणं कृत्वा उतिष्ठन् मनसा प्रजापतिं ध्यात्वा तृष्णोमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्।

इसके बाद उठकर सात उपयमन कुशा को बायें हाथ में लेकर तथा तीनों समिधा (प्रादेश मात्र) लेकर घी में भिगोकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान कर चुपचाप उनको (समिधा) अग्नि में छोड़ दें।

ततः उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीता पात्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेनं ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समद्धितमेऽग्नौ स्त्रुवेण आज्याहुतिं जुहुयात्॥

फिर बैठकर पवित्र से प्रोक्षणी के जल को अग्नि के चारों तरफ छिड़क दें। पवित्र को प्रणितापात्र में रख दें फिर दाहिनी जंघा नबाकर ब्रह्मा को कुशा से स्पर्श कर (ब्रह्मा से यजमान तक मौली रखकर) स्त्रुव से अग्नि में घी की आहुति दें।

आहुति चतुष्टये स्त्रुवावशिष्ट घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः अग्रेयथादैवतं चतुर्ध्यन्तं स्वाहान्तं नममेति त्याग च कुर्यात्॥

प्रथम चार आहुतियों में स्त्रुव के शेष घी को प्रोक्षणी पात्र में त्याग देवें। आगे देवता नाम के साथ चतुर्थी विभक्ति लगाकर 'स्वाहा' ''न मम्'' से प्रोक्षणी में शेष घी का त्याग करें।

।। अथ घृताहुतिः ।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम्।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय, इदं न मम्।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम्।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम्।

बिना अन्वारब्धमेकाहुतिः (ब्रह्मा जी की मौली हटाकर एक आहुति देवें)।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम् ।

पुनः तीन आहुति देवें।

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम्।
ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे, इदं न मम्।
ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय इदं न मम्।
ॐ यथा वाण प्रहारेण कवचं वारकं भवेत्।
तद्वद्देवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिका।।

शान्तिरस्तु, पुष्टिरस्तु, यत्पापं, रोगम्, अकल्याणम, तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।। पढकर के-आचार्य, यजमान के सिर के ऊपर जल के छीटें देवे।

।। अथ अग्नि पूजनम् ।।

ध्यानम्-

ॐ चत्वारि शृङ्गात्रयो ऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो ऽ अस्यत्रिधा वद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यां २ ऽ आविवेश।। ॐ भुर्भुवः स्वः अग्नै वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्य सित देवलेति त्रिपरान्वित भूमिम्रातः वरुणपिताः मेषध्वज प्राङमुख मम संमुखो भवः।

अग्नि को प्रतिष्ठापित कर **अग्निजिह्वा** पूजन करें-

ॐ कनकायै नमः। ॐ रक्तायै नमः। ॐ कृष्णायै नमः। ॐ उद्गारिण्यै नमः। ॐ उत्तरमुखे सुप्रभायै नमः। ॐ बहुरूपायै नमः। ॐ अतिरिक्तायै नमः।

अग्नये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यंदक्षिणां च समर्पयामि॥

अग्नि प्रार्थना -

अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्
हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखम्॥
त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिरमित द्युते।
आगच्छ भगवन् अग्ने यज्ञेऽस्मिन्नसन्निधौभवः॥

॥ यज्ञ स्तुति ॥

यज्ञ रूप प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये॥
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्षमय हो मग्न सारे शोक सागर से तरें॥
अश्वमेध-आदिक रचनायें यज्ञ पर उपकार हो।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभदें संसार को॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के संताप को हरते रहें॥
कामना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की।
भावनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारी की॥
लाभकारी हो हवन कर जीवधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हो शुभ गन्ध को धारण करें॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
इदं न मम के स्वार्थ का प्रत्येक में व्यवहार हो॥
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे॥
यज्ञ रूप प्रभु हमारे..॥

॥ यज्ञ पुरुष भगवान की जय॥

॥ हवन संकल्प ॥

अब हवन हेतु यव आदि सामग्री तथा जल लेकर संकल्प करें-
विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्तनामस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वतन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे-आर्यावर्तेक देशे गंगा यमुनयोर्मध्ये (अथवा अमुकतीरे) वौद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्ये अमुकायने अमुक ऋतौ महामांगल्य प्रदेमासोत्तमे मासे अमुक राशिस्थिते श्री सूर्ये अमुकराशिस्थिते देव गुरौ शेषेषु यथायथा राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण गण विशेषण-विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्त) ऽहं मम इह जन्मनि जन्मातरेवा श्री यज्ञपुरुष प्रीत्यर्थे सर्वपापक्षयपूर्वक दीर्घायुर्विपुल धनधान्य-पुत्रपौत्राद्यवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि स्थिरलक्ष्मि कीर्तिलाभ सदाऽभीष्ट सिद्ध्यर्थं अमुक देव प्रतिष्ठा कर्मणि ग्रह होम अधिदेवता प्रत्याधि देवता पञ्चलोकपाल देवता दशदिक्पाल देवता अमुक प्रधान देवता सहितानां च प्रीतये ब्राह्मण द्वारा यव तिल धान्याज्य शर्करादि द्रव्यैस्तत्त देवता मंत्रैर्यक्ष्ये॥

॥ अथ सर्वप्रायश्चितसंज्ञक पञ्चवारुण होमः॥

ॐ त्वंन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडोऽअव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ७ं सि प्र मुमुग्धस्मत्॥ ॐ स्वाह इदमग्निवरुणाभ्यां न मम॥१॥

ॐ स त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अब यक्ष्व नो वरुण ७ं रराणो ब्रीहि मृडीक ७ं सुहवो न एधि॥ ॐ स्वाहा॥ इदमग्निवरुणाभ्यां न मम॥२॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया ऽ असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ७ं स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥३॥

ॐ ये ते शतंवरुणं ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितताः महान्तः

तेभिर्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णावे विश्वेभ्यो देवेभ्योमरुद्भ्यः।।४।।

ॐ उदुतम वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्य ॐ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽ अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायादितये नमः।।५।। अत्रोदकस्पर्शः।। इति प्रायश्चित (पंचवारुणी) होम।

अब गायत्री मंत्र से घी की द्वादश आहुति दें।

ॐ तत्सवितुर्वरण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॐ स्वाहा।।

।। ततो गणपति प्रीत्यर्थ होम।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति ॐ हवामहे। प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ हवामहे। निधीनान्त्वा निधपति ॐ हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमात्वम जासि गर्भधम्।।

ॐ गणपतये स्वाहा।। वरुणाय नमः स्वाहा।। ॐकार देवताभ्यो नमः स्वाहा।। श्रियैनमः स्वाहा।। अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा।। षोडशमातृक्काभ्यो नमः स्वाहा।।

।। नवग्रहादि हवनम् ।।

१. ॐ आकृष्णेनरजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्येयन सविता रथेना देवा याति भुवनानि पश्यन्।।

सूर्याय स्वाहा।। (अर्क काष्ट से)

२. ॐ इमं देवा असपत्न ॐ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ॐ राजा।।

सोमाय स्वाहा।। (पलाश काष्ट से)

३. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ॐ रेता ॐ सिजिन्वति।।

भौमाय स्वाहा।। (खदिर काष्ट से)

४. ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युतरस्मिन्विश्वेदवा यजमानश्च सीदत-।।

बुधाय स्वाहा।। (अपामार्ग काष्ट से)

५. ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतः प्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

बृहस्पतये स्वाहा।। (अश्वत्थ काष्ट से)

६. ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।। शुक्राय स्वाहा।। (उदुम्बर काष्ट से)

७. ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभि स्त्रवन्तु नः।

शनये स्वाहा।। (शमी काष्ट से)

८. ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा कयाशचिष्ठयावृता।।

राहवे स्वाहा।। (दूर्वा से)।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुर्षा भरजायथा।

केतवे स्वाहा।। (कुशा/दर्भ से)

।। अधिदेवता हवनम् ।।

१. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्ध नान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। रुद्राय स्वाहा

२. ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेक नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा। मुम्मइषाण सर्व लोम्मइषाण।।

उमायै स्वाहा।।

३. ॐ यदक्रंन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहु उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।। स्कन्दाय स्वाहा।

४. ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो

ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।
विष्णवे स्वाहा।
५. ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ब्रह्मणे स्वाहा।
६. ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रुं रपमृधो नुदस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः।। इन्द्राय स्वाहा।।
७. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।। यमाय स्वाहा
८. कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि समापो अ भरग्मत समोषधी भिरोषधीः।। कालाय स्वाहा
९. चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा चित्रगुप्ताय स्वाहा।।

।। प्रत्याधिदेवता हवनम् ।।

१. ॐ अग्नि दूतम्पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे।
देवाँ २- आसादयादिह।। अग्नेय स्वाहा
२. ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः। देवीरापो यो ऊर्मि प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजासास्तेनायं वाज ँ सेत्।। अदभ्यः स्वाहा
३. ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथा। पृथिव्यै स्वाहा
४. ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। विष्णवे स्वाहा
५. ॐ त्रातार मिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रं ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र ।। इन्द्राय स्वाहा।

६. ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीय पूषासि धर्म्माय दीष्व स्वाहा।। इन्द्राण्यै स्वाहा।
७. ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता वभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो स्याम पतयो रयीणाम्।। प्रजापतये स्वाहा।
८. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। सर्पेभ्यः स्वाहा।।
९. ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सुवध्न्या उपमा अस्य विष्टाः सतश्च योनिमसत श्च विवः।। ब्रह्मणे स्वाहा।।

।। पञ्चलोकपाल हवनम् ।।

१. ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणाँ त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसोमम। आहमजानि गर्भधमात्वजासि गर्भधम् । ॐ गणपते स्वाहा।।
२. ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः स नः परिषदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।। ॐ दुर्गायै स्वाहा
३. वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये।। ॐ वायवे स्वाहा
४. घृतं घृतपावानः पिवत वसां वसा पावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिगभ्यः स्वाहा।। ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा।
५. ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। पिपृतान्नोभरीमभि।। अश्विभ्याँ स्वाहा।

।। दशदिक्पाल हवनम् ।।

१. त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्रं ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।
२. ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ ऽ आसादयादिह।।
ॐ अग्नये स्वाहा।।

३. ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।। ॐ यमाय स्वाहा।।

४. ॐ एष ते निर्ऋते भागस्त जुषस्व-स्वाहा।। अग्नि नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा।। ॐ निर्ऋत्ये स्वाहा।।

५. ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। ॐ वरुणाय स्वाहा।।

६. ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः।
ते अग्रेऽश्वमयुञ्जस्ते अस्मिन् जवमा दधुः।। ॐ वायवे स्वाहा।।

७. ॐ वय ँ सोमव्रते तवमनस्तनूषु विभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ कुबेराय स्वाहा।।

८. ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसा मसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ईशानाय स्वाहा

९. ॐ ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

१०. ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्ष ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।
ॐ अनंताय स्वाहा।

।। चतुर्वेद हवनम् ।।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातम्।।
ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा माव स्तेन ऽईषत माधश ँ सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वियजमानस्य पशून् पाहिः।। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि वर्हिषिः॥ ॐ सामवेदाय स्वाहा॥
ॐ शंन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः। अथर्ववेदाय स्वाहा॥

॥ अथ वास्तुहवनम् ॥

१. ॐ शिखिने स्वाहा। २. ॐ प्रजन्याय स्वाहा।
३. ॐ जयन्ताय स्वाहा। ४. ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा।
५. ॐ सूर्याय स्वाहा। ६. ॐ सत्याय स्वाहा।
७. ॐ भृशाय स्वाहा। ८. ॐ आकाशाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ पुष्णे स्वाहा।
११. ॐ वितथाय स्वाहा। १२. ॐ गृहक्षताय स्वाहा।
१३. ॐ यमाय स्वाहा। १४. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।
१५. ॐ भृंगराजाय स्वाहा। १६. ॐ मृगाय स्वाहा।
१७. ॐ पितृभ्य स्वाहा। १८. ॐ दौवारिकाय स्वाहा।
१९. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। २०. ॐ पुष्पदंताय स्वाहा।
२१ ॐ वरुणाय स्वाहा। २२. ॐ असुराय स्वाहा।
२३. ॐ शेषाय स्वाहा। २४. ॐ पापाय स्वाहा।
२५. ॐ रोगाय स्वाहा। २६. ॐ अहये स्वाहा।
२७. ॐ मुख्याय स्वाहा। २८. ॐ भल्लाटाय स्वाहा।
२९. ॐ सोमाय स्वाहा। ३०. ॐ सर्पाय स्वाहा।
३१. ॐ आदित्यै स्वाहा। ३२. ॐ दित्यै स्वाहा।
३३. ॐ अद्भ्य स्वाहा। ३४. ॐ सवित्राय स्वाहा।
३५. ॐ जयाय स्वाहा। ३६. ॐ रुद्राय स्वाहा।
३७. ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ३८. ॐ सवित्रे स्वाहा।
३९. ॐ विवस्वते स्वाहा। ४०. ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा।
४१. ॐ मित्राय स्वाहा। ४२. ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा।
४३. ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा। ४४. ॐ आपवत्साय स्वाहा।

४५. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ४६. ॐ चरक्यै स्वाहा।
४७. ॐ विदार्यै स्वाहा। ४८. ॐ पूतनायै स्वाहा।
४९. ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ५०. ॐ पूर्वे स्कंदाय स्वाहा।
५१. ॐ दक्षिणे अर्यम्णे स्वाहा। ५२. ॐ पश्चिमेजृम्भकाय स्वाहा।
५३. ॐ उत्तरे पिलिपिच्छाय स्वाहा। ५४. ॐ पूर्व इन्द्राय स्वाहा।
५५. ॐ आग्नेयां अग्नये स्वाहा। ५६. ॐ दक्षिणे यमाय स्वाहा।
५७. ॐ नैर्ऋत्ये नैर्ऋतये स्वाहा। ५८. ॐ पश्चिमे वरुणाय स्वाहा।
५९. ॐ वायव्य वायवे स्वाहा। ६०. ॐ उत्तरे कुबेराय स्वाहा।
६१. ॐ ईशान्यां ईश्वराय स्वाहा। ६२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
६३. ॐ अनंताय स्वाहा। ६४. ॐ वास्तु पुरुषाय स्वाहा।

॥ अथ श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती समन्वित श्री गजाननादि चतुषष्ठि योगिनीनां होमः॥

१. ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा। २. ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।
३. ॐ महासरस्वत्यै नमः स्वाहा। ४. ॐ गजाननायै नमः स्वाहा।
५. ॐ सिंहमुख्यै नमः स्वाहा। ६. ॐ गृध्रास्यायै नमः स्वाहा।
७. ॐ काकतुण्डिकायै नमः स्वाहा। ८. ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः स्वाहा।
९. ॐ हयग्रीवायै नमः स्वाहा। १०. ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा।
११. ॐ शरभाननायै नमः स्वाहा। १२. ॐ उलूकिकायै नमः स्वाहा।
१३. ॐ शिवारावायै नमः स्वाहा। १४. ॐ मयूर्यै नमः स्वाहा।
१५. ॐ विकटाननायै नमः स्वाहा। १६. ॐ अष्टवक्रायै नमः स्वाहा।
१७. ॐ कोटराक्ष्यै नमः स्वाहा। १८. ॐ कुब्जायै नमः स्वाहा।
१९. ॐ विकटलोचनायै नमः स्वाहा। २०. ॐ शुष्कोदर्यै नमः स्वाहा।
२१. ॐ ललज्जिह्वायै नमः स्वाहा। २२. ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः स्वाहा।
२३. ॐ वानराननायै नमः स्वाहा। २४. ॐ रुक्षाक्ष्यै नमः स्वाहा।
२५. ॐ केकराक्ष्यै नमः स्वाहा। २६. ॐ बृहतुण्डायै नमः स्वाहा।
२७. ॐ सुराप्रियायै नमः स्वाहा। २८. ॐ कपालहस्तायै नमः स्वाहा।
२९. ॐ रक्ताक्ष्ये नमः स्वाहा। ३०. ॐ शुक्यै नमः स्वाहा।

३१. ॐ श्येन्यै नमः स्वाहा। ३२. ॐ कपोतिकायै नमः स्वाहा।
३३. ॐ पाशहस्तायै नमः स्वाहा। ३४. ॐ दण्डहस्तायै नमः स्वाहा।
३५. ॐ प्रचण्डायै नमः स्वाहा। ३६. ॐ चण्डविक्रमायै नमः स्वाहा।
३७. ॐ शिशुघ्न्यै नमः स्वाहा। ३८. ॐ पापहन्त्र्यै नमः स्वाहा।
३९. ॐ काल्यै नमः स्वाहा। ४०. ॐ रुधिर पायिन्यै नमः स्वाहा।
४१. ॐ वसाधयायै नमः स्वाहा। ४२. ॐ गर्भभक्षायै नमः स्वाहा।
४३. ॐ शवहस्तायै नमः स्वाहा। ४४.ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः स्वाहा।
४५. ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्वाहा। ४६. ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः स्वाहा।
४७. ॐ सर्पास्यायै नमः स्वाहा। ४८. ॐ प्रेतवाहनायै नमः स्वाहा।
४९. ॐ दन्तशूककरायै नमः स्वाहा। ५०. ॐ क्रौच्यै नमः स्वाहा।
५१. ॐ मृगशीर्षायै नमः स्वाहा। ५२. ॐ वृषाननायै नम स्वाहा।
५३. ॐ व्यात्तास्यायै नमः स्वाहा। ५४. ॐ धूमनिः श्वासायै नमः स्वाहा।
५५. ॐ व्यौम्कैचरणोर्ध्वदृशे नमः स्वाहा। ५६. ॐ तापिन्यै नमः स्वाहा।
५७. ॐ शोषणीदृष्टयै नमः स्वाहा। ५८. ॐ कौटर्यै नमः स्वाहा।
५९. ॐ स्थूलनासिकायै नमः स्वाहा। ६०. ॐ विद्युत्प्रभायै नमः स्वाहा।
६१. ॐ बलाकास्यायै नमः स्वाहा। ६२. ॐ मार्जार्यै नमः स्वाहा।
६३. ॐ कटपूतनायै नमः स्वाहा। ६४. ॐ अट्टाट्टहासायै नमः स्वाहा।
६५. ॐ कामाक्ष्यै नमः स्वाहा। ६६. ॐ मृगाक्ष्यै नमः स्वाहा।
६७. ॐ मृगलोचनायै नमः स्वाहा।

।। इति गजाननादि चतु:षष्ठियोगिनीनां होमः।।

।। सर्वतो भद्रदेवता होमः ।।

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा।
३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा।
७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यः स्वाहा।
११. ॐ एकादश रुद्रेभ्यो स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।

१३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। १४. ॐ विश्वेदेवेभ्यः स्वाहा।
१५. ॐ पितृभ्यः स्वाहा। १६. ॐ सप्तयक्षेभ्यो स्वाहा।
१७. ॐ भूतनागेभ्यः स्वाहा। १८. ॐ गन्धर्वप्सरोभ्यः स्वाहा।
१९. ॐ स्कंदाय स्वाहा। २०. ॐ नन्दिश्वरशूलाय स्वाहा।
२१. ॐ महाकालाय स्वाहा। २२. ॐ प्रजापतये स्वाहा।
२३. ॐ दुर्गायै स्वाहा। २४. ॐ विष्णवे स्वाहा।
२५. ॐ पितृभ्यः स्वाहा। २६. ॐ मृत्युरोगेभ्यो स्वाहा।
२७. ॐ गणपतये स्वाहा। २८. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
२९. ॐ मरुद्भ्य स्वाहा। ३०. ॐ पृथिव्यै स्वाहा।
३१. ॐ सरिद्भ्यः स्वाहा। ३२. ॐ सप्तसागरेभ्यो स्वाहा।
३३. ॐ मेरवे स्वाहा। ३४. ॐ गदायै स्वाहा।
३५. ॐ त्रिशूलायै स्वाहा। ३६. ॐ वज्राय स्वाहा।
३७. ॐ शक्तयै स्वाहा। ३८. ॐ दण्डाय स्वाहा।
३९. ॐ खड्गाय स्वाहा। ४०. ॐ पाशाय स्वाहा।
४१. ॐ अंकुशाय स्वाहा। ४२. ॐ गौतमाय स्वाहा।
४३. ॐ भारद्वाजाय स्वाहा। ४४. ॐ विश्वमित्राय स्वाहा।
४५. ॐ कश्यपाय स्वाहा। ४६. ॐ जमदग्न्यै स्वाहा।
४७. ॐ वशिष्ठाय स्वाहा। ४८. ॐ अत्रये स्वाहा।
४९. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ५०. ॐ एन्द्रयै स्वाहा।
५१. ॐ कौमार्ये स्वाहा। ५२. ॐ ब्राह्मयै स्वाहा।
५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ५४. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५५. ॐ वैष्णवै स्वाहा। ५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।

॥ ॐ वैनायिक्यै स्वाहा ॥

॥ लिंगतोभद्रदेवता होमः॥

१. ॐ असितांग भैरवाय स्वाहा। २. ॐ रुरुभैरवाय स्वाहा।
२. ॐ चण्ड भैरवाय स्वाहा। ४. ॐ क्रोध भैरवाय स्वाहा।
५. ॐ उन्मत भैरवाय स्वाहा। ६. ॐ कपाल भैरवाय स्वाहा।
७. ॐ भीषण भैरवाय स्वाहा। ८. ॐ संहार भैरवाय स्वाहा।
९. ॐ भवाय स्वाहा। १०. ॐ शर्वाय स्वाहा।

११. ॐ पशुपतये स्वाहा। १२. ॐ ईशानाय स्वाहा।
१३. ॐ रुद्राय स्वाहा। १४. ॐ उग्राय स्वाहा।
१५. ॐ भीमाय स्वाहा। १६. ॐ महते स्वाहा।
१७. ॐ अनन्ताय स्वाहा। १८. ॐ वासुकये स्वाहा।
१९. ॐ तक्षकाय स्वाहा। २०. ॐ कुलिशाय स्वाहा।
२१. ॐ कर्कोटकाय स्वाहा। २२. ॐ शंखपालाय स्वाहा।
२३. ॐ कम्बलाय स्वाहा। २४. ॐ अश्वतराय स्वाहा।
२५. ॐ शूलाय स्वाहा। २६. ॐ चन्द्रमौलिने स्वाहा।
२७. ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। २८. ॐ वृषभध्वजाय स्वाहा।
२९. ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा। ३०. ॐ शक्तिधराय स्वाहा।
३१. ॐ महेश्वराय स्वाहा। ३२. ॐ शूलपाणये स्वाहा।

॥ क्षेत्रपाल होमः॥

१. ॐ अजराय स्वाहा। २. ॐ व्यापकाय स्वाहा।
३. ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा।
५. ॐ उक्षाय स्वाहा। ६. ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा।
७. ॐ वरुणाय स्वाहा। ८. ॐ बटुकाय स्वाहा।
९. ॐ विमुक्ताय स्वाहा। १०. ॐ लिप्तकायाय स्वाहा।
११. ॐ लीलाकाय स्वाहा। १२. ॐ एक द्रंष्ट्राय स्वाहा।
१३. ॐ ऐरावताय स्वाहा। १४. ॐ औषधिध्नाय स्वाहा।
१५. ॐ बन्धनाय स्वाहा। १६. ॐ दिव्य कायाय स्वाहा।
१७. ॐ कम्बलाय स्वाहा। १८. ॐ भीषणाय स्वाहा।
१९. ॐ गवयाय स्वाहा। २०. ॐ घण्टाय स्वाहा।
२१. ॐ व्यालाय स्वाहा। २२. ॐ अणवे स्वाहा।
२३. ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा। २४. ॐ पटाटोपाय स्वाहा।
२५. ॐ जटालाय स्वाहा। २६. ॐ क्रतवे स्वाहा।
२७. ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। २८. ॐ विटंकाय स्वाहा।
२९. ॐ मणिमानाय स्वाहा। ३०. ॐ गणबन्धवे स्वाहा।

३१. ॐ डामराय स्वाहा।
३२. ॐ ढुण्डिकर्णाय स्वाहा।
३३. ॐ स्थविराय स्वाहा।
३४. ॐ दन्तुराय स्वाहा।
३५. ॐ धनदाय स्वाहा।
३६. ॐ नागकर्णाय स्वाहा।
३७. ॐ महाबलाय स्वाहा।
३८. ॐ फेत्कराय स्वाहा।
३९. ॐ चीत्काराय स्वाहा।
४०. ॐ सिंहाय स्वाहा।
४१. ॐ मृगाय स्वाहा।
४२. ॐ यक्षाय स्वाहा।
४३. ॐ मेघवाहनाय स्वाहा।
४४. ॐ तीक्ष्णौष्ठाय स्वाहा।
४५. ॐ अनलाय स्वाहा।
४६. ॐ शुष्कतुण्डाय स्वाहा।
४७. ॐ सुधालापाय स्वाहा।
४८. ॐ वर्वरकाय स्वाहा।
४९. ॐ पवनाय स्वाहा।
५०. ॐ पावनाय स्वाहा।
५१. ॐ युधामन्यवे स्वाहा।

विशेष आहुति :- जिस देवता या ग्रह की प्रतिष्ठा करनी हो उस देवता को उसके मंत्र से खीर आदि की १०८ आहुति देकर फिर सूक्तों का हवन करना चाहिए।

॥ पुरुष सूक्त हवनम्॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा॥ ॐ विष्णवेस्वाहा॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि ँ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशागुंलम्॥१॥ ॐ स्वाहा॥ पुरुषऽएवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् उतामृत्व स्येशानो यदन्नाति रोहति॥२॥ ॐ स्वाहा एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥ ॐ स्वाहा॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ व्यक्रामत्साशनानशेन ऽअभि॥४॥ॐ स्वाहा॥ ततोविराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः। सजातो अत्यरिच्यत पश्चादभूमिमथोपुरः॥५॥ ॐ स्वाहा॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्ताँश्चक्रे वाव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥६॥ ॐ स्वाहा॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ँ छन्दाँसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्त-

स्मादजायत।।७।। ॐ स्वाहा।। तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभदायत्तः गावाहजज्ञिरे तस्मातस्माजाता अजावयः।।८।। ॐ स्वाहा।। तयज्ञं वर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्त-साध्याऽऋषयश्च ये।।९।। ॐ स्वाहा।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं वाहू किमूरूपादाऽउच्येते।।१०।। ॐ स्वाहा।। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् वाहूराजन्यः कृतः। उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रोऽअजायतः।।११।। ॐ स्वाहा।। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।। ॐ स्वाहा।। नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँशीर्ष्णोद्यौः समवर्तत। पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकाँ२ऽअकल्पयन।।१३।। ॐ स्वाहा।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।। ॐ स्वाहा।। ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअवधनन् पुरुषं पशुम्।।१५।। ॐ स्वाहा।। ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। ॐ स्वाहा।।१६।।

।। इति पुरुषसूक्तम् ।।

।। श्री सूक्त हवनम् ।।

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम।। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। ॐ स्वाहा।। १।।

ॐ तांम ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामस्वं पुरुषानहम्।। ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रवोधिनीम्।।
श्रियं देविमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। ॐ स्वाहा।।३।।

ॐ कांसोऽस्मिता हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्।। ॐ स्वाहा।।४।।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।।

तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। ॐ स्वाहा।।५।।
ॐ आदित्य वर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्यया ऽ अलक्ष्मीः।। ॐ स्वाहा।।६।।
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।।
प्रादुर्भूतो सुराष्टेऽस्मिन कीर्तिमृद्धि ददातु मे।। ॐ स्वाहा।।७।।
ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्।।
अभूतिमसमृद्धि च सर्वा निर्णुद मे गृहात्।। ॐ स्वाहा।।८।।
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।।
ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। ॐ स्वाहा।।९।।
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।। ॐ स्वाहा।।१०।।
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम!।।
श्रियं वासयमे कुलेमातरं पद्ममालिनीम्।। ॐ स्वाहा।।११।।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले।। ॐ स्वाहा।।१२।।
ॐ आर्द्रां पुष्पकरिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। ॐ स्वाहा।।१३।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। ॐ स्वाहा।।१४।।
ॐ तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। ॐ स्वाहा।।१५।।
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः शततं जपेत्।। ॐ स्वाहा।।१६।।

।। इति सूक्त हवनम् ।।

।। रुद्रसूक्तहवनम् ।।

हरिः- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः। वाहुभ्यामुतते नमः।। ॐ स्वाहा।।१।। या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी। तमा नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।। ॐ स्वाहा।।२।। यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ꣳ सीः पुरुषं जगत्।। ॐ स्वाहा।।३।। शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳसुमना ऽअसत्।। ॐ स्वाहा।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्ययातुधान्यो ऽधराचीः परासुव।।ॐ स्वाहा।।५।। असौं यस्ताम्म्रो अरुण उत वभ्रुः सुमंगल येचैन ꣳरुद्राऽभितो दिक्षु श्रिताः। सहस्त्रशो ऽवैषा ꣳ हेडऽईमहे।। ॐ स्वाहा।।६।।असौ यो ऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा ऽअदृ श्र शन्नदृ श्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः।। ॐ स्वाहा।।७।। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षय मीढुषे। अथो ये ऽअस्य सत्वानो ऽहं तेब्भ्यो ऽकरं नमः।। ॐ स्वाहा।।८।। प्रमुञ्च धन्नवस्त्वामुभ योरात्र्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त ऽइषवः पराता भगवो व्वप।। ॐस्वाहा।।९।। विज्यं धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँऽउत। अनेशन्नस्य याऽइषव ऽआभूरस्य निषङ्गधिः।। ॐ स्वाहा।।१०।। याते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज।। ॐ स्वाहा।।११।। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो य विषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहितम।। ॐ स्वाहा।। ।।१२।। अवतत्य धनुष्टवंꣳ। सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। ॐ स्वाहा।।१३।। नमस्तऽआयुधाया नातताय धृष्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यां तव धन्वने।। ॐ स्वाहा।।१४।। मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकं मा न ऽउक्षन्नतमुत मा न उक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।। ॐ स्वाहा।। ।।१५।। मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो ब्बीरान्नुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।। ॐ स्वाहा।।१६।।

।। इति रुद्र सूक्त हवनम् ।।

॥ उत्तरांग अग्निपूजनम् ॥

पूर्णाहुत्यां मृडनाम अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अग्नि का पूजन कर नौ आहुति घी की दें।

ततः ब्रह्मणान्वारन्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न ममः। ॐ भुव स्वाहा इदं वायवे न ममः। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न ममः।

ॐ तन्नो अग्ने वरुणस्य० इदमग्नि वरुणाभ्या०।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो० इदमग्नि वरुणाभ्या०।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिश० इदमग्नये न ममः।

ॐ येते शतं वरुण ये सहस्त्रं० इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः स्वर्केभ्यश्च न०।

ॐ उदुतमं वरुणं० इदं वरुणायादित्यायादितये न०।

॥ बलिदानम् ॥

जलाक्षतान्यादाय तत्सदद्य अमुकगोत्रः अमुक शर्म्मा वर्म्मा गुप्तोहं कृतस्य अमुक प्रतिष्ठा कर्मर्णः सांगता सिद्ध्यर्थ आवाहितदेवताभ्यो बलिदानञ्च करिष्ये। ततः दधि माष तण्डुल पत्रेषु संस्थाप्य तत्समीपे दीपञ्च संस्थाप्य-ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्य साङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्य सशक्तिका अधिदेवता प्रत्याधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोकपाल सहिताः इमं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्तिकर्तारः तुष्टिकर्तारः पुष्टिकर्तारो वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यादि ग्रहाः प्रीयन्ताम् नमम॥ नवग्रह वेदी पर बलिदान दे देवें।

क्षेत्रपाल बलिदानम् -

एकस्मिन् पात्रे आहार चतुर्गुणं द्विगुणं वा माषभक्तदध्योदनं जलपात्रं च निधाय हरिद्रा कुंकुम सिन्दूर कज्जलयुतं चतुर्मुख दीपं कृत्वा क्षेत्रपालाय नमः सम्पूज्य। प्रार्थयेत्- नमोवै क्षेत्रपालत्वं भूतप्रेतगणैः सह। पूजांवलिं गृहाणेदं सौम्यो भवतु सर्वदा॥ ततो

हस्ते साक्षतजलमादाय-क्षेत्रपाल महावाहो महावलपराक्रम। क्षेत्रणां रक्षणार्थाय वलिनय नमोऽस्तुते।। क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेत पिशाचडाकिनी शाकिनी वेतालादि सपरिवारयुताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं चतुर्मुखं दीपदधिमाषभक्तवलिं समर्पयामि। इति जलमुत्यसृज्य, प्रार्थयेत्- भो भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष वलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।। अनेन वलिदानेन श्री क्षेत्रपाल देवता प्रीयताम् न मम्।

अथ पूर्णाहुति होम

श्रुवा के ऊपर नारियल रखकर संकल्पदेवता प्राण प्रतिष्ठा कमर्णा ॐ अद्येत्यादि० देशकालौ संकीर्त्य अमुक पूर्णतासिद्ध्यर्थे पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये। घृतपूरितनारिकेलोपरि सूत्रवेष्टितं सम्पूज्य। पूर्णाहुत्यै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य श्रुवपात्रे संस्थाप्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।। कविँ साम्राजमतिथिंजनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः। पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णापुनरापत वस्नेव विकीर्णा इषमूर्जँ शतक्रतो स्वाहा।। नारिकेल-अग्नौप्रक्षिपेत्। ततः घृत धारांदद्यात् ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकाम धुक्षः स्वाहा। घृत धारा अग्नि में डालें। ततः त्र्यायुषकरणम्-त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्र्यायुषं! यद्दवेषुत्र्यायुषं। तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्।। त्र्यायुष निकाल लेवे। पूर्णपात्रदानम्-ॐ अद्यैत्यादिकृतै देवप्राण प्रतिष्ठा कर्मण इदं तण्डुलपूरितं पूर्णपात्रं सदक्षिणां प्रजापति दैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोचन कृत्वा प्रणीतोदकेने यजमान- शिरस्यभिषिच्य-ॐ सुमित्रिया न ऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।। अथ वर्हिहोमः। ॐ देवतागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित मनस्सस्पतऽइमं देव यज्ञँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।।

॥ देवता अग्नि विसर्जनम् ॥

यातुं देवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।
इष्टकाम प्रसीद्धयर्थं पुनरागमनाय च॥
ॐ उतिष्ठ ब्रह्मणस्पतेदेवयन्त स्त्वमहे।
उपप्रयन्तुमरुतः सुदानवऽइन्द्रप्राशूर्भवासच॥
गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुतासन।
ॐ यज्ञयज्ञंगच्छयज्ञपतिंगच्छस्वायोनिंगच्छ स्वाहा॥
एषतेयज्ञोयज्ञपतेसहसूक्तवाकः। सर्व्ववीरस्तंजुषस्व स्वाहा॥
जपच्छिद्रं तपच्छिद्र यच्छिद्रं व्रत कर्मणि।
सर्व भवतु मेऽच्छिद्र ब्राह्मणानां प्रसादतः॥
यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतायाति सद्योवन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादाःत्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणां देव तद् विष्णु सम्पूर्णास्यादिति श्रुति॥

आरती श्री गणेश जी की

गणपति की सेवा मंगल मेवा, सेवा से सब विघ्न टरे।
तीन लोक तैंतीस देवता, द्वार खड़े सब अरज करे।
ऋद्धि सिद्धि दक्षिण वाम विराजै, अरु आनन्द से चंवर करे।
धूप दीप साज लिए आरती, भक्त खड़े जयकार करे॥१॥
गुड़ के मोदक भोग लगत हैं, मूषक वाहन चढ्यो सरे।
सौम्यरूप सेवा गणपति की, विघ्न होय जा दूर परे॥२॥
भादो मास शुक्ल चतुर्थी, दीपदान भरपूर करे।
लियो जन्म गणपति प्रभु जी ने, दुर्गा मन आनन्द भरे॥३॥
श्री शंकर को आनन्द उपजयो, नाम सुने सब विघ्न टरे॥४॥

आन विधाता बैठे आसन, इन्द्र अप्सरा नृत्य करे।
ज्ञाता ब्रह्माजी जाको हैं, विघ्न विनाशन नाम धरे।।५।।
एक दन्त गजवदन विनायक, त्रिनयन रूप अनूप धरे।
पग खम्बा सा उदर पुष्ट है, देख चन्द्रमा हास्य करे।।६।।
दे श्राप श्री चन्द्रदेव को, कलाहीन तत्काल करे।
चौदह लोक में फिरें गणपति, तीन भुवन में राज्य करे।
उठि प्रभात जो आरती गावें, जाके सिर यश छत्र फिरे।।७।।
गणपति की पूजा पहिले करनी, काम सभी निर्विघ्न करे।
'श्री प्रताप' गणपति जी की, हाथ जोड़कर अस्तुति करे।।८।।

आरती गंगा जी की

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।।
ॐ जय गंगे माता।।१।।

चन्द्र सी जोत तुम्हारी जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी सो नर तर जाता।।
ॐ जय गंगे माता।।२।।

पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी त्रिभुवन सुख दाता।।
ॐ जय गंगे माता।।३।।

एक ही बार जो तेरी शरणागति आता।
यम की त्रास मिटा कर परमगति पाता।।
ॐ जय गंगे माता।।४।।

आरती मात तुम्हारी जो जन नित्य गाता।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता।।
ॐ जय गंगे माता।।५।।

आरती अम्बे जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय अम्बे गौरी। जय श्यामा गौरी। टेक
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्र वदन नीको॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गलमाला कंठन पर साजे॥
केहरी वाहन राजत खड्ग खप्परधारी।
सुर नर मुनिजन सेवत तिनके दुःखहारी॥
कानन कुण्डल सोहे नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति॥
शुम्भ निशुम्भ बिदारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती॥
चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे॥
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥
चौंसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरू।
बाजत ताल मृदंग अरु बाजत डमरू॥
तुम हो जग की माता तुम ही हो भर्ता।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति करता॥
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्परधारी।
मनवांछित फल पावे सेवत नर नारी॥
कंचन थार विराजत अगर कपूर बाती।
श्रीमाल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥
हम अति दीन दुखी मां विपत्ति जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी पर बालक तेरे॥
नित्य स्वभाव वश जननी दया दृष्टि कीजे।

करुणा करि करुणामयी अपनी शरण दीजे॥
मां अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावै॥

आरती शिवजी की

जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा॥ ॐ हर-३ महादेव
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै॥ ॐ हर-३ महादेव
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहै॥ ॐ हर-३ महादेव
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥ ॐ हर-३ महादेव
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥ ॐ हर-३ महादेव
कर में श्रेष्ठ कमंडलु चक्र त्रिशूलधर्ता।
सुखकारी दुखहारी जग पालनकारी॥ ॐ हर-३ महादेव
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका॥ ॐ हर-३ महादेव
त्रिगुण शिव की आरती जो कोई गावे।
भणत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥ ॐ हर-३ महादेव

आरती हनुमानजी की

आरती कीजै हनुमान लाला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरवर कांपे। रोग दोष ताके निकट नहीं झांके।
अंजनीपुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये। लंका जार सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवन सुत वार न लाई।

जगमग ज्योति अवधपुर राजा। घंटा ताल पखावज बाजा।
शक्ति बाण लगा लक्ष्मण को। लाय संजीवन लक्ष्मण जियाये।
पैठ पाताल तोरि यम कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।
आरती कीजै जैसी तैसी। ध्रुव प्रहलाद विभीषण जैसी।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै कपिराज उचारें।
बांई भुजा से असुर संहारे। दाहिनी भुजा सुर सन्त उबारे।
लंक प्रज्जवलित असुर संघारे। राजा राम के काज संवारे।
अन्जनी पुत्र महा बलदायक। देव सन्त के सदा सहायक।
विध्वंस लंक किया रघुदाई। तुलसीदास कपि आरती गाई।

।। पुष्पांजलि ।।

ॐ यज्ञेनयज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमान सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः।। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वै श्रवणाय कुर्म हे। समेकामान् काम कामायमह्यं कामेश्वरोवै श्रवणो ददातु। कुबेरायवैश्रवणाय महाराजाय नमः।। ॐ स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ट्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्य मयं समन्तपर्यायीस्यात्।। सार्वभौम सार्वायुष आन्तादापरार्द्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्य्यन्ताया एक राडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिविष्टारोमरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षतस्य कामाप्रेविश्वेदेवा सभासदः।। ॐ विश्वत श्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमीं जनयन् देवऽएकः।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नोरुद्र प्रचोदयात्। सेवन्तिकाबकुल चम्पक पाटलाब्जै पुन्नागजाति करवीर रसाल पुष्पैः। विल्व प्रवाल तुलसीदलमालती भी स्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।। नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च। पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण त्वं महेश्वर।।

मंत्र पुष्पाञ्जलि भगवान शिव को अर्पण कर शिव की अर्ध प्रदक्षिणा करें। विष्णु प्रतिष्ठा में चार देवी प्रतिष्ठा में एक परिक्रमा करें :-

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽ अवध्नन् पुरुषं पशुम्।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

।। समर्पण ।।

करचरण कृतंवा क्वायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

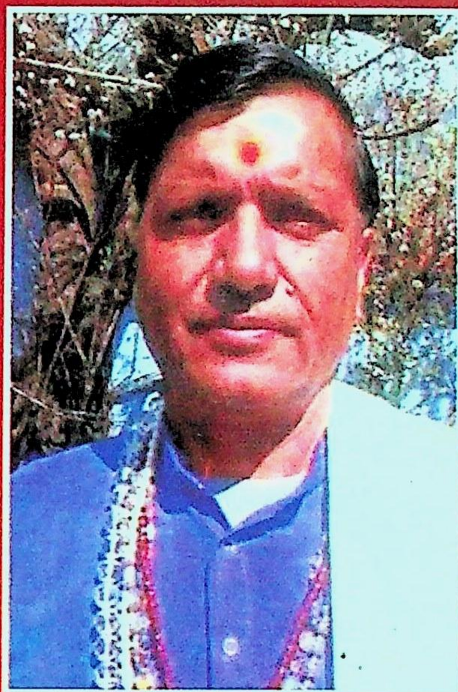
।। अथ आशीर्वाद मंत्रः ।।

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम।। विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणो देवता। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि पराशुव। यदभद्रंतन्नऽआसुव।।
श्री वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानम्महीयते। धान्यं धनं पशु बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।
मन्त्रार्था सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणां उदयस्तव।।

प्रधान कलश से जल के छीटे देकर ब्राह्मण श्रीफल पुष्प आदि यजमान को देवे।

।। इति आशीर्वाद मंत्रः ।।

लेखक
पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भास्कर प्रयाग, भटवाड़ी
जनपद–उत्तरकाशी,
उत्तराखण्ड



हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेताः– बड़ा बाजार, हरिद्वार–249401
फोन : 01334–225619